श्री

पंडित श्री मोहन विजय विरचित

नर्मदा सुंदरीनो रास.

शील रक्षण माटे कुलीन स्त्रीना पवित्र पतिव्र
ता पणानो आबेहुब चितार
रसिक नीति ज्ञान धर्म व्यवहार संसारिक सुख
दुःखमां सद्बोध सद्वत्ति राखवा माटे
सुदृढ शिक्षा रूप.

सरस रसिक चमत्कृति युक्त सुशील कुली
न स्त्रीपुरुषोने हितोपदेशमय बे त्रण
प्रतिथी शुरू करी,

शा० भीमसिंह माणेकें.

मुंबईमध्यें

निर्णयसागर मुद्रायंत्रमां छापी प्रसिद्ध कर्यो.

संवत् १९५४ असाड शुद ९ मंगलवार.

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

अथ

पंमित श्रीमोहनविजयविरचित नर्मदा सुंदरीनो रास प्रारंभः ॥

प्रभु चरणांबुजरज तणी, वञ्जीने होय ढोक ॥ मायो वली जग जेहनो, बिहु अक्षरने श्लोक ॥१॥ धारक अतिशय एहवा, जिन सुरगिरि परें धीर ॥ हुं प्रणमुं ते वीरने, गौतम जास वजीर ॥ २ ॥ कवि सुरतरु शोभाववा परभृत तनया पूत ॥ ज्ञान चंद्रने चंद्रिका, कृपा करी अति नूत ॥ ३ ॥ जड तालय मुद्रा भणी, जनु रूपा स्वयमेव ॥ शब्दोदधि तारण तरी, सा भारति प्रणमेव ॥ ४ ॥ गुरु गुण मणि हारावली, धरियें हृदय तटेण ॥ कीधो तजी पिपीलिका, मत्त मतंग जलेण ॥ ५ ॥ जिन गुणाहर भारति सुगुरु, प्रणमी चरण रसेण ॥ धर्मोद्यम कीजे सदा, सवि सुख लहियें जेण ॥ ६ ॥ चार भेद ते धर्मना, दान शील तप भाव ॥ तेहमां शील विशेष छे, कष्ट रत्नागर नाव ॥ ७ ॥ चक्षुश्रवण शीलें करी,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

थयो कुसुमनी माल ॥ पावक पण पाणी थयो, शीलें सिंह शीयाल ॥ ८ ॥ शीलरूप सन्नाहथी, मन्मथ नृपनां बाण ॥ वेधी न शके वज्रने, रे मन मृषा म जाण ॥ ए ॥ शीलतणे अधिकार अथ, नमया सुंदरि चरित्र ॥ रचीश शास्त्र अनुसारथी, वर्णव करी विचित्र ॥ १० ॥ सांजलजो श्रोता नरो, मित्र पुत्र स्थिर लाय ॥ पण पीतां करतां रखे, महिषी किन्नर न्याय ॥ ११ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ देशी चोपाइनी ॥

जंबूद्वीप जोयण एक लाख, साधक त्रिगुणी परिधिनी जाख ॥ क्षेत्र सात तिहां अति विस्तार, नाम मात्र कहुं तास विचार ॥ १ ॥ जरह ऐरवय पांच सें उव्वीश, उकला तास उवरी सुजगीश ॥ हेम ऐरण्य वे सहसग इगसत्त, पण जोअण पण कला पमत्त ॥ २ ॥ आठ सहस चउसय एकवीश, एक कला हरि रम्यक जगीश ॥ तित्तिस सहस उसय चूल नेह, चार कला ए मान विदेह ॥ ३ ॥ उ कुलगिरि ए द्वीप मझार, तास तणो हवे कहिश विचार ॥ जोयण एक सहस बावन्न, बार कला हिमशिखरी मन्न ॥ ४ ॥ महा हेमवंत रूपी चार हजार, डुसय दश

जोयण दश कला विस्तार ॥ निषध नील सोसहस इगसत्त, दोय कला ए गिरि पमत्त ॥ ५ ॥ सत्त पिण्ड षट कुलगिरि दाख, मेलंतां होय जोयण एक लाख ॥ जिनवर वचनें करीयें प्रमाण, तेहथी को नाहिं अधिको जाण ॥ ६ ॥ हवे भरतैजन पद वैदर्भ, मनुज लोक शोभानो गर्भ ॥ वन उपवनने गहन विशेष, तरणि किरण करी न शके प्रवेश ॥ ७ ॥ अति उत्तंग शिखर गिरि तणां, खडहडें वहेतां रह रवितणा ॥ झरे तसमांनु निझरणां जलेख, मानुं गंगाधर प्रकट्यो अनेक ॥ ८ ॥ अवनी वनिता भाल समान, रति रमणीयक देश प्रधान ॥ नगरी वर्धमाना द्युतिदरी, अलकानी शोभा रहि परी ॥ ९ ॥ शंकाये लंका बापडी, मूकी सुरनगरी आपडी ॥ सासय नगरीयें वंदिका, भू भामिनी कुंकुम बिंदिका ॥ १० ॥ मंदिर सुंदर गढ मढ पोल, सोहे विजय तणी तिहां ओल ॥ वर्ण अढार वसे गुणवंत, निज निज धर्म सदा निबहंत ॥११॥ अतिहि कृपण महिसुर तिस्या, छिल्लर तो क्षीरोदधि जिस्यां ॥ कडूइ वाणी साकर जिसी, तेहनी उपमा दीजे कीसी ॥ १२ ॥ एहवा मूढ रहे गहगही, अवगुण सुणावे शीख्या नहीं ॥ हृदय कठोर

जेहवुं नवनीत, हरिचंद्र नृप सरसी अप्रतीत ॥१३॥ उना इंदुकिरण सारिखा, निर्धन धनद जिस्या पार ख्या ॥ वांका कमलनालिके तीर, निःस्नेही जिम ज ल ने खीर ॥ १४ ॥ निरुपकार जेम रंजाखंज, अप्रि य तो जेम देवी जंज ॥ दुःखीयां जेम दो गुंदक दे व, विरुआं कामदेव अजिनेव ॥ १५ ॥ व्यवहारी व्यापारी वसे, धर्म कारजें सवि धस मसे ॥ परउप कारी परम प्रवीण, जिनवर वचन थकी लयलीन ॥ १६ ॥ पजणी प्रथम ढाल रस मणी, नर्मदा सुंदरी सुचरित्र तणी ॥ आगल वात रसाल विशेष, कहे हवे मोहन तिहां नरेश ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रतिपाले पुरजन जणी, संप्रति नामें भूप ॥ रह्यो दर्प तजी काम नृप, देखी सुंदर रूप ॥१॥ हरवा दुर्जनमहिघटा, अतुलीबल शार्दूल ॥ परिजन हंस रमाडवा, अजिनव गंगाकूल ॥ २ ॥ अरियण सहिं ता भूप बल, सेवे गिरिदरी भूप ॥ जेम जल बिह तो ग्रीष्मथी, वसे रहे जई कूप ॥ ३ ॥ ख्याग त्याग वाचा अचल, न्यायें निपुण नरिंद ॥ धवलीकृत दि ग दश जिणें, करी उदय जस चंद ॥ ४ ॥ रति रू

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पा पट्टरागिणी, रतिसुंदरी नामेण ॥ कीधो मुख आज्ञासथी, झांखो उडुपति जेण ॥ ५ ॥ एक पक्ष उज्ज्वल करे, नज्ञचर चंड प्रसिद्ध ॥ राणीमुख को ई अपर शशी, बिहु पक्ष उज्ज्वल कीध ॥ ६ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

प्रवहण तिहांथी पूरीयुंरे लाल ॥ ए देशी ॥ नगरभूषण सरिखो तिहां रे लाल, वृषभसेन सा र्थेश ॥ गुणवंता रे ॥ रयणायर सरिखो धने रे ला ल, जलदधि दाता विशेष ॥ गु० ॥ १ ॥ सांभल जो श्रोता जना रे लाल ॥ शीलतणो संबंध ॥गु०॥ सरस वचन रचना तिसी रे लाल, जेम सोनूंने सु गंध ॥ गु० ॥ सां० ॥ जलवट थलवटना करे रे लाल, द्रव्य बलें व्यवसाय ॥ गु० ॥ महिपति पण माने घणुं रे लाल, धने वश कोण न थाय ॥ गु० ॥ सां० ॥ ३ ॥ सोनुं रुपुं सामटुं रे लाल, मणि मा णिकना पुंज ॥ गु० ॥ कर धरे मोती दासीयो रे लाल, परिहरि जाणी गुंज ॥ गु० ॥ सां० ॥ ४ ॥ वी रमती तस गेहिनी रे लाल, लाजें भृतलोचन्न ॥ गु० ॥ शील धर्मनी जाणीयें रे लाल, अभिनव भू मि जतन्न ॥ गु० ॥ सां० ॥ ५ ॥ पतिभक्ति चंडान

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नी रे लाल, कोपनो नहिं संसर्ग ॥ गु० ॥ गुणमणि खाणी गोरडी रे लाल, रूपकला अपवर्ग ॥ गु० ॥ सां० ॥ ६ ॥ विलसे विविध ते दंपती रे लाल, सांसारिक सुखन्नोग ॥ गु० ॥ रामा राम नीरोगता रे लाल, लहीयें पुण्य संयोग ॥ गु० ॥ सां० ॥ ७ ॥ बे अंगज बे तेहने रे लाल, वीरसेन सहदेव ॥ गु० ॥ दिनकर हिमकर सारिखा रे लाल, जोडे परम गुण मेव ॥ गु० ॥ सां० ॥ ८ ॥ ऋषिदत्ता बेटी सहजथी रे लाल, किन्नरी सुंदरी अणुहार ॥ गु० ॥ बालपणे सघली कला रे लाल, शीखी पूर्वसंस्कार ॥ गु० ॥ सां० ॥ ए ॥ ऋषिदत्ता बिहु सहजथीरे लाल, हसेय रमेय अति प्रेम ॥ गु० ॥ सोहे बे मोती वच्चें रे लाल, राती चूनी जेम ॥ गु० ॥ सां० ॥ १० ॥ वीरमती निजपुत्रीने रे लाल, बेसाडे उत्संग ॥ गु० ॥ नित्य आन्नूषण नव नवां रे लाल, स्थापे नेहें अंग ॥ गु० ॥ सां० ॥ ११ ॥ बाल्लुडां जस आंगणें रे लाल, धूल धूसर न रमंत ॥ गु० ॥ कारागार आगार ते रे लाल, जाणीयें अहो पुण्यवंत ॥ गु० ॥ सां० ॥ १२ ॥ हवे अनुक्रमे वधती थई रे लाल, बाला मायारूप ॥ गु० टाले नहिं निज देहथी रे लाल, लज्जाकौम अनूप॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

गु० ॥ सां० ॥ १३ ॥ जनकें भणवा पाठवीरे लाल, सा अध्यापक गेह ॥ गु० ॥ जैनधर्म भलो अन्यसे रे लाल, लघुश्रमथी धरी नेह ॥ गु० ॥ सां० ॥ १४ ॥ झीले अहिंसा तटिनी तटे रे लाल, लीधो विनय कज गंध ॥ गु० ॥ चाखी समकित सूखडी रे लाल, जाण्यो जैनप्रबंध ॥ गु० ॥ सां० ॥ १५ निष्ठा एक जि नधर्मनी रे लाल, मिथ्यात्वथी प्रतिकूल ॥ गु० ॥ वि कथा सर्व विरमी रही रे लाल, जेम दल गलित तांबूल ॥ गु० ॥ सां० ॥ १६ ॥ पुत्री माही पेखीने रे लाल, हरखे तात अतीव ॥ गु० ॥ तात प्रकृति स हु को करे रे लाल, धर्मकथा ते सदैव ॥ गु० ॥ सां० ॥ १७ ॥ जेहवी संगति कीजीए रे लाल, तेह वा गुणनी केल ॥ गु० ॥ कुसुमनी संगतिथी तेलें रे लाल, पाम्युं नाम फूलेल ॥ गु० ॥ सां० ॥ १८ ॥ पामी वीरमती सुतारे लाल, यौवनवय सुकुमाल ॥ गु० ॥ मोहनविजयें वर्णवीरे लाल ॥ बीजी ढाल र साल ॥ गु० ॥ सां० ॥ १९ ॥ सर्व गाथा.

॥ दोहा ॥

सा पुत्री नवयौवना, देखी चिंते तात ॥ पुरमें को इ महेभ्यसुत, जोइ करुं जामात ॥ १ ॥ पुर सघलुं

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

वर कारणे, जोयुं करी तलास ॥ पण वर पुत्री सारि खो, न मल्यो कोइ तास ॥ २ ॥ मिथ्यादृष्टि नयरमें, अढे घणा धनवंत ॥ तस घर तनुजा आपतां, मन नवि धारे संत ॥ ३ ॥ केम दे श्रावक बालिका, मिथ्यात्वीने गेह ॥ केम दीजे चंमालने, वृंदा तरु ससनेह ॥४॥ मणि न जडे कोइ लोहमें, म्हेली कुंदन पत्र ॥ वृषभसेन एम मनमें, आलोचे एकत्र ॥ ५ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

हांरे माहरे जोबनीयानो लटको दहाडा चार जो ॥ ए देशी ॥ हांरे हवे आव्यो ए हवे रूपचंद्र पुरहुत यो ॥ वारु रे रुद्रदत्त नामा वाणीयोरे लो ॥ हांरे कांइ करवा वाणिज्य वर्द्धमान पुरमांहि जो, लेइने करियाणुं लोकें प्रमाणीयोरे लो ॥ १ ॥ हांरे तेणे वेची साटी सयण वसाणानी कोडि जो, कीधा रे तेणे गांठे दाम सोहामणा रे लो ॥ हांरे जस पुण्य सखाइ छे तेहने शी खोड जो, एके के पगले रे पुंज मणितणा रे लो ॥ २ ॥ हांरे तेणे पहेरी अंबर सखरां चहूटामांहि जो, हिंडे ते मोडामोडे छेलशुंरे लो ॥ हांरे परदेशीनी परगाममें एहिज रीति जो, फोगटीयो थइ फूले धोबी बेलशुंरे लो ॥३॥ हांरे तेणे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नमतां नमतां पुरमां कीधो मित्र जो, कुबेरदत्त नामा एक व्यवहारीयोरे लो ॥ हांरे तस मांहोमांहे बाझी पूरण प्रीति जो, ससनेही नेहीनी वात छे न्नारीयोरे लो ॥ ४ ॥ हांरे एम न्नांख्युं कुबेरे अहो अहो मित्र रुद्रदत्त जो, बंधाणी तुमसेंती माया आकरीरे लो ॥ हांरे तुम्हे परदेशीडा कामणगारां लोक जो,पंखीनी पेरे जाउ न मिलो फरीफरीरे लो ॥ ५ ॥ हांरे मेंतो मित्रजी माहरा कहींयें आ पुरमांहि जो, नेहडलो नवि कीधोरे कोइथी एवडोरे लो ॥ हांरे मारी विनति मांनो आवो मंदिर मुझ जो, कांइ जो पोताना करीने त्रेवडोरे लो ॥ ६ ॥ हांरे हुं तो जाणीश कीधी मुझने करुणा जोर जो, प्राहूणला तुम जेहवा किहांथी आंगणेरे लो ॥ हांरे तुम जेहवा नरथी क्यांहथी एक घडी गोठ जो, जेह तेहथी वातडली करतां नवी बने रे लो ॥ ७ ॥ हांरे तुम्हे इहां तो रहेता हशो कोइकने गेह जो, तेहथी शुं घर न्नूंडुं कहोजी आपणुंरे लो ॥ हांरे तुमे रहेशो तेता दिन करशुं गुजराण जो, फेरीने शुं कहीयें तुह्मने घणुं घणुंरे लो ॥ ८ ॥ हांरे कोइ वातनो अंतर त्रेवडो माहरा राज जो, करशुं जे काइ थाशे अमथी चा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

करीरे लो ॥ हांरे अमें लेशुं सो सो लोटणां तुम्ह हजूर जो, कहियें ले पयलल्लीया साहिब अनुसरी रे लो ॥ ए ॥ हांरे तव बोल्यो ततक्षिण रुद्रदत्त हित लाय जो, जाइजी तुम्हें जांख्युं ते अमें शिर धस्युं रे लो ॥ हांरे कांइ तुम अम मेलो हूउं पूरव लेख जो, दैवे ए मनगमतुं काम जलुं कस्युं रे लो॥ ॥१० ॥ हांरे जो तुमचो हेत ले अम उपर परिपूर्ण जो, अलगा रहीयाथी तोइयें ढूंकडा रे लो ॥ हांरे जूउं गयण घनाघन उमहे जूतल मोरजो, मंके रे ते तांडव रसवशे रूपडारे लो ॥ ११ ॥ हांरे जुउं किहां दिनकरने किहां कैरववन्न जो, तोहीपण विकसे ते साचा नेहथी रे लो ॥ हांरे कांइ क्यारे कोइथी टाल्यो पण न टलंत जो, मांनेतो मनमे लो होय जेहथी रे लो ॥ १२ ॥ हांरे तुमें राजी जो लो मुऊथी आवे गेह जो, तो तुमने किमए ज हवुं कहो थोडे गजेरे लो ॥ हांरे एम कहीने रुद्र दत्त आव्यो मित्रने गेह जो, लाखेणी मनुहारो ते सखरी सजेरे लो ॥ १३ ॥ हांरे रहियो ते परदेशी मित्रना मंदिर मांहि जो, पोताना कुटुंबनी परे सहु थइ रह्यां रे लो ॥ हांरे ते खाये पीये नित्य नवला

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

आहार जो, किणहि परे पर करीने नवी लह्यो रे लो ॥ १४ ॥ हांरे ते बेठो रुद्रदत्त एक दिन गोखम झार जो, जूए पुरकेरी शोभा नयणथी रे लो ॥ एतो मोहन विजयें भांखी त्रीजी ढाल जो, स्नेहाली हितकारी मीठी वाणियेंरे लो ॥ १६ ॥ सर्व गाथा ॥

॥ दोहा ॥

दीठी रुद्रदत्तें एहवे, ऋषिदत्ता सोत्साह ॥ स खीयां संगें परवरे, घालिने गले बांहि ॥ १ ॥ बाला सघली विविहपरें, हसती रमती त्यांहि ॥ एक एकने ताली दीये, चाले चहूटा मांहि ॥ २ ॥ जाणे शा वक हंसना मानसरोवर पंति ॥ खेले मुख करी के सरा, तिम बाला शोभंति ॥ ३ ॥ सा देखी परदेशी यो, चिंते चित्तथी एम ॥ खेचरपुत्री नगरमां रमवा आवी केम ॥ ४ ॥ के शुं प्रगटी पन्नगी, पुहवीतल थी एह ॥ एतो कौतुक सारिखुं, दीसे छे ससनेह ॥ ॥ ५ ॥ एहवे तिणहिज अवसरे, मूर्छागत थयो तेह ॥ धडहडीने धरणी ढल्यो, जिम गिरिवर शि खरेह ॥ ६ ॥ मूर्छित देख्यो मित्रने, आव्यो कुबेर वरवीर ॥ कीध सचेतन ततखिणें ढोली मंद समीर ॥ ७ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ढाल चोथी ॥

रंग रहो रे रस रहो रे फूल गुलाबरो ए देशी ॥ बांधव कहो ए शुं हतुं, मूर्छा पाम्या एमहो रसीया रे मित्रजीरे नांखो मया करो ॥ ए आंकणी ॥ ते कारण मूजने कहो, जाण्युं जाये जेम हे ॥ र० ॥ १ ॥ वगर कहे केम जाणीयें, पारका मननी वात हे ॥ र० ॥ खोली मन सांचुं कहो, जेम जाणुं परमार्थ हे ॥ र० मी० ॥ २ ॥ जे कांइ मूजथी सीझशे, ते तो करीश हुं काम हे ॥ र० ॥ वचन कुबेरदत्तनां सुणी, बोल्यो रुद्रदत्त ताम हे ॥ र० ॥ मी० ॥ ३ ॥ अहो अहो सज्जन माहरा, अकथ कथा छे एह ॥ र० ॥ तो तुम आगलें नाखीयें, जो तुमथी होये तेह हे ॥ र० ॥ मी० ॥ ४ ॥ नहिं तो कुण नांखे कहो, जल मे कंचन ज्वाल हे ॥ र० ॥ दुःख ते आगल दाखीये, जे टाले तत्काल हें ॥ र० ॥ मी० ॥५॥ ते तो कोइ नहिं जगतमें, जे जाणे परपीर हे ॥ र० ॥ गोष्टि न ली तेहथी कही, मनमेलू जे वीर हे ॥र०॥मी०॥६॥ रोग होवे तो वैद्यने, दाखीयें करी उपाय हे ॥ र० ॥ पण ए अंतर गत तणी, कोइ थकी न कलाय ॥ र० ॥ मी० ॥ ७ ॥ ते माटे तुमने किसुं, कहीयें कहो म

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

हाराज हे ॥ र० ॥ मन ए जाणे माहरुं, वात सवे शिरताज हे ॥ र० ॥ मी० ॥ ८ ॥ बोल्यो कुबेरदत्त फरी, कहो कहो मनमें हूंस हे ॥ र० ॥ जो न कहो मुज आगलें, तो ले तमने सूंस हे र० ॥मी०॥ए॥ वचन सुणी एम मित्रनां, नांखे रुद्रदत्त नांख हे ॥ र० ॥ हमणां इहां बेठो हतो, हुं आपणे गोख हे ॥ र० ॥ मी० ॥ १० ॥ तेहवे में दीठी बालिका, किन्नरी सरखी एक हे ॥ र० ॥ विस्मय हुं पामी रह्यो देखी रूपविवेक हे ॥ र० ॥ मी० ॥ ११ ॥ विधाता ए केम घडी शक्यो, एहवे रूपे एहरे ॥ र० ॥ एक ज वक्र विलोकतां, नवलो कीधो नेह रे ॥ र० ॥ मी० ॥ १२ ॥ बाला ए प्रेमनी सांकली, सांकली गइ ततखेव रे ॥ र० ॥ काम शिलीमुख देइ गइ, किणही न जाण्यो नेद हे ॥ र० ॥ मी० ॥ १३ ॥ साले ले नट सालसी, क्षण क्षण हियडा मांहि हे ॥ र० ॥ वसती नगरीमां गइ, चित्त चोरीने आंहि हे ॥ र० ॥ मी० ॥ १४ ॥ ए पुत्री ले केहनी, मित्र कहो मुजतेह हे ॥ र० ॥ जिम ते बाला जोयवा, पोंहचूं तेहने गेह हे ॥ र० ॥ मी० ॥ १५ ॥ विण दीठे ते बालिका, कांइ एह न सूहाय हे ॥ र० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जलथी ते मीन वियोगीउं, तेहनी शी गति थाय हे ॥ र० ॥ मी० ॥ १६ ॥ कुबेरदत्त हवे बोलशे, वाणी अतिहिं रसाल हे ॥र०॥ मोहनविजये सोहा मणी, चांखी चोथी ढालरे ॥ र० ॥ मी० ॥ १७ ॥ सर्वगाथा.

॥ दोहा ॥

कुबेरदत्त हवे मित्रने, भाखे वचन सुरंग ॥ रे भाई ए शो कर्यो, खोटो चित्त उमंग ॥१॥ वृषभसे ननी पुत्रिका, ए ऋषिदत्ता नाम, आज लगण पर णी नथी, सुकलीणी गुणधाम ॥ २ ॥ जैनधर्म सम कित धरो, छे कन्यानो तात ॥ तेणें करी करतो न थी, मिथ्यात्वी जामात ॥ ३ ॥ समकितधारी एह वो, जो वर मलशे कोय ॥ तो ए तस परणावशे, दूधें पयतल धोय ॥ ४ ॥ तुमने अमने त्रेवडे, मि थ्यात्वीनुं रूप ॥ तो तस पुत्री उपरे, खोटी न करो चूंप ॥ ५ ॥ काम ए मुजथी नवि होये, रे सूरिजन महाराज ॥ लालच खोटी नहि दीउं, लाजें विणसे काज ॥ ६ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

नदी यमुनाके तीर, उडे दोय पंखीयां ॥ ए दे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

शी ॥ रुद्रदत्तनी सुणी वाणी, तदा ज्ञानो रह्यो ॥ पा ज्ञो अक्षर एक, फरीने नवि कह्यो ॥ आलोचे मन मांहि, उपाय कोइ करुं ॥ कपटें पण सार्थेश तणी पुत्री वरुं ॥ १ ॥ जो इण अवसर माहरी, बुद्धि न केलवुं ॥ तो पछे आवशे काम, कहे ज्ञल खेलवुं ॥ मित्र थकी तो एह, कारज नवी ज्ञघडे ॥ तो निः स्वारथ कोण, पूंठे एहनी पडे ॥ २ ॥ हुं हवे माह री मेले, प्रपंच करुं वही ॥ पण ऋषिदत्ता एह, वरेवी में सही ॥ निर्गत जे गजदंत, फरी पेसे नहीं ॥ के की पीठ सुरंग, मटे नही लोकहिं ॥ ३ ॥ उद्यम वि ण ए काम, किसी परें सीझशे ॥ नारी होशे कंब ल, जेम जलें नींजशे ॥ रण धण कण गुणमाट, विलंब न कीजीये ॥ लासर नाखी वात, तेणे न पतीजीयें ॥ ४ ॥ ए जिनधर्म श्रावक, केरी बालिका ॥ एह ना जिननी वाणी, तणी प्रतिपालिका ॥ हूं तो श्राव क धर्मनो, मर्म जाणुं नहीं ॥ मन तो वरवा काज, रह्युं छे उम्महो ॥ ५ ॥ तेमाटे हवे साधु, समीपें जाइने ॥ शीखूं गृहस्थ आचार, के उद्यम लाइने ॥ पछे ऋषिदत्ता तात, तणे संगें रहुं ॥ जोगवी कन्या लास, वरी वांछित लहुं ॥ ६ ॥ उठ्यो करी आलोच,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रुद्रदत्त एहवे ॥ पहेरी वस्त्रने भूषण,जे अंगें फवे ॥ पहोतो पूढत पूढत, तेह उपासरे॥ वंदी बेठो ताम, के साधु उपाश रे ॥ ७ ॥ गुरु पूढे महानुभाव, क हो कीहां रहो ॥ दीसो छो गृहस्थ विवेकी, भलो विनय वहो ॥ सांभलो तो कांइ धर्म, कथा संभला वियें ॥ एके अक्षर सांभलीये, जो इहां आवीयें ॥ तव बोल्यो रुद्रदत्त, हसी कपटें करी ॥ जी स्वामी उपदेश, दीयो मुऊहित धरी ॥ धर्म कथाने काज, आव्यो हुं तुम कन्हे ॥ सीऊे जेहथी काज, आदे शो ते मुने ॥ ए ॥ आरंभ्यो उपदेश, गुरु तस आ गले ॥ ते पण कपटी नीचे, नयणे सांभले ॥ गुरु क हे सघली वस्तु, अथिर करी जाणीयें ॥ स्वार्थभूत संबंध, करीने प्रमाणीयें ॥ १० ॥ ए संसार असार मां, कोइ कोइनुं नहीं ॥ साचो एक श्री जिनधर्म, सखाई छे सही ॥ जीव करेछे पाप, कुटुंबने पोष वा ॥ पण भोगवतां पाप, न आवे संतोषवा ॥११॥ तरला तोय तरंग, तिस्यो धनगारवो ॥ बाजीगरना खेल,समो भव धारवो॥ए धन घरणी धाम, न कोइ लइ गयो ॥ जिहां जइ उपन्यो त्यांहिं, तिहां तेह नो थयो ॥ १२ ॥ मृगतृष्णाने काज, फिरे मृग

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रीवडो ॥ तेम धन तृष्णा माटे, अटे ए जीवडो ॥ जेणे जिमणे हाथे, करी धन वापखुं॥ तेणे सुरगति द्वार, सहि करी आचखुं ॥ १३ ॥ दान थकीज गृहस्थ, करे शुचि आतमा ॥ दुष्कर तप तपि शुद्ध, हूये महातमा ॥ समकित रत्न अमूल, तणो खप कीजीयें ॥ वली उपशमरस स्वाद, करीने पीजीये ॥ १४ ॥ एम निसुणी उपदेश, कहे रुद्रदत्त हसी ॥ अहो गुरु समकितवात, हवे चित्तमां वसी ॥ पांचमी ढाल रसाल, आनंद उपजावती ॥ मोहन विजयें रंग, कही मन भावती ॥ १५ ॥ सर्व गाथा.

॥ दोहा ॥

रुद्रदत्त कर जोडीने, जांखे गुरुने देव ॥ सूधो श्रावक मुजकरो, दीन दयालु देव ॥ १ ॥ दिन एता भूलो भम्यो, पाम्यो हवे जिनधर्म ॥ शीखवो श्रावकनी क्रिया, दया करी गुरु हर्म ॥ २ ॥ मूक्युं हवे मिथ्यात्वने, दीन पिता महाराज ॥ उदय थयो समकिततणो, अंतरंग दिनराज ॥ ३ ॥ सुगुरुये जाण्युं ए सुगुण, दिसे मानव कोय ॥ लाज वरुं श्रावक करी, जेम लहुं कर्मी होय ॥ ४ ॥ श्रावकधर्म तणी क्रिया, सयल शीखावी ताम ॥ रुद्रदत्त हरख्यो हि

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ये, सफल हशे हवे काम ॥ ५ ॥ जेम करिवरें पी धी सुरा, जेम पाखर्‍यो मृगराज ॥ तेम कपटी ढाकें चढ्यो, वरवाने ससमाज ॥ ६ ॥

॥ ढाल छठी ॥

राजा जो मिले ॥ ए देशी ॥ रुद्रदत्त विषये थ यो लीन, मांस पेशीथी जेहवोज मीन ॥ धिक् धिक् कामने ॥ जेणे धूत्यो अखिल संसार, धिक् धिक् का मने ॥ ए आंकणी ॥ नर सुर असुर अपर पण जाण, कामें तास मनावी आण ॥ धि० ॥ १ ॥ कौशिक दिन कर वायस चंद, देखी न शके कहे कविवृंद ॥ धि० ॥ पण कामी जन रजनी दीस, पेखे नहि नहिं ए जग दीश ॥ धि० ॥ २ ॥ पंचानन करिवर अहि थोक, जीते भुजबलथी बहु लोक ॥ धि० ॥ जे जरा जीरु जीते धरी टेक, नर कोडीमां कोइक एक ॥ धि० ॥ ३ ॥ परशस्त्र छेदे सूर सपराण, पण छेदे कोइ मनमथ बा ण ॥ धि० ॥ कामे कुण कुण न कर्यां काम, कामे न गंज्या तास प्रणाम ॥ धि० ॥ ४ ॥ हवे रुद्रदत्त ऋषिसंग निवारि, हूउं कपट श्रावक तेणी वार ॥ धि० ॥ आव्यो वृषभसेन तणे गेह, मिलियो कपटी आणी नेह ॥ धि० ॥ ५ ॥ नीपट घणी कीधी मनुहार,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

दीधूं आसन सार्थेशे तिवार ॥धि०॥ किहांथी आव्या जाशो किहां मित्र, नाम कहो तुम कवण पवित्र ॥ धि० ॥ ६ ॥ इण मंदिर करुणा करी केम, नांखो जेहथी जाणुं जेम ॥ धि० ॥ बोल्यो कपटी श्रावक तेय, अंबर ढेहडो मुहडे देय ॥ धि० ॥ ७ ॥ नयर अमारुं ए संसार, लाख चोराशी योनि आगार ॥ धि० ॥ जीव संसारी छे ते मूढ, तुम्ह ते शुं राखी यें गुह्य ॥ धि० ॥ ८ ॥ अनुक्रमें जैन नगर में दीठ, चारित्रधर्म नृप नेटो ईठ ॥ धि० ॥ सद्बोधनामा तास प्रधान, दीधुं मुजने द्वादश व्रत दान ॥ धि० ॥ ए ॥ परणाववा मांडी दश बाल, पण में मन न कर्युं ततकाल ॥ धि० ॥ कीधो श्रावक मुऊने तेण, जिनभक्तियुत परम गुणेण ॥ धि० ॥ १० ॥ इम नीसुणी चिंते सार्थेश, पूरण अे श्रावक सुविशेष धि० ॥ अहो अहो जिनधर्मी वडभाग, परणीते परण्यो छे कहेवो वैराग ॥ धि० ॥ ११ ॥ धन धन एहने सवि सुख होय, भव्य प्राणी दीसे छे कोय धि० ॥ पुनरपि पूछे सार्थ एवाच,अहो धार्मिक तमें बोल्या साच ॥ धि० ॥ १२ ॥ ए पुर घर नृप मंत्री भ्रात, ए तो तमे कही ज्ञाननी वात ॥ धि० ॥ पण

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

द्रव्यथी कहो नगरी नाम, सांभलियें श्रवणे गुण धाम ॥धि०॥१३॥ आग्रह सार्थेशकेरो जाणि, बोल्यो धूरत निगुण अयाण ॥ वसिये रूपचंद्रपुर गाम, श्रावक रुद्रदत्त माहरुं नाम ॥ धि०॥ १४ ॥ इहां हुं आव्यो बुं वाणिज्य काज, तुमने श्रावक सुण्या महाराज ॥ धि० ॥ साधर्मीनी सगाइ जाणि, आव्यो बुं मलवा इहां सुविहाण ॥ धि० ॥ १५ ॥ अमने मिथ्यात्वी नो न रुचे संग, जेम हंसने गमे न काककुरंग ॥धि०॥ हरख्यो वृशभसेन ततकाल, पण नवि जाणे माया जाल ॥ धि० ॥ १६ ॥ धोलुं ते जेतुं दीतुं दूध, धूर्तनी भक्ति विशेषें प्रतिबुद्ध ॥ धि०॥ पभणी रूडी छठी ढाल, मोहनविजयें थइ उजमाल ॥ १७ ॥ सर्वगाथा ॥

॥ दोहा ॥

रुद्रदत्त सार्थेशथी, करे धर्मनी वात ॥ कोइ जाणें जाणे नहीं, कपट राईमात्र ॥ १ ॥ वृषभसेन सार्थेश करे, व्रत पोसह पच्चरकाण ॥ सामायिक खोटे मनें, ते धूरत महिराण ॥ २ ॥ साथे थइ सा र्थेशने, ते आवे गुरु पास ॥ शिर धूणे ने सुणे कथा, जेम अहि नाद विलास ॥ ३ ॥ जिम प्रभुजी स्वामी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तहत्त, धन साधू उचरंत ॥ मुख मीठो धीठो हिये, रुद्रदत्त कपट वहंत ॥ ४ ॥ पूछे वली वखाणमां, वारु गहन विचार ॥ साह्यो थई बेसे वचें, जोजो कपट आचार ॥ ५ ॥ दंत्री मुख बोले दूरसुं, हिये हलाहल होय ॥ पूठसहित फणिनृत प्रत्यें, शिखी गलंतो जोय ॥ ६ ॥ रुद्रदत्त हवे अनुक्रमें, कहे सार्थपने ताम, हवे देजो मुझ आगना, तो पोहो चुं निज गाम ॥ ७ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

गढ बुंदीरा हाडा वहाला, चलण न देशुं ॥ ए देशी ॥ निसुणी सार्थेश रुद्रदत्त मुख वाणी, चालशे सयण सयाणो हो ॥ रूपचंद्रपुरवासी हो मित्रजी माहरा, चलण न देशुं ॥ ए आंकणी ॥ एहवो सनेही वाहलो किहांथकी मलशे, धर्मी सुजग सपराणो हो ॥ रू० ॥ १ ॥ एतो सनेही प्यारो मुझघरे आव्यो, जेम आलसुघर गंगा हो ॥ रू० ॥ बीजा घणाए मलशे निगुण नहेजा, कुटिल उलंठ अनंगा हो ॥ रू० ॥ २ ॥ मिथ्यामतने एणे सुहणे न दीठो, केवली वयणे रातो हो ॥ रू० ॥ एहवो विचारी जगमांहि न कोई, केणे मिषें रहे ए जा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तो हो ॥ रू० ॥ ३ ॥ पुत्री जो माहरी एने परणा वुं, जोईए तेहवो जमाई हो ॥ रू० ॥ नाव नदी जो गें ए वर मलियो, पुत्रीनी पूर्ण कमाई हो ॥ रू० ॥ ४ ॥ एहने मूकीने बीजा केहने परणावुं, तो सरे काज प्रमाणे हो ॥ रू० ॥ ए रुषिदत्ता वखतें आ कष्यों, आव्यो वर इण टाणें हो ॥ रू०॥ ५ ॥ पूछुं एहने जइ गोद बिछाई, जो मुऊ विनति माने हो ॥ रू० ॥ एहवुं आलोची रुद्रदत्त नणी पूछे, सार्थप जइने ढांने हो ॥ रू० ॥ ५ ॥ पुत्री अमारी साजन तमें हवे परणो, ए छे अरज अम केरी हो ॥ रू० ॥ सेवा करुं साजन अमथी जे थाशे, ना न कहेजो फेरी हो ॥ रू० ॥ ७ ॥ अमचा हियामां साजन तु म गुण वसिया, तेणे करी कहीये छे ताणी हो ॥ रू० ॥ पुत्री अमारी साजन छे दृढधर्मी, जोडी ए सरस समाणी हो ॥ रू० ॥ ८ ॥ एम सूणीने साज न रुद्रदत्त हरख्यो, आपणा मनथी विचारे हो ॥ रू० ॥ जिण उद्देसे साजन कपट करुं बुं, कीधूं पा धरुं ते किरतारें हो ॥ रू० ॥ ए ॥ आज अमीरसें जलधर वूठ्यो, मुंह माग्यो पड्यो पासो हो ॥ रू० ॥ काकतालीनो साजन न्याय थयो ए, हूउं कोइक तमा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सो हो ॥ रू० ॥ १० ॥ क्षणएक विलंबी साजन रु ऋदत्त बोल्यो, शाहजी अमें परदेशी हो ॥ रू० ॥ जाण्या विहूणा साजन पुत्री केम देशो, जूउं हृदय गवेषी हो ॥ रू० ॥ ११ ॥ सार्थपति नांखे साजन तुमने पिछाण्या, छो साधर्मिक मोरा हो ॥ रू० ॥ रूप गुणे करी साजन जातिज जाणी, तेणेकरी क रीये छिए निहोरा हो ॥ रू० ॥ १२ ॥ कन्या वरया विण तुमें किहां जाशो, चूलामणी नवि कीजे हो ॥ रू० ॥ कपटी पयंपें साजन वारु वरेशुं, केम तुम ने दुहवीजे हो ॥रू०॥ १३ ॥ हरख्यो सुणीने सार्थ प निज घरे आव्यो, कीधी सखर सजाई हो ॥ रू० ॥ लग्न लेवाये साजन चोरी बनाई, वहेंचें वीच वधाई हो ॥ रू० ॥१४॥ धवल मंगल साजन सखर सोहाये, सोहेलां सखरां गवाये हो ॥ रू० ॥ ठाय वरघोडे साजन लीध जमाइ, तोरण मोतीडे वधा ई हो ॥रू०॥ १५ ॥ होम हवन साजन तव निरमा इ, द्विजमुख वेद पढाई हो ॥ रू० ॥ चार मंगल साजन तिहां वरताई, अनिगत फेरा फराई हो ॥ रू० ॥ १६ ॥ कपट श्रावक साजन साहस हेजे, ऋषिदत्ता परणाई हो ॥ रू० ॥ ढाल सुरंगी साजन

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सातमी नांखी मोहन वचन सवाई हो ॥रू०॥१७॥

॥ दोहा ॥

परणी कपटी श्रावकें, ऋषिदत्ता तेणीवार ॥ उत्सव महोत्सव करी घणा, वरत्या जयजयकार ॥ ॥ १ ॥ धन बहु दीधुं दायजे, कापड भूषण कोडि ॥ रुद्रदत्त दंभी तणा, पहोंता सघला कोड ॥ २ ॥ दंभी सा कन्या वरी, गयो कुबेरदत्त पास ॥ वात कही सघली तिसे, आणी मन उल्लास ॥ ३ ॥ केह वि परणी कपटें करी, श्रावक पुत्री आज ॥ छे मुजरो तुम मित्रने, अहो मित्र महाराज ॥ ४ ॥ कुबेर दत्त समरथ थइ, हस्यो करतल आस्फाल ॥ कहे धन्य धन्य तुझ बुद्धिने, कपट सरोवर पाल ॥ ५ ॥ दिन केते कपटी हवे, हाथ करी निजदाम ॥ शीख ग्रहे ससराकने, विनय करीने ताम ॥ ६ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

मारे आंगणेहो राज, छेला मारु वावडीजी ॥ ए देशी ॥ जो जो कपटी हो राज, कहे करजोडीने जी ॥ निज ससराने हसी तेह, गुणवंता जी ॥ मूज दीजें हो राज, सदन नणी शीखडी जी ॥ ए आंकणी ॥ इहां आव्यां हो राज, दिवस केइ थइ गया

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जी ॥ तुम साथें थयो बहु नेह ॥ गु ॥ मू० ॥ १ ॥ माहरे मंदिर हो राज, जोतां हशे जे वाटडी जी ॥ वली आवशुं इण पुरमांहे ॥ गु० ॥ दिशि खाव्या तुं हो राज, इहां तुम शुं मलीजी ॥ घणुं जाणजो थोडा मांहि ॥ गु० ॥मू०॥श॥ अम लायक हो राज, होय कारिज जि कोजी ॥ लखी मोकलजो तुम्हे तेह ॥ गु० ॥ अमथी अंतरहो राज, तुमे मत रा खजो जी, थें तो नवल निवाहो नेह ॥ गु० ॥ मू० ॥ ॥ ३ ॥ तिहां रह्या पण हो राज, अमें तुं तमारडा जी, तुमे कीधा महोटा अम्म ॥ गु० ॥ माहरे नयरे हो राज, किवारे पधारशो जी, जो न आवो तो तुमने सम्म ॥ गु० ॥ मू० ॥ ४ ॥ एणी पुरमांहे हो राज, अम सुखीया थया जी, रखे मूको कदीरे वी सार ॥ गु० ॥ तुम जहेवा हो राज, धर्म सनेही नवि मीले जी, कुंण मलशे अमथी एवार ॥ गु० ॥ मू० ॥ ५ ॥ जिनयात्रा हो राज, समयें संभारशुं जी ॥ तुमे साह जी सुगुण विश्राम ॥ गु० ॥ एम कपटी हो राज, करे लटपट घणीजी ॥ सूणी बो ल्यो वृषभसेन ताम ॥ गु० ॥ मू० ॥ ६ ॥ किहां चा लशो हो राज, करी प्रीत एवडी जी ॥ मूखे कहो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

छो जी जाशुं हवे ॥ गु० ॥ अम उपरें हो राज, थइ जाउं सुखें जी ॥ पण चलण न देशुं हेव ॥ गु० ॥ मू० ॥ ७ ॥ फरी गोठडी हो राज, किहांथी तुमार डीजी ॥ ए तो बनतां बनी गइ गोठ ॥ गु० ॥ अमे कोइथी हो राज, नहीं तो करां प्रीतडी जी, जे पव ने न पडे कोठ ॥ गु० ॥ मू० ॥ ८ ॥ तुमे स्वामी हो राज, अछौं अमीरस बोलता जी॥ तेणें माहरुं हेलव्युं हीर ॥ गु० ॥ नाहिं तो कोइने हो राज, धीरुं केम बांहडी जी ॥ अमें श्रावक धर्मी धीर ॥गु०॥मू०॥ए॥ अमें तमने हो राज, दीधी एक पुत्रिका जी, किस्यो पडदो राख्यो नांहि ॥गु०॥ एम निःस्नेही हो राज, तुमे पर देशीया जी ॥ चोछो हली मली छेह दूसाह्य ॥ गु० ॥ मू० ॥ १० ॥ जली जाणी हो राज, तुमारी प्रीतडी जी, हवे चालो छो माया लाय ॥ गु० ॥ सुंदर मंदिर हो राज सवि, छे तुमारडां जी तूमें रहो रहो महाराय ॥ गु० ॥ मू० ॥ ११ ॥ तव रुद्रदत्त हो राज, बोल्यो हसी शाहशुं जी ॥ हठ केरुं नहीं छे काम ॥ गुं० ॥ अमें लागर हो राज, वेपारी वाणीया जी ॥ अछे कारज बहूलां धाम ॥ गु० ॥ मू० ॥ १२ ॥ वली मिलशुं हो राज, जो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

डें खरो नेहलो जी ॥ पण हवणां तो दीजें शीख ॥ गु० ॥ सत साखें हो राज पसरजो साहिबाजी, तुमें जीवजो कोडि वरीस ॥ गु० ॥ मू० ॥ १३ ॥ बेसी तव सार्थपें हो राज, सोंपी निज पुत्रिका जी ॥ तस शीखडी दीधी ताम ॥ गु० ॥ शुभ शुकने हो राज, तदा संप्रेडिया जी, सहु साजन करे गुणग्राम ॥ गु० ॥ मू० ॥ १४ ॥ बेसी रथमें हो राज, रुद्रदत्त निजपुर चालियाजी ॥ कही आठमी हो राज, स लूंणी सोहामणी जी ॥ ए तो मोहनविजयें ढाल ॥ गु० ॥ मू० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

ऋषिदत्ता रुद्रदत्त बिहु, पंथे वहे सोत्साहि ॥ अनुक्रमें पहोतां हेज नरी, रूपचंद्रपुरमांहि ॥ १ ॥ कुटुंब सयल हर्षित थयुं, रुद्रदत्त आव्यो जेण ॥ साथें ऋषिदत्ता निरखी, हरख्यो अतिहिं तेण ॥ २ ॥ सासूने पाये पडी, सासू सुकुलिणी ताम ॥ वडां वडेरां आदिदें, सहुने कीध प्रणाम ॥ ३ ॥ बेठी मंदिर हेज नरी, कीधां जोजन सार ॥ रुद्रदत्त पण कपटग्रह, जम्यो हस्यो तेणीवार ॥ ४ ॥ अतिप्रीतें पति प-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

झनी, जोगवे जोगप्रकाश ॥ दो गुंदक सुरनी परें, विलसे लब्धि विलास ॥ ५ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

गढडामांहे फूले सहीउं हाथणी ॥ ए देशी ॥

आचार घरना सा तव देखीने, मनडामां शोचे वारं वार ॥ माहरे प्रीतमीए नेसहि तो कैतव केलव्युं, हूंतो श्रावक केरी बालिका, एहोनो तो महेश्वर आचार ॥ मा० ॥ १ ॥ सहितो ए कपटी श्रावक होयने परणीवाहीने एणे कूड ॥ मा० ॥ जली हूं रे जुलवाणी दीसुं एहथी, घुरथी में नवि जाण्युं कूड ॥ मा० ॥ २ ॥ धूतारे नाखी मुजने फंदमां, तेहनो हुं केहो करीश उपाय ॥ मा० ॥ माहरुने पिहर रह्युं वेगलुं, डुःखडुं ए जाइ केहने कहाय ॥ मा० ॥ ३ ॥ सुरतरु जाणी में बाथ जरी हती, थई निवड्यो नाह बबुल्ल ॥ मा० ॥ दीसे बे बाहेर फररा फूटरा, जीतर सुरपति मदिरा मूल ॥ मा० ॥ ४ ॥ कर तो में होंशे करी घाल्यो हुतो, जाणीने लीली नागरवेल ॥ मा० ॥ पण तो ए निवडीयों कौञ्च वेलडी, खलहुंती आवी मलीयो खेल ॥ मा० ॥ ५ ॥ न मिटे क्यारें विधिना अक्षरा, पडथुं पानुं कपटी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

हाथ ॥ महारो धर्म हुं केण परे करुं, अहो अहो श्री जिनवर जगनाथ ॥ मा० ॥ ६ ॥ केम करी रा खी शकीयें जालवी, एकण म्यानमें बे करवाल ॥ मा० ॥ प्रीतम एहवे अवसर आवियो, नीरखी स चिंते ते सुकुमाल ॥ मा० ॥ केम तमें वनिता आ मण दूमणां, आवो ढो माहरे नयणें आज ॥मा०॥ कीणेजी निहेजें तुमने दूहव्यां, मुऊ जणी तुमे दा खो तेह समाज ॥ मा० ॥ ७ ॥ आपणे खामी ढे कहो केहनी, पहेरीने जूषण नव नव रंग ॥ मा० ॥ कपूरकेरा तूमें करो कोगला, खेलो साहेली केरे सं ग ॥ मा० ॥ ए ॥ हियडो मेलोरी पीहरतणो, म त तुमें आणो आतमराम ॥ मा० ॥ निवहो आपण लें करे लेइने, आपणा मंदिर केरुं काम ॥ मा० ॥ १० ॥ यौवनलटको दहाडा चारनो, अवसर केहो धर्मनो आज ॥ मा० ॥ आगलें सुख दुःख केणें दी ठडुं, केणे वली दीठो धर्मसमाज ॥ मा० ॥ ११ ॥ के म करी कीजे दोहिलो आतमा, पामीने मानवनो अवतार ॥ मा० ॥ मूरख जे कोई कांई लेहेता नथी, ते नव लेवे सरस आहार ॥ मा० ॥ १२ ॥ एहवा सांजलीने पीयुना बोलडा, हारीने बेठी धर्म रतन्न ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ततक्षण लागे संगति नीचनी, जो करी रहीयें को डी यतन्न ॥ मा० ॥ १३ ॥ सवृक्षपुष्पसौरन्य, दान दानैकतत्परः ॥ शबेन मिलितो वायुर्दौर्गंध्यं किमु ना श्नुते ॥ दुइ मिथ्यातणी पियुना प्रसंगथी, मानव जो जो कर्मनां काम ॥ मा० ॥ पीयूष केरुं गरल थई गयुं, ऐ ऐ मोह महाबलधाम ॥ मा० ॥ १४ ॥ आग ल होशे सवि वातो जली, हर्षशुं निसुणो बाल गो पाल ॥ मा० ॥ मोहनविजयें जांखी हेजशुं, अजि नव जांखी नवमी ढाल ॥ मा० ॥ १५ ॥ सर्व गाथा.

॥ दोहा ॥

सुख जोगवतां विविहपरें ऋषिदत्ताने एक, पुत्र रत्न हूउं जलो, सुंदररूपविवेक ॥ १ ॥ कीधा उ त्सव नवनवा, दीधां जाचक दान ॥ नात संतोषी आपणी, वहेंच्यां फोफल पान ॥ २ ॥ नाम ठव्युं वरमुहूरतें, तास महेश्वरदत्त ॥ रूपवंत विद्यानिलो निरुपम गुणसंसत्त ॥ ३ ॥ हूउं तेह अनुक्रमें, यौवनवय उन्मत्त ॥ सहू वखाणे नयरमें, धन्य महे श्वरदत्त ॥ ४ ॥ नमया सुंदरीनो हवे, सांजलजो अधिकार ॥ अति रसीली ढे कथा, शीलोपरि सु विचार ॥ ५ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ढाल दशमी ॥

नानो नाहलोरे ॥ ए देशी ॥ पीयर रुषिदत्ता तणे रे जाइ छे सहदेव,साजन सांभलो रे ॥ ए आंकणी ॥ तस दयिता छे सुंदरीरे,जेहवी सिंधुसुता स्वयमेव॥१॥ अनुक्रमें गर्भ धर्यो तिणे रे, सूचित सुपनाहार ॥ सा०॥ जेम जेम गर्भ वधे भलो रे तेम तेम हर्ष अपार ॥ सा० ॥ २ ॥ अति न हसे अति नवि सुवे रे, अति चपल न चाले चाल ॥ सा० ॥ अति बरकी बोले नहीं रे, अति घणुं न करे ख्याल ॥ सा० ॥ ३ ॥ वात जो भुंजे गर्भिणीरे सुत होय कुब्ज के अंध ॥ ॥ सा० ॥ कफवत भोजने पांडुरोरे, पीतवंत पांडु प्रबंध ॥ सा०॥ ४ ॥ अति लवणें डगबल हरे रे, अति शीतलें होय वाय ॥ सा० अति ऊनुं हरे वीर्यने रे, अतिकामें गर्भ हणाय ॥ सा० ॥ ५ ॥ दिवसे जो सूवे गर्भिणीरे, निद्रालु होय जात ॥ सा० ॥ नयनांजनथी चीपडो रे, रुदने गलित डगवात ॥ सा० ॥ ३ ॥ स्नान लेपन दुःशीलियोरे, कुष्टि तेलायाम ॥ सा० ॥ हसवाथी रसना तालवुं रे, दंतोष्ठादिक श्याम ॥ सा०॥ ७ ॥ चपलगतें चंचल हुवेरे, शुष्काहारें मूढ ॥ सा० ॥ होवे प्रलापें अतिबके रे, अति निसुएये नि

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

गूढ ॥ सा० ॥ ८ ॥ इति सुश्रुत शारीरमें रे, भांख्यो गर्भ विचार ॥ सा० ॥ अनुमानें ते ग्रंथनें रे, पाखे गर्भ सा नार ॥ सा० ॥ ए ॥ जेहने उदरें अपुत्रीयो, उपन्यो होय जो जात ॥ सा० ॥ गाल माटी वींकरा रे, आहारे तेहनी मात ॥ सा० ॥ १० ॥ पुण्यवंत गर्भे उपन्यो रे, करे शुभकरणी मात ॥ सा० ॥ रुडा ज दोहला उपजे रे, शास्त्रमें एम कही वात ॥ सा० ॥ ११ ॥ अनुक्रमें सुंदरी नारीने रे, दोहद उपन्यो अहीन सा० ॥ सप्रिय रमुं गयंवर चढीरे, नर्मदा तटिनी पुलीन ॥ सा० ॥ १२ ॥ दीनने दान दिउं जोइतुंरे, पूरुं एह उमाह ॥ सा० ॥ दोहद ए मुज चित्तना रे, जइने विनवुं नाह ॥ सा० ॥ १३ ॥ हुं सतणी गतें चालतीरे, पहोती प्रीतम पास ॥ सा० ॥ स्वस्थ थई दोहद कह्या रे, करिकरिवचनविलास ॥ सा० ॥ १४ ॥ पियु रंज्यो दोहद सुणी रे, दयिताने दीध दिलास ॥ सा० ॥ ए तुम इछा पूरशुं रे, क रशुं एह तमास ॥ सा० ॥ १५ ॥ जो कशी होंश होये वली रे, मुझने दाखो तेह ॥ सा० ॥ ढाल कही दशमी भली रे, मोहन विजयें तेह ॥ सा० ॥ १६ ॥ सर्व गाथा ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ दोहा ॥

सहदेवें आण्यो तुरत, दंती शुंमादंम ॥ हिमगिरिबांधव जाणीयें, के धराधरपिंड ॥ १ ॥ सोहे रदन रयणे जड्या, अति विस्तार अद्वीप ॥ मानुं गज दाढा उपरे, उप्पन्न अंतरद्वीप ॥ २ ॥ उच्च कपोल थकी झरे, वहे मदधारा नूर ॥ उलटयो पद्मद्रह थकी, सिंधू गंगापूर ॥ ३ ॥ करीकरी इंदीवरें, चित्रित तनु उत्संग ॥ मानुं लताविद्रुम तणी, तरे पयोधितरंग ॥ ४ ॥ गजने गले घंटावली, झीलती नीली झूल ॥ सरवर तट हरीयां वचें, दर्दुर डहके अमूल ॥ ५ ॥ वीरसेन सा सुंदरी, बेठी गयंवर पीठ ॥ पास्यो तट ते नर्मदा, अति रमणीय इठ ॥६॥

॥ ढाल अग्यारमी ॥

अमदावादना खेड्या रे, वालम वहेला आवजो रे ॥ हांरे मारी मीठडा बोली नार, काजल थोडेरो हो सार ॥ ए देशी ॥ नर्मदा नदीने तीरे रे, गयंवर वीफर्यो रे ॥ उंडा घनशुं गज गललो कर्यो रे ॥ तेणे गजे धूणयुं धडहड अंग, करतो धूसर हो उतरंग ॥ अंकुशीयानी झीकें रे, ते वश आणीयो रे ॥ १ ॥ अरहो परहो फेर्यो रे, गज तेहने तटें

रे ॥ सूंढे ग्रहीने महीरुह आठंटे रे ॥ तव तिहां बीहती सुंदरी नारी, पीयुने करती बहु मनूहार, सुंदर तरुनी ठायें रे, तुमें छीप राखजो रे ॥ २ ॥ गजने पीयुडे आण्यो रे ते तरु हेठले रे ॥ लांबी सांकल रे, भूतल खलभले रे ॥ मदझर राख्यो तिहां झीझीकार, भामिनी भासे हो भरतार, करिव रियाने ठांमो रे, जइ जल झीलीएं रे ॥ ३ ॥ प्रम दा पीयुडो बेहु रे, गजथकी उतर्यां रे ॥ नमया त टनी साहमां संचर्यां रे ॥ जिहां करे हंस मयूर ट कोर, जाणीयें रण झण रणके जोर, नूपुरियां अति रुडां रे वहे तेह वजाडती रे ॥ ४ ॥ जलना पूरमां होवे रे बहुल पंपोटडा रे, सूर्यना दीधिति रे, फल हले रुअडा रे, एतो मानुं तटिनी कंठें हार, तेहनां दीपे हो नंग सार ॥ हरि हरियाली उंढी रे, जा णीयें उंढणी रे ॥ ५ ॥ मत्स्यना पुठथी उडे रे, ज लना बिंडुवा रे ॥ झीणा झीणा श्रेणें जूजुआ रे, ए तो मानुं सार्यां केशे केश, उज्ज्वल दधिसुत हो सुविशेष, सारसीआला पाले रे सारसुडा चूगे रे ॥ ६ ॥ नीरना पुरमें मानुं रे अंबुज उफण्यां रे, गुणथी लीना मधुकर रणझण्या रे ॥ एहवी सा न

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

दी सुंदरी देखि, पामी मनमां हर्ष विशेष ॥ धसमसी ने ते पेठी रे, झीलवा कारणें रे ॥ ७ ॥ सजनी सा हेली संगें रे किन्नरी आंटती रे, मांहोमांह जल निर्मल छांटती रे ॥ के ग्रहे करथी कैरव कोष मु ख, द्युतिये देती हो इंदुने दोष॥ काजलीयाली नेणे रे, नर्मदा हारथी रे ॥ ८ ॥ तरती आवडती पडती रे केश्क उगती रे, जाणीए पन्नगी जल अंगूठथी रे ॥ एम तिहां रमती रसन्नरी नारि ॥ त्रट त्रट त्रूटे मोतीहार, मोतीयडांने लोन्नें रे सफरी तरव रे रे ॥ ए ॥ रमत रमतां थाकीरे सघली सुंदरी रे, कांठे उन्नी जेहवी पुरंदरी रे ॥ सुंदरी नीचोवें ति हां वेण, फणिपति जीत्यो जाणीए जेण, रेसमीया ली पहेरी रे बीजी पटोलियो रे ॥१०॥ ठमके ठमके चाली रे प्रणमे नाहने रे, स्वामी पूरयो तमे ए उ त्साहने रे ॥ पण वली होंश ठे मुऊने एक, पूरो तो कहियें हो सुविवेक ॥ तमने जो नवि नांखुं रे तो केहने कहुं रे ॥ ११ ॥ माहरो जोरो चाले रे पीयु तुम आगलें रे, जेणी रीतें वालुं तेम तेमही व ले रे ॥ एम कही सुंदरी करी मनोहार ॥ तव तिहां बोल्यो हो नरतार, हियडलानी वातो रे, नारी मुऊ

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ने कहो रे ॥ १२ ॥ पैसो खरचे थाशे रे तो होंश पू रशुं रे, बीजुं गुणवंती बल नहिं दूरशुं रे ॥ तेणे एम निसूणी पीयुनी वाणी, बोली सुंदरी हो जोडि पा णि ॥ नाहलीया एणे तीरे रे एक पूर वासीये रे ॥ १३ ॥ उंचा उंचा रूडा रे महोल बनावीये रे, र मवा अहोनिशि इण तटें आवीयें रे ॥ एवी इछा मु ऊ मनमांहि,पूरो पीयुडा हो सोत्साहि ॥ प्रीतमीए तिण वेला रे, आरंन्न आदस्यो रे ॥ १४ ॥ केटला दिनमां तेणें रे नयर वसावीयुं रे, रुडा रुडा लोकने वास वसावीयुं रे ॥ एतो कही सरस अग्यारमी ढा ल, मोहनविजयें हो सुविशाल ॥ सरसाली अति मीठडी रे, आगल वातडी रे ॥ १५ ॥ सर्व गाथा.

॥ दोहा ॥

वस्युं नर्मदापुर नलुं, नर्मदा तटने तीर ॥ उ ज्ज्वल जिनमंदिर कस्यां, जिम क्षीराब्धि दंमीर ॥ १ ॥ जिन मूर्त्तिनी स्थापना, कीधी लान्न निमित्त ॥ नाव सहित दंपती करे, नवली पूजा नित्त ॥ २ ॥ काशमीरज चंदन कुसुम, धूप दीप उपचार ॥ न क्ति विशेषे स्वारथ करे, ए श्रावक आचार ॥३॥ एम दोहद पूरण कस्या, नारीना नव रंग ॥ सहदेवें सू

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

परें किया, अधिकाधिक उछरंग ॥ ४ ॥ एहवे र हेतां अनुक्रमें, गर्जतिथि थइ जाम ॥ सुंदर नारी एं प्रवर, पुत्री प्रसवी तांम ॥ ५ ॥

॥ ढाल बारमी ॥

मोतीयारां हे झुमख झूमखां ॥ ए देशी ॥ अथ वा घरे आवोजी आंबो मोरीयो ॥ ए देशी ॥ सह देवने दीधी वधामणी, घरें प्रसवीजी पुत्री रतन्न ॥ सही हूवां ए रंग वधामणां, तव हरख्योजी शाह शिरोमणि, अति पुलकित हूउं तन्न ॥ स० ॥ १ ॥ मणि सोनुं रुपुं सामटुं, तस दासीने कीध पसाय ॥ स०॥ कख्यां उंरण जाचक लोकने, जेम आतम शक तें देवाय ॥ स० ॥ २ ॥ कख्यो उत्सव पुत्रीनो अति नवो, जेम अंगज आवे कराय ॥ स० ॥ वली घर घर गुडी उछले, घर आंगणे गीत गवाय ॥ स० ॥ ३॥ दुर्वानां तोरण बांधीयां, वीच सुरतरुदल लहकंत ॥ स० ॥ कुंकुमना करतलदिधला, जला फूल फगर महकंत ॥स०॥४॥ मणि मोतीनां हो टोमे झूंबखां, गोखें चंदन जरीयां माट ॥ स० ॥ भेरी झुंगल तव हडहडे, दुडी गुंजाला गुंजे थाट ॥ स० ॥ ॥ ५ ॥ जन्ममहोत्सव पुत्रीतणो, सहदेवें कीधो वि

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

शेष ॥ स० ॥ जिन साजन सवि संतोषियां, दिन उचित उचित सुलेष ॥ स० ॥ ६ ॥ सहदेव कुटुंब जणि कहे, तमें सांभलो माहरी वात ॥ स० ॥ ज्यारे सुता एहनी मातने, हूंती गर्भे विमल विख्यात ॥ स० ॥ ७ ॥ त्यारें एहवो डोहलो उपन्यो, एहेनी जननीने अहो वीर ॥ स० ॥ गयंवरने खंधें चढी करी, जइ खेलुं हो नर्मदा तीर ॥ स० ॥ ८ ॥ वली तेणें तटें नगर वसाविएं, अतिरूडुं नर्मदा नाम ॥ स० ॥ जो मनमां आवे सहु तणा, जोउं दोहद गुण अभिराम ॥ स० ॥ ए ॥ हवे कहो तो ए पुत्रीनुं दीजीयें, वर नर्मदासुंदरी नाम ॥ स० ॥ दोहद सघला में पूरिया, घरे प्रसवी पुत्री ताम ॥ स० ॥ १० ॥ कहे कुटुंब सयल हर्षे करी, एहनुं एहिज उत्तम नाम ॥ स० ॥ नाम नर्मदासुंदरी स्थापिने, सहू पहोता निज निज धाम ॥ स० ॥ ११ ॥ सा सुंदरी पुत्री जणी, लेइ गोद रमाडेसुगेल ॥ स० ॥ सिंचे पय पाणी पानथी, जिम अमीए सुरतरु वेल ॥ स० ॥ १२ ॥ आभूषण दिव्य अंगें ठव्यां, फरके टोपी झरकशी शीष ॥ स० ॥ बेउ पाये घूघरी घमघमे, देखी जननी पामे हीस ॥ स० ॥ १३ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

घर आंगणे दोडे घुंटणे, क्षण रोवे क्षण हसे तेह ॥ स० ॥ कहे मुखथी खमां खमां, मावडी करि कटि तटे आणी नेह ॥स०॥१४॥ वली निर्मल नीरें नवरावती, बुचकारती माय जे मयाल ॥स०॥ मोहन विजयें वर्णवी, ए कही बारमी ढाल ॥ स० ॥ १५ ॥ सर्व गाथा.

॥ दोहा ॥

वाधे नमया सुंदरी, रुपरंग गुण प्रेम ॥ ए रजनीपति बीजनो, दिन दिन वाधे जेम ॥ १ ॥ जेणें बालपणाथकी, जोया ग्रंथ अनेक ॥ लक्षण शास्त्र तणी थई, वरदायी सुविवेक ॥ २ ॥ निर्विकार जस नयन युग, रसना सुधा सरीस ॥ हियडे विषयनी वांछना, सुपने नहिं सुजगीश ॥ ३ ॥ यौवन जलक्युं देह उपरें, उप्युं सुंदर रूप ॥ मुखपर निवसी अरुणता, उचित पयद अनूप ॥ ४ ॥ हांसूं अधरें वीशमे, लज्जा लंगर पाय ॥ सा नमया यौवन जणी, मिली जुजयुग सुविज्ञाय ॥५॥ हवे श्रोताजन सांजलो, जावी कथा विचार ॥ मन माने ते कीजीए, पण होय ते होवणहार ॥६ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ढाल तेरमी ॥

सनेही वाला लागो नेह न तोडो ॥ ए देशी ॥
हवे ते ऋषिदत्तानारी, सुणी ते नमया सुंदरी सारी रे ॥ सनेही क्यारें मलशे मुऊ जिनधर्मी ॥ करे आलोच एम गुण वरमी रे ॥स०॥ में एहवुं एम शुं कीधुं, जे जैनधर्म तजी दीधूं रे ॥ स० ॥१॥ निज कुलमारगथी ए चूकी, जिनन्नक्ति में करवी मूकी रे ॥ स० ॥ वली नाहने वचने नूली, तजी कल्पमंजरी ग्रही मूली रे ॥ स० ॥ २ ॥ वर समकित रतन में खोयुं, जुउं मिथ्या काच वलोऊं रे ॥ स० ॥ तजी अमीय महामद पीधूं, वड ठेदी ओट्टीपण कीधूं रे ॥ स० ॥ ॥ ३ ॥ उन्मूली सूरतरु ओप्यो, तिण स्थानक विष तरु रोप्यो रे ॥ स० ॥ शुन्नकुंन्नि कुंन्नस्थल बेसी, थइ चरणचारी हवे एसी रे ॥ स० ॥ ४ ॥ तजी संगति हंस सुरंग। कस्यो काक कुटिल प्रसंग रे ॥ स० ॥ नर्युं मानसरोवर ठांमी। जल छिल्लर क्रीडा मांमी रे ॥ स० ॥ ५ ॥ नलो मोतीनो हार निवारी, गले गुंजमाला दिलधारी रे ॥ स० ॥ सहि मृगमद पुंज विपोही, हवे अविकर निकरें मोही रे ॥ स० ॥ ॥ ६ ॥ वर श्रावक कुलमें आवी, तो एसी कुबुद्धि

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

कमावी रे ॥ स० ॥ घणुं धर्मथी चाली आडी, निज कुलने लाज लगाडी रे ॥ स० ॥ ७ ॥ घर समकित रत्न में आएयुं, पण स्थिर राखी नवि जाएयुं रे ॥ ॥ स० ॥ एक मिथ्यात्वी समकितधारी, ए बेहु में छे अंतर भारी रे ॥ स० ॥ ८ ॥ कीहां मंदर सरषव दाणो, कीहां जलनिधिकूप अयाणो रे ॥स०॥ किहां नृपप्रमदाने दासी, किहां ग्रामीण किहां पुरवासी रे ॥ स० ॥ ए ॥ किहां अलसिक ने अहि राजा, किहां ढक्का ने घन गाजा रे ॥ स० ॥ किहां मृगपतिने किहां शृगाल, किहां बावल सुरतरु डाल रे ॥ स० ॥ १० ॥ किहां वायस ने किहां केकी, किहां अविवेकी ने विवेकी रे ॥ स० ॥ किहां दिन करने किहां खजुउ, किहां आदर ने किहां दूउ रे॥ ॥ ११ ॥ किहां कृपण ने किहां धनदाता, किहां कष्ट अने किहां सुखशाता रे ॥ स० ॥ किहां रंक ने किहां पुरराव, किहां शोचना शुरू स्वभाव रे ॥ स० ॥ १२ ॥ किहां रजनी ने किहां दीस, किहां प्रेत ने किहां जगदीश रे ॥ स० ॥ किहां मणिरत्न ने किहां लघु चीडी, किहां कुंजर ने किहां कीडी रे ॥ स० ॥ १३ ॥ तिम जगमें समकित सरिखो,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

कोइ बीजो पदारथ न नीरख्यो रे ॥ स० ॥ में अ तिहीं कर्यो अविचार्यो, जे जैनधर्मने निवार्यो रे ॥ स० ॥ १४ ॥ मुऊ माता पिता जो ए लहेशे, तो कांइनुं कांइ कहेशे रे ॥ स० ॥ नहीं रही होय वात ते ढानी, थइ गइ होशे कांना कानी रे ॥ स० ॥ १५ ॥ सही नाखशे पितर ते बाढी, मूने पत्र सटितपरि काढीरे ॥ स० ॥ में रे कर्म कर्यां शां पहेलां रे, थइ धर्मथकी अलगी वहेला ॥ स० ॥ ॥ १६ ॥ गुणहीन कुटिल अटारी, मुऊ सरिखी नहिं कोइ नारी रे ॥ स० ॥ ए तेरमी ढाल सवाइ, कहे मोहनविजय बनाइ रे ॥ स० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

ऋषिदत्ता करकमल पर, स्थापी वर मुखचंऊ ॥ नीर टबके नेणथी, जे पुराणे संऊ ॥ १ ॥ रुऊदत्त दीठी एहवे, आव्यो नारी नजीक ॥ जांखे किम तुम जामिनी, भूतल वली हो लीक ॥ २ ॥ उंचुं जूउं अंगना, निरखो नीचूं केम ॥ दीसे छे मुख दा हडे, शशीकर उदयो जेम ॥ ३ ॥ तव बोली तरुणी तिसे, रे रे पियु प्राणेश ॥ अंगज सुंदर आपणो, पाम्यो यौवन वेश ॥ ४ ॥ मुऊ बांधवने बालिका,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नमयासुंदरी नाम ॥ तेपण थइ नवयौवना, अप्सरा जेम अभिराम ॥ ५ ॥ आपण श्रावक होत तो, तो ते नमया बाल ॥ परणावत पीयु आपणा, पुत्र तणीं ततकाल ॥ ६ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥

गाढा मारुजीहो नजक उडे नाठी चगें, अम ली पीवे कलाल रे। गाढामारु अति उन्मादी माह रो साहिबो ॥ ए देशी ॥ मोरा पियुजी आपण मि थ्यात्वी वाणीया, ए सावय लोक रे ॥ मो० ॥ लेख लख्यो ते लाजीयें, एहमां न को संदेह रे ॥ मो० ॥ ले० ॥ मोरा० ॥ पुत्रने ते पुत्रीजणी वरवानो नहिं योग रे ॥ मो० ॥ १ ॥ ते नमया आपण घरे, आवे तो पूरण भाग्य रे ॥ मो० ॥ हुं पण जाई नवि शकुं, लाधतो कोइ नथी लाग रे ॥ मो० ॥ ले० ॥ मो० ॥ २ ॥ तुमने तिहां जो मोकलुं, तो पण सरे नहिं का म रे ॥ मो० ॥ते तुमने धारे नहीं, जाणो छो गु णधाम रे ॥ मो० ॥ ले० ॥ मो० ॥ ३ ॥ तुमें छो मा णस मोटिका, तुमची केही वात रे ॥ मो० ॥ तुम गुण जाणी बालिका, किम नवि परणे जात रे ॥मो० ॥ ले० ॥ मो० ॥ ४ ॥ तुम जेहवा धूरत तणो नाणे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

केम विश्वास रे ॥ मो० ॥ शेकीने जे वावियें, लहि जें केम कण तास रे ॥ मो० ॥ ले० ॥ मो० ॥ ५ ॥ कीधा तस तुमें दोहिला, तेहनी हवे शी आशरे, दाज्यो जे पय पीवतां, ते फूंकी पीवे छास रे ॥ मो० ॥ ले० ॥ मो० ॥ ६ ॥ वचन सुणी वनिता तणां, बोल्यो रुद्रदत्त नाम रे ॥ मो० ॥ जे होणी ते हो गइ, तेह नुं हवे शुं नाम रे ॥ मो० ॥ ले० ॥ मो० ॥ ७ ॥ जे तिथि गइ ते ब्राह्मणा, वांचे नहीं नियमेव रे ॥ मो० ॥ कीधुं ते नवि शोचीए, खरुं ते होशे ते हेव रे ॥ मो० ॥ ले० ॥ मो० ॥ ८ ॥ होशे नमया बाल नो, आपणा सुतथी सबंध रे ॥ मो० ॥ तो अणचिं त्युं हो थशे, पाणिग्रहण ससंध रे ॥ मो० ॥ ले० ॥ मो० ॥ ए ॥ माणस हाथे न वातडी, हाथे विधाता नाथ रे ॥ मो० ॥ जावीथी डाह्यो नहि को, न मटे लेख लख्या जेह रे ॥ मो० ॥ ले० ॥ मो० ॥ १० ॥ जो ते नमया सुंदरी, जो नहीं परणे जात रे ॥ मो० ॥ तो शुं रहेशे कुंवारडो, एशी ठाली वात रे ॥ मो० ॥ ले० ॥ मो० ॥ ११ ॥ कहे ऋषिदत्ता नाथने, ए सहि साची वाच रे ॥ मो० ॥ दंत दे ते चाववा, दे छे ते साची वात रे ॥ मो० ॥ ले० ॥ मो० ॥११॥ एतो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत्यक्ष पारखुं, जावीनो संसार रे ॥ मो० ॥ तमे मि थ्यात्वी हुं श्राविका, केम थयां स्त्री जरतार रे ॥ मो० ॥ ले० ॥ मो० ॥ १३ ॥ जे लख्या विधियें अ क्षरा, ते कुण टाले ऊत्ति रे ॥ मो० ॥ एहवे रमतो आवीयो, पुत्र महेश्वर दत्त रे ॥ मो० ॥ ले० ॥ मो० ॥ १४ ॥ कर जोडी कहे तातने, करो छो केहो वि चार रे ॥ मो० ॥ केम सचिंती मुऊ मावडी, कहो मुऊने एणी वार रे ॥ मो० ॥ ले० ॥ मो० ॥ १५ ॥ केणे दुहवी एवडी, के केणे दीधी गाल रे ॥मो०॥ हठ करी मांड्युं पूठवा, जननी दुमनी नीहाल रे ॥ मो० ॥ ले० ॥ मो० ॥ १६ ॥ जाखशे रुद्रदत्त बोल डा, सांजल्य सुत सुकुमाल रे ॥ मो० ॥ जांखी मनो हर चौदमी, मोहनविजयें ढाल रे ॥ मो० ॥ ले० ॥ मो० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा.

॥ दोहा ॥

रे वत्स मामो ताहरो, नाम जलो सहदेव ॥ तस घर पुत्री नर्मदा, अढे सयल गुण मेव ॥ १ ॥ काने निसूणी नर्मदा, तव माताए आज ॥ तेहने तुऊ प रणाववा, वांछे छे माताज ॥ २ ॥ हुं तिहां नवि जा ई शकुं, में तिहां कैतव कीध ॥ थइ श्रावक तुऊ

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मायने, परणी जग प्रसिद्ध ॥ ३ ॥ ते तो पुत्री तुझ जणी, कहो सुत सोंपे केम ॥ तुज जननी ते शोकमें, चिंतातुर छे एम ॥ ४ ॥ पुत्र कहे हुं तिहां जइ, परणीश करी प्रपंच ॥ अम कुल एहिज रीत छे, तेह मां शी खलखंच ॥५॥ शकट जरी बहु वस्तुथी, तुरत महेश्वरदत्त ॥ चाल्यो आव्यो अनुक्रमे, वर्द्धमान पुर ऊत्त ॥ ६ ॥ मामाने दीधी खबर, जे आव्यो जा णेज ॥ ते निसुणी घर तेडियो, ईषत आणी हेज॥७॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥

आव्य धूतारा नंदनारे, तें धूत्युं गोकुल गाम ॥ ए देशी ॥ हिये आलिंगीने मल्या जी, मामो ने जाणे ज ॥ केम कृपा करी पत्तन एणे, जी जांखो आंणी हेज ॥ १ ॥ आव्य धूतारा रुडना रे, तुं कुशल कहे वात ॥ एक वेला ताहरे तातें, देखाड्या पराक्रम ॥ तुमें पण जे गेहे पधार्या, शुंजी करशो तेम ॥ २ ॥ अमे एकज वार धूताणा, हवे धूताशुं केम ॥ जाण्यो ग्रह पीडे नहिं क्यारे, छे ऊखाणो एम ॥ ३ ॥ आ०॥ पावक उपरे काठनी हांडी, चढे एकज वार, तारक बिंबे हंस जोलाणो, मोती न चूगे फेर ॥ आ०॥ ४ ॥ हमणां तो आपणे छे सगाइ, मया करो महाराज ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

एक सदन शाकिनी पण ढोडे, आणी संबंधनी ला ज ॥ आ० ॥ ५ ॥ चक्री पण तेम चक्र न मूके, बांध वताने जेम ॥ पोतानुं वली पारकुं प्रीछे, पशुउं पण ए तेम ॥ आ० ॥ ६ ॥ तुमें जे पुरमांहि वसो छो साचुं कहो ससनेह, छे सघलां ए लोक धूतारां, के तुमारुं गेह ॥ आ० ॥ जुंमाउं प्राप्ति अन्य व्यापि रे, शुं कांइ नवि थाय ॥ जे एम मूसे लोक पराया, केम ए आवे दाय ॥ आ० ॥ ॥ ७ ॥ नीचे आनने सांजली बोल्यो, मामाजी महाराज ॥ ए उवेखो कांइ अलेखे, आंगण आव्या आज ॥ आ० ॥ ॥ ए ॥ एक जूंडे शुं सघलां जूंडां, जाणो छो देव दयाल ॥ आंगुलि पांचे होवे न सरखी, कोइ मोटी कोइ बाल ॥ आ० ॥ तात सरीखो जात न जाणो, केइ धनी केइ रंक ॥ रावण मंदिर पुंजतो वायु, हनुए लीधी लंक ॥ आ० ॥ ११ ॥ वसुदेवने कंस नरेशे, राख्यो कारागार ॥ काढ्यो तिहांथी पुत्र मुकुंदे, मातुल दीध प्रहार ॥ आ० ॥ १२ ॥ न होवे पुत्रमें ताततणा गुण, मानी ल्यो निर्धार ॥ दो लीहो विषयी जन पीडे, कीधो मणि उपकार ॥ आ० ॥ १३ ॥ खारो पयोनिधि मानव जाणे, पुत्र शशी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सुधाकंद ॥ जो सघलाए होवे सरखा, तो उगे केम दिणंद ॥ आ० ॥ १४ ॥ मामा तुमथी माहरे तातें, खाट्या दीसे दोष ॥ पण तुमने थावुं घटे नारी, आणीजे नहिं रोष ॥ आ० ॥ १५ ॥ जंघ उघा डतां पोता केरी, पोताने आवे लाज ॥ हूइ ते हूइ पण हवे मोसुं, माफ करो महाराज ॥ आ० ॥ १६ ॥ तात अमारो हुंतो मिथ्यात्वी, पण तुम बेहेन प्रसं ग ॥ बीजा धंधा मूकीने हवे, जैन धरमथीरंग ॥ १७ ॥ हरख्यो मामो ते निसुणीने, उलस्यो अंगो अंग ॥ मातुल मलीयो नाणेजथी त्यारे, कोमल दीयुं आलिंग ॥ आ० ॥ १८ ॥ वस्तु वखारे आणी उ तारी, सुंदर नोजन कीध ॥ वेंची साटी तेह वसा णुं, दाम सवाया लीध ॥ आ० ॥ १९ ॥ मामाथी म ल्यो एकंगो, नाणेजो धूतधमाल ॥ मोहनविजयें रु डी नांखी, पन्नरमी ए ढाल ॥ आ० ॥२०॥ सर्व गाथा.

॥ दोहा ॥

रंज्यो तस गुण देखिने, मातुल चित्त अनंत ॥ पूछे निज नाणेजने, तेडीने एकंत ॥ १ ॥ रे वत्स तुझने जे रुचे, मागी ले तुं तेह ॥ संकोचाइश मा सुनग, ए छे ताहरुं गेह ॥ २ ॥ इम निसुणी बोले

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तुरत, हसी महेश्वरदत्त ॥ स्वामी तुम्म पसायथी, सघली बे संपत्त ॥ ३ ॥ जो करुणा पूरण करो, इछित जो द्यो मूऊ ॥ तो ए नमया सुंदरी, परणावो कहुं गूऊ ॥ ४ ॥ एहज अर्थेहुं इहां, आव्योबुं महाराज ॥ हवे जेम जाणो तेम करो, बांहि ग्रह्यानी लाज ॥ ५ ॥

॥ ढाल सोलमी ॥

गइती पीयरीएने आविती रीसाइ ॥ ए देशी ॥

वाणी सुणीने बोल्यो तिहां सहदेव, तुंतो मिथ्यात्वी अमें श्रावक सुसेव ॥ महारा नाणेजा हो राज ए हेवुं म बोल ॥ १ ॥ तुऊजनक गयो अमने नोलाय, ते उपरें पुत्री केम देवराय ॥ म० ॥ एक वेला दाऊयो डुधथी जेह, बास नणी फुकी पीये तेह ॥ मा०॥ विषधरथी जे बीहिनो कोय, दोरडीये कर घाले जोय ॥ मा० ॥ २ ॥ विलखे वदने तव कहे नाणेज, एम एकाएक केम तजो हेज ॥ म० ॥ तुम नगिनी नुं पयोधर खीर, में पीधुं थइने धीर ॥ म० ॥ ३ ॥ ते केम होइश मिछादीठ, पछें तो तुमे बो सुगुण गरिठ ॥ म० ॥ तुमे जाणो जे खरुं अहो हितवान, गज केम आवे ऊाल्यो कान ॥ म० ॥ ४ ॥ मा

तुलें जाणेजसुं चारु गांह, नर्मदासुंदरीनो कीधो वि
वाह ॥ म० ॥ परण्यो सयल मनोरथ सिद्ध, काचित
दीवसें सीखडी लीध ॥ म० ॥ ५ ॥ नर्मदासुंदरी
लेइ संग, अनुक्रमे आव्यो निजपुर खंग ॥ म० ॥
मात पिताना प्रणम्या पाय, पगे लगाडी सा हित
लाय ॥ म० ॥ ५ ॥ ऋषिदत्ताए नमया बाल, दीठी
सुपरें नयणें निहाल ॥ मा० ॥ कुशलप्रश्न पूछ्या तेणी
वार, सज थइ कह्यो सयल विचार ॥ म० ॥ ७ ॥ न
र्मदासुंदरी महेश्वरदत्त, जोगवे जोग विविध बहु
जत्त ॥ म० ॥ दंपती प्रीति परस्पर लीन, जेहवी
प्रीति होवे जल मीन ॥ म० ॥ ८ ॥ एकदा नर्मदा
विनवे शाह, स्वामी जैनधर्म वाह वाह ॥ मोरा सहे
जाहो नाह, कुमति निवार ॥ ए आंकणी ॥ जिनवर
जक्ति करे निशदीव, दीठे मूरती सुप्रसन्न होय
जीव ॥ म० ॥ ए ॥ जिननी जक्ति रावण ऐकंत, ती
र्थंकर पद आप्युं कहंत ॥ म० ॥ जिनदरिसणथी
हूये उछार, देश अनारजें आर्द्रकुमार ॥ म० ॥१०
जिनपूजा फल अधिक अनंत, शिवसुख साधन छे
एकंत ॥ म० ॥ जेणे जिनजक्ति न कीधी सार, तो
धिक तस मानव अवतार ॥ म० ॥ ११ ॥ तरण ता

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रण प्रभु कहेवाय, सेवे सुर नर जेहना पाय ॥म०॥ जिन दरिसण छे शिव सोपान, जिनथी बीजा केहो मान ॥ म० ॥ १२ ॥ कुण ब्रह्मा कुण विष्णु महेश, वीतरागथी नहिं ते विशेष ॥ म० ॥ तुलसी पीपल पूजे लोक, खोटा प्रयास नियामक फोक ॥म०॥१३ जे देवताने प्रमदाथी प्रेम, केम ते तरशे वली ता रशे केम ॥ म० ॥ क्रोधादिक वर्जित महाभाग, ते तो एक अछे वीतराग ॥ म० ॥ १४ ॥ निसुणी न र्मदासुंदरीनी वाण, कंतें जिनधर्म कीध प्रमाण ॥ म० ॥ ऋषिदत्तादिक कुटुंब सकोय, जिनभक्तिकें बेठां होय ॥ म० १५ ॥ स्थापी जिनप्रतिमा सहु गेह, पूजे प्रतिदिन आणी नेह ॥ म० ॥ टव्युं मिथ्या त्वने प्रकाश्युं समकित, श्रावक हुउं महेश्वरदत्त ॥ म० ॥ १६ ॥ करणी उत्तम करतां दिन जाय, धर्म थकी नित्य रुडुं थाय ॥ म० ॥ मोहनविजये थइ उजमाल, भांखी सुंदर शोलमी ढाल ॥ म० ॥१७॥ सर्व गाथा ॥

॥ दोहा ॥

एकदिन नमया सुंदरी, सोल सजी शणगार ॥ बेठी निज वातायने, थइ आजाआगार ॥ १ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

दर्पण लेई करकमल, निज आनन निरखंत ॥ सहि यर पण तस रूपने, पेखी अति पुलकंत ॥ २ ॥ तं बोलेकरी मुख नखुं, अति सुशोजित अंग ॥ वि भ्रम चारु विलासथी, बेठी धरी उमंग ॥ ३ ॥ ए हवे रवि मंमल गयण, मध्ये आव्यो जाम ॥ मास खमण पारण मुनि, गोचरी पहोतो ताम ॥ ४ ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥

अरणिक मुनिवर चाल्या गोचरी ॥ ए देशी ॥ पावक जेहवो रे आतप परजले, पृहवी देवाय न पायोरे ॥ बादरकायारे तापें पराजव्यो, ठायाए ते जायो रे ॥ १ ॥ गति कोइ अजिनवी, जगमें क र्मनी ॥ सवि चितहमें जाणेरे ॥ विणजोगवियां रे बूटे नहीं, कवियणे एम वखाणे रे ॥ ग० ॥ २ ॥ तेणे अवसरें पुरमें परवर्या, व्रतधर सुंदर एह रे ॥ खूला पयतल ऊन्ही वालुका, तो पण निश्चल नेह रे ॥ ग० ॥ ३ ॥ नग्न शकटपरे अस्थि खडहहे, काम उदर दृग नीचे रे ॥ जयणायें करी हलूए पय गवे, प रसेवे नूंइ सिंचे रे ॥ ग० ॥ ४ ॥ धन्य धन्य एहवारे जगमें मुनिवर, जे परने हित वांछे रे, निज काया ने रे जाणे कारिमी, तप तापें तनु तीछे रे ॥ ग० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ५ ॥ जिणे अवसर सुखीया जीवडा, बेसी शीतल ठामे रे ॥ तिणे अवसरें विचरे संयमि, तो न्यायें शिव पामे रे ॥ ग० ॥ ६ ॥ ते मुनि घर घर जिक्षा कारणे, खप करे तप जप पूरो रे ॥ गुणमणि रोह ण साधु शिरोमणि, नहि कोइ वाते अधूरोरे ॥ ग० ॥ ७ ॥ दुःसह तडके रे साधु पराजव्यो, निर्बल थके श्रम कीधो रे ॥ नर्मदामंदिर गोखने ठायडे, विसामो क्षण लीधो रे ॥ ग० ॥ ८ ॥ नमयासुंदरी साधु अजाणती, नाख्युं मूखथकी पीक रे ॥ लाग्यो ततक्षण मुनिने नालंतरें, तिलक परे थयुं ठीक रे ॥ ग० ॥ ए ॥ लागत वांता रे मुनि तिहां चम कियो, शुं आकस्मिक एह रे ॥ केणे नाख्युं रे मुज शिर उपरे, निरखे ऊरध तेह रे ॥ ग० ॥ १० ॥ दीठी गोखे रे नमयासुंदरी, थयो आक्रोश मुनीशोरे ॥ रे रे अधमे रे ए ते शुं कर्युं, अशुचि कर्युं ए शीषो रे ॥ ग० ॥ ११ ॥ ए किहां पातक बूटिश बापडी, ए शो गारव तूऊरे, न करे कोइ मुनिने आशातना, तेह करी ते अबूऊरे ॥ ग० ॥ १२ ॥ ताहरी उपर दीसे कंतनुं, मान तेणे घणुं माची रे ॥ तो तुं होजे रे नाथ वियोगिनी, वाच थई अम साचीरे ॥ ग० ॥ १३ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मुनिनी वाणी रे सुणी जणकारे, गोखतले तव जोयुं रे ॥ तव तिहां दीठो रे मुनि कोपांतरु, शाप दीधं तो पलोयुं रे ॥ ग० ॥ १४ ॥ भूंडुं कीधुं रे में मुनि दुहव्यो, कीधी अवज्ञा भारीरे ॥ फल कडवां रे जोगवतां हूइ, हुं निगुणी कोइ नारी रे ॥ ग० ॥ १५ ॥ नाह वियोगणी होजो जे कह्युं,ते केम फरशे वाचारे ॥ वाचा खोटी खोटा जनतणी, ए तो मुनिजन साचा रे ॥ग०॥१६॥ जइ खमावुं रे मुझ अपराधने, विनवुं विनति विशाल रे ॥ मोहनविजये रे जांखी हेजथी, सुंदर सत्तरमी ढाल रे॥ग०॥१७॥सर्व गाथा

॥ दोहा ॥

मेडीथी जे ऊतरी, आवी साधु समीप ॥ विधिशुं वांदीने कहे, अहो जवसायर द्वीप ॥ १ ॥ हुं जिन धर्मी श्राविका, मुनि उपरे अति प्रेम ॥ रोष तजो मुनिरायजी, शापो ठो मुज केम ॥ २ ॥ जीहांथी वहार जोइए, तिहांथी आवे धाड्य ॥ दीजे दोष ते केहने, जो फल खाशे वाड्य ॥ ३ ॥ ए संसार असारमें, ग्रहीए जस आधार ॥ ते जो विरूअं वांछशे, किम ऊगे दिनकार ॥ ४ ॥ हुं तमथी जेहवी करुं,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

अण समजे अविचार ॥ पाछुं तेमहीज तुम्हे करो, तो शुं अंतरचार ॥ ५ ॥

॥ ढाल अढारमी ॥

हांजी बारा बजारमां, हांजी मुने जेहरु दे ब लाय, तोरे संग चालुं रे, लालमल जोगीया ॥ ए देशी ॥ हांजी हूं निर्भागिणी मानवी, हांजी तमें छो गिरुआ साध,तोरी बलिहारी रे मुनिवर माहरा ॥ हांजी तुमने में कीधी आशातना, हांजी खमजो ते निराबाध ॥ तो० ॥ १ ॥ हांजी तुमे छो करुणा सायरु, हांजी कहुं छुं गोद बिछाय, ॥ तो० ॥ हांजी शाप न दीजें मुजने, हांजी मुजथी केम सहाय ॥ तो० ॥ २ ॥ शत्रु प्रत्ये कोपे नहिं, हांजी बांधवथी न मुजाय ॥ हांजी शाप न दे तनु पीडतां, हांजी मुनिवर तेह कहाय ॥ तो० ॥ ३ ॥ हांजी चंदनने जो पीडीयें, तो दीये सामी सुवास ॥ तो० ॥ हांजी यंत्रमें पीलीयें शेलडी, हांजी तो पण द्ये रस खास ॥ तो० ॥ ४ ॥ हांजी रंभा खंभ जो छेदीयें, हांजी तो पण फल दे नूरि, ॥ तो० ॥ ए गीरुआइ साधुनी हांजी शास्त्रमें कही ससनूर ॥ तो० ॥ ५ ॥ हांजी लागे नहीं नाखी थकी, सूरज साहामी खेह ॥ तो०

हांजी शी कटकी कीडी परें, हांजी राखो धर्मसने ह ॥ तो० ॥ ६ ॥ हांजी में तुमने वेद्या नहीं, हांजी लागो हश्ये पीक ॥ तो० ॥ हांजी माहरा अवगुण साहमुं, हांजी न जूउं समता नीक ॥ तो० ॥ ७ ॥ हांजी वचन सूणीने एहवां, हांजी बोल्यो मुनिवर तेह ॥ तो० ॥ हांजी रे वत्से रे भावुके, हांजी सां भल्य वाणी एह ॥ तो० ॥ ८ ॥ हांजी साधु न दीये पीडियो, हांजी कोईने दुःसह शाप ॥ तो० ॥ हांजी तेहना जो मुखथी नीकले, हांजी साधुने नहीं तोय पाप ॥ तो० ॥ ए ॥ हांजी जे में भाख्युं विजो गणी, हांजी तुमने आणी रोष ॥ तो० ॥ हांजी ते तुऊ पूरव जन्मना, हांजी दीसे सबला दोष ॥तो० ॥ १० ॥ हांजी ताहरी भावीयें मुऊने, हांजी एह वो बोलाव्यो बोल ॥ तो० ॥ हांजी नहिं तो माहरा वक्रथी, हांजी नीसरे केम अतोल ॥ तो० ॥ ११ ॥ हांजी तेमाटे तुं ताहरा, हांजी भोगव्य पूरव कर्म ॥तो०॥ हांजी भोगव्य तुं ताहरां कर्म्यां,हांजी कृण एक कुण दीये शर्म ॥ तो० ॥ १२ ॥ हांजी भोग वीश तुं ताहरूं कर्युं, हांजी तेहमां कां दिलगीर ॥ तो० ॥ हांजी भोगवाये कृत्य पारकूं, हांजी तो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

हजी तेहनी पीर ॥ तो० ॥ १३ ॥ हांजी लणीयें जेहवुं वाविए, हांजी तेहनो किहो विचार ॥ तो०॥ हांजी बूटे नहीं विण जोगव्यां, हांजी जिन कह्युं, सूत्र मझार ॥ तो० ॥ १४ ॥ हांजी धरियें धीरज चित्तमें, हांजी होशे ते परमानंद ॥ तो० ॥ हांजी एम कहीने तस गेहथी, हांजी विचर्या अन्यत्र मुनींद्र ॥ तो० ॥ १५ ॥ हांजी मुनिना पयरुह अनुसरी, हांजी नमया आवी गेह ॥ तो० ॥ हांजी ढाल कही ए अढारमी, हांजी मोहनविजयें एह१६

॥ दोहा ॥

एहवे नमया सुंदरी, चिंते चित्त मझार, हवे शुं थाशें आगले, हे हे सरजनहार ॥ १ ॥ में एहवुं शुं पूरवें, कीधुं कर्म अनंत ॥ जे अणचिंत्यां मूजने, शापी गयो मुनि संत ॥ २ ॥ जे जल जलणने उप शमे, ते जल दे गयो दाह॥ कोपे नहीं क्यारें मुनि, ते कोप्यो निर्वाह ॥ ३ ॥ कां बेठी हती गोखडे,कां चांव्यां तंबोल, जे अनुकूल सहुतणो, ते मुनि थयो प्रतिकूल ॥ ४ ॥ कीस्युं ललाटे लिख्युं हशे, आगल जावी जाव ॥ जे जिन जाणे ते खरुं, न मटे सहज स्वजाव (पाठांतर, कहेवा हवे विलाव) ॥ ५ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ढाल उंगणीशमी ॥

क्षीनो रे मन मोहन जिनसें ॥ क्षी० ॥ ए देशी ॥ जाणे रे कोइ मननी जाणे ॥ जा० ॥ हुं बेठी हती गोखें सुखमें, आव्या किहांथी ए मुनि टाणे ॥ जा० ॥ केणी सहीयें पण न जणाव्युं, जे मुनि उन्ना बे एण ठाणे ॥ जा० ॥ १ ॥ अमें तो न जाण्युं सहीउं नांखे, तें न जाण्युं तो कुण जाणे ॥ जा० ॥ कीधो तें अपराध सखीरी, नाहक नेलां शुं अमने ताणे ॥ जा० ॥ २ ॥ एहवां सजनीनां वयण सुणीने, बोली नमया आली उखाणे ॥ जा० ॥ क्यां तमने बहेनी उं कहुं बुं, बींकतां दंमें कां अप्रमाणें ॥ जा० ॥ ३ ॥ दाऊया उपर खार न दीयो, आवो रीसाउं मां बेसो बिठाणे ॥ जा० ॥ जोगवी लेइश कां तुमे बीहो, मा हरा लखीया लेख प्रमाणे ॥ जा० ॥ ४ ॥ एम कहे तां नयणेथी बूटे, आंसुधारा मेघ समाणे ॥ जा० ॥ जेम जेम मुनिनां वयण संन्नारे, तेम तेम दुःखडुं हियडामां आणे ॥ जा० ॥ ५ ॥ लोटे धरणी अब ला बाली, देइ सजनी बांह सराणे ॥ जा० ॥ शाप संन्नारे आकुल थाइ, नाके जिण विध आवे दाणे ॥ जा० ॥ ६ ॥ ठाती बले ने ताती होवे, जेम कोइ

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तीलमें घाती घाणे ॥ जा० ॥ म म कर एवडुं सही उं नांखे, लाज वडेरानी कां नाणे ॥ जा० ॥ ७ ॥ ता हरुं दुःख अमें सही नथी शकतां, आलि तुं अमने जे आवे लाणे ॥ जा० ॥ नावी ताहरी नली छे व हेनी, सुख छे वली सुख होशे विहाणे ॥ जा० ॥ ८ ॥ आव्यो एहवे महेश्वर पीयुडो, नारी दुःखणी देखी पूछे ॥ जा० ॥ दयिता दुःखिणी कांतुं दीसे, कहे मुऊने तुऊ दुःखडुं शुं छे ॥ जा० ॥ ए ॥ वात कही निज पीयुडा आगे, जाण्युं दुःखनुं कारण ना हें ॥ जा० ॥ दयिताने तव दीधो दिलासो, तेडी आणी मंदिर मांहे ॥ जा० ॥ १० ॥ ते दिनथी आ रंनी नमया, पालंती जिननी आणा रुडे ॥ जा० ॥ महासती सुखमें निगमे दीहा, पूरव कर्म कर्यां ते सूडे ॥ जा० ॥११॥ पोषे पात्र संतोषे मनमें, अवि नय करतां हैयुं धूजे ॥ जा० ॥ नव नव संचित पा प निवारे, एहवा देव नणी नित पूजे ॥जा०॥ १२ ॥ पुण्य करे जिन पंथे चाले, तेहथी नव दुःख जाये विलयें ॥ जा० ॥ सुंदर उंगणीशमी ए नांखी, श्रोता सुणजो माहेनविजयें ॥ जा० ॥ १३ ॥ सर्व गाथा ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ दोहा ॥

एक दिन नमया नारीने, कहे महेश्वरदत्त ॥ पर द्वीपें जाशुं प्रिये, हवे धन हेतें ऊत्त ॥ १ ॥ तिहां जइ द्रव्य कमावशुं, आवशुं तुरत गेह ॥ साचवजो तुमें इहां रही, जैन धर्म ससनेह ॥ २ ॥ कोइ वातें मनथी तुमें, दुःखी न होजो नारि ॥ मिलशुं तुम ने हेज घणी, जो करशे किरतार ॥ ३ ॥ परदेशें ज इए अगों, करशुं तिहां व्यापार ॥ तिहांथी बहु धन आणशुं, राखशुं इहां व्यवहार ॥ ४ ॥ ते माटे तरु णी तुमें, हसी दीयो आदेश ॥ जेम प्रवहण सज कीजीयें, लेइयें वस्तु अशेष ॥ ५ ॥ कंत वचन नि सुणी करी, बोली नमया बाल ॥ केम परदेशे पधा रशो, अहो नाह सुविशाल ॥ ६ ॥

॥ ढाल वीशमी ॥

अम्मां मोरी अम्मां हे, अम्मां मोरी ऊीलण गइती तलाव हे ॥ हे मारुंडे मेंवासी रूँरा ताणीया हे ॥ ए देशी ॥ पियुडा मोरा पियुडा रे, पीयुडा मो रा जो तुमें चालो परदेश हे ॥ हे मुजने लावो केहने उलवे हे ॥ पि० ॥ पि० ॥ काया जिहां तिहां बांह हे, हे तेम प्यारो ने प्यारी जोगवे हे ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पि० ॥ पि० ॥ १ ॥ हुं पण आवीश साथ हे, हे
वाटेने करेशुं वाला चाकरी ॥ पि० ॥ पि० ॥ पि० ॥
तुम विण केम गमे दीह हे, हे माछलडी होवी
ज्युं जल विण आतूर हे ॥ पि० ॥ पि० ॥ २ ॥ घडी
छ मास थाय जेह हे, हे नाह रहो जो अलगा न
यनथी हे ॥ पि० ॥ पि० ॥ तुम विरह न सहाय
हे, हे केतुं ञांखुं करीने वेणथी हे ॥ पि० ॥ पि०॥
॥ ३ ॥ साधूए कह्युं छे जे मुजने एम हे, हे थश्शे
वत्से कंतवियोगिणी ॥ पि० ॥ पि० ॥ तेहवा कथ
नथी केम हे, हे अलगी रहुं तमने अवगुणी हे ॥
पि० ॥ पि० ॥ ४ ॥ मुऊने तुमचो आधार हे, हे
विगर आधारे इहां केम रहुं ॥ पि० ॥ पि० ॥ देखी
पेखीने काय हे, हे विरह वन्हिथी कहोने कां द
हुं ॥ पि० ॥ पि० ॥ ५ ॥ जो नहीं तेडो साथ हे, हे
कहेशे नहीं कोइ तुमने रूअडा॥पि०॥पि०॥नारी न रा
खवी दूर हे, हेजे कहीए छे पंथी सूअडा हे ॥पि०॥पि०॥
मनडुं लेइ जशो संग हे, पींजरीउं ने रहेशे वाल
मजी इहां ॥ पि० ॥ पि० ॥ रढ करी रही सहु जोर
हे, हे तो तुमें मूकीने जाशो किहां ॥ पि० ॥ पि०
॥ ७ ॥ नाह कहे अहो नारी हे, हे काम दोहेलुं

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

अलगा पंथनुं ॥ पि० ॥ पि० ॥ कंते कही घणी वात हे, हे तोही न माने कांई अंगना ॥ पि० ॥ पि० ॥ ॥ ८ ॥ वनितानो आग्रह जाणी हे, हे संगें तेड्यानी कंते हा भणी ॥ पि० ॥ पि० ॥ नर्मदासुंदरी ताम हे, हे उल्लसित हुइ मनमांहे घणी ॥ पि० ॥ पि० ॥ ॥ ए ॥ तत्क्षण महेश्वरदत्तें हे, भरीने करीयाणुं प्रव हण सज कर्यां ॥ पि० ॥ पि ० ॥ पडहो वजायो पुर मांहि हे, हे वचन सुरंगां ए एहवां उचर्यां हे ॥ पि० ॥ पि० ॥ १०॥ शा महेश्वरदत्त हे, हे यवनद्वीपें काले चालशे हे ॥ पि० ॥ पि० ॥ जे कोइ आवणहार हे, हे होय ते वेगा होजो अनालसें, ॥ पि० पि० ॥ ॥ ११ ॥ पडह सुणीने लोक हे, हे यवनद्वीपें जावा संमुह्यां ॥ हूवो जाम प्रभात हे, हे लोक सायरनो तट घेरी रह्यां ॥ पि० पि० ॥ १२ ॥ एहवे महे श्वरदत्त हे, हे जिनवरपूजा करे कुसुम पांखडी ॥ सुंदर भोजन कीध हे, हे मात पितानी लेइ शीखडी ॥ पि० ॥ पि० ॥ १३ ॥ नर्मदासुंदरी साथ हे, हे महेश्वरदत्त आव्यो प्रवहण ठे जिहां ॥ पि० ॥ पि०॥ साथें सयण अनेक हे, हे आव्या संप्रेषणे नेहव शे तिहां ॥ पि०॥ पि० ॥ १४ ॥ पुरजन कहे मुख एम

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

हे, हे होजो मंगल माल हे, ॥ पि० पि० ॥ मोहन विजयें एम हे, हे पन्नणी सलुणी वीशमीढाल हे ॥ पि० ॥ पि० ॥ १५ ॥ सर्वगाथा ॥

॥ दोहा ॥

शीख लही साजन तणी, परिकर रूडा प्रसंग ॥ चाल्यो जलवट ऊपरे, महेश्वरदत्त सुरंग ॥ १ ॥ यान हकार्‍यां जलधिमां, खेंच्या सढ ने दोर ॥ मार्गे मालमी मालम करे, कूवा थंन्ना जोर ॥ २ ॥ परठ्यां पोत पयोधिमें, गति अति चंचल धीर ॥ ताण्यो जेम कोदंडथी, बूटे जेहवो तीर ॥ ३ ॥ नीरमय दीसे धरा, ऊपर तो आकाश ॥ गिरिवर तरुवर नगरवर, ते तो प्रवहण वास ॥ ४ ॥ अहो उप्पर कारणें, जल मध्ये पविसंत ॥ पारत्रिलोकी पतिवसु, पण न्नय नवि निवहंत ॥ ५ ॥ पेट अधम जगमां प्रसिद्ध, पेट वडो पतहीन ॥ जल थल गिरि उल्लंघवे, मुख जंपावे दीन ॥ ६ ॥

॥ ढाल एकवीशमी ॥

दिल लगा रे बादल वरणी ॥ ए देशी ॥ चाल्यां रे वाहण वाये हंकार्‍यां, दोडे जेम मन चाले ॥ हवे जोजोरे कौतुक थाशे, सांन्नलतां शुं जाशे ॥ [illegible] ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

कंत महेश्वर नमया नारी, बेठां गोंखे जे महाले ॥ ह० ॥ १ ॥ आसो मासनी चांदनी ठटकी, आ व्यो चंद्र मथाले ॥ ह० ॥ दंपती वाहणमां मूखडुं काढी, जलचर खेल निहाले ॥ ह० ॥ २ ॥ वाय झको ले जलचर उछले, नौतन नौतन देखे ॥ ह० ॥ गाजे गुहिरे सादे दरीयो, घोष जलद किह लेखे ॥ ह० ॥ ३ ॥ उज्वल रजनी ने, उज्ज्वल चंदो, उज्ज्वल जलनिधि वेला ॥ ह० ॥ उज्ज्वल जलचर दंपती उ ज्ज्वल, सयल उज्ज्वल थयां नेलां ॥ ह० ॥ ४ ॥ दंपती कौतुक रसथी लुब्धां, बेठां ज्युं अजिनव वाडी ह० ॥ एहवे कोइएक पुरुषें वाहण, मांहे वीण व जाडी ॥ ह० ॥ ५ ॥ वाय राग केदारो मारु, पर जीउं मधुरे टीपे ॥ ह० ॥ जाणे बिंदु सुधाना बूटे, एक एक टीपे टीपे ॥ ह० ॥ ६ ॥ कोइक तेणे गति अजिनवी वाइ, नारदथी पण रूडी ॥ ह० ॥ मानव मूर्छागत परें हुआं, एहमां वात न कूडी ॥ ह० ॥७॥ जेहवी वीण वजाडी तेहवे, गाये उंचे सादें॥ ह० ॥ वाहणमांहे जे रसिया वालम, मोह्या तेहने नादें॥ ह० ॥ ८ ॥ रुपें नादें कुण नवि मोहे, विषधर ते प ण डोले ॥ ह० ॥ नादें तृणचर जेह छे मृगलां, आपे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

प्राण अमोलें ॥ ह० ॥ ए ॥ नादें देव विमानने स्थंने, नाद अनोपम दीसे, वेधकनुं मन नादें वे धाये, नादे तन मन हीसे ॥ ह० ॥१०॥ जाणपणुं ज गमां ठे दोहिलुं विरलो जाणे कोइ ॥ह०॥ पण तस नादे प्रवहण लोको, चित्रपरें रह्या होइ ॥ ह०॥११॥ नाद ते पंचमो वेदज कहीये, जे जाणे ते जाणे ॥ ह० ॥ बोघां नादनी गति शुं बूझे, फोकट ते हठ ताणे ॥ ह० ॥ १२ ॥ तेहनां गीततणो जणकारो, पडीउं नमया कानें, ॥ ह० ॥ रंजी मनमें तस प्रीछी, मोही तेहने तानें ॥ ह० ॥ १३ ॥ नाह जणी कहे जलचर क्रीडा, जावा द्यो कहुं मानो, ॥ ह० ॥ सां जलो वीण तणा जणकारा, कोइक वाये ठे ठानो ॥ ह० ॥ १४ ॥ कोइक चतुर शिरोमणी दीसे, वाह वा रूडुं वाये, ॥ह०॥ आपणने तो वगर पैसे, सांज लतां शुं जाये ॥ ह० ॥ १५ ॥ कंत प्रियाना कथनथी निसुणे, राग जणी एक तानें, ह० ॥ घूम्यो रातें जेम कोई घूमे, घायल शरने लागे, ॥ ह० ॥ १६ ॥ दाखवशे हवे नमयासुंदरी, नाह जणी चतुराई ॥ह०॥ एकवीशमी ढाल जीलंती, मोहनविजयें गाई ॥ ह० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा.

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ दोहा ॥

नमया लक्षण दक्षिणा, जाणे भेद अनंत ॥ चिंते मुझचतुराइयें करुं सहेजो कंत ॥ १ ॥ कहे नमया निज नाहने, जे ए गावे गीत ॥ विण दीठे कहो तो कहुं, रूप रंग गति रीत ॥ २ ॥ कंत कहे कामिनी कहो, कांइ करो ठो जोर ॥ चतुराई जे अंगमें, ते दाखो एकवार ॥३॥ बोली नमयासुंदरी, रे पीयु गाय क एह ॥ श्यामरंग शोभा सुभग, कुब्जरूप छे देह ॥४॥ स्थूल हस्त गुंचे मशक, रक्त नेत्र ससनेह ॥ त रुण वर्ष द्वात्रिंशनो, चिन्ह सयल छे एह ॥५॥ वचन सुणी वनिता तणां, ताम महेश्वरदत्त ॥ चित्त थकी चिंते इस्युं, थइ तरुणीथी विरत्त ॥ ६ ॥

॥ ढाल बावीशमी ॥

चंदन राखो छोजी राज, मीठडा मेवा छो ॥ ए देशी ॥ वाणी सुणी नमया तणीरे, शोचे महेश्वर दत्त ॥ सहितो ए गायकथकी, कांइ नारी छे संसक्त ॥१॥ माहरी मानिनी हो राज, सही तो धूतारी छे ॥ चंदन शी बोले छे राज पण विष तोलें छे, एहनी कहाणी छे राज, ते हवे जाणी छे ॥ ए आंकणी ॥ नहिं तो केम जाणे त्रिया रे, रुप रंगनी रीत ॥ ल

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

लना बुध्धाणी खरी, कांय करी कुब्जथी प्रीत ॥ मा० ॥ २ ॥ एहने तो हुं जाणतो रे, सुकुलीणी शिरदार ॥ पण ए कुलटा निवडी कांइ, निःस्नेही अवतार ॥ मा० ॥ ३ ॥ महासती करी जाणतो रे, पण फेरव्युं सत एह ॥ जेम वखाणी खीचडी कांइ, दांते वलगी तेह ॥ मा० ॥ ४ ॥ थई गोधूम अम हियडे रे, पेठी प्रमदा सार ॥ पण मांडो थइ नि सरी कांइ, ऐ ऐ सर्जनहार ॥ मा० ॥ ५ ॥ जो जो एहनी कपटता रे, तृणसम गणीयो मुझ ॥ चोरी दृष्टि सहू तणी, कांइ गायकथी करी गुझ्झ ॥ मा० ॥ ६ ॥ सगुणी पांखें नीगुणी नली रे, राखी हुती निजहित लाय ॥ लाख जतन करी राखीए, काइ जाति स्वभा व न जाय, मा० ॥ ७ ॥ धोइए दूधें कागडीरे, पण हंसली नवि थाय ॥ कुंदन खोले रासभी कांई, न होय पयल गाय ॥ मा० ॥ ८ ॥ बेसाडीए सेजे शू नीरे, नहिं सुरकन्या होय ॥ मीठी न होये लींबडी कांइ, साकर सींचे कोय ॥ मा० ॥ ए ॥ ए नारीने शुं करुं रे, नाखुं पयोधिमांहि ॥ के करुं चूर्ण ख डगथी कांइ, के परिहरियें क्यांहि ॥ मा० ॥ १० ॥ तेह सोनुं शुं कीजीए रे, जेहथी त्रूटें कान ॥ पेटें कांच

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ननी बुरी कांइ, धोंचे कोण नादान ॥ मा० ॥ ११ ॥ नारीने न जणावीयुं रे, निज हियडानुं अहेज ॥ प्रीत थयो गायन मिल्युं कांइ, दीतुं चिन्ह समेत ॥मा०॥ ॥१२॥ मनमें सही निश्चे थयुं रे, ए कुलटा शिरताज ॥ पण एहने न जणाववुं कांइ, मुष्टि जली वत्सराज, मा० ॥ १३ ॥ एहवे कूवा थंजथी रे, बोल्यो मालिम ताम ॥ राखो रे नियामको कांइ, प्रवहण एणे ठाम मा० ॥ १४ ॥ नांगर नाख्युं नीरमें रे, वाहण राख्यां द्वीप ॥ सढ दोरा संकेलजो कांई, आव्यो राक्षस द्वीप ॥ मा० ॥ १५ ॥ मीठलजल जरो प्रवहणे रे, सहू को थाउं सज्ज ॥ वचन सुणीनें ढीपीया कांई, पहोता महादेधि मज्झ ॥ मा० ॥ १६ ॥ तेहीज द्वीप तणे तटें रे, आव्यां बाल गोपाल ॥ मोहनविजयें निर्ममी कांइ, ए बावीशमी ढाल ॥ मा० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा.

॥ दोहा ॥

राक्षस द्वीपतणे तटे, उत्तरीया सवि लोक ॥ ज लईंधणने कारणें, बूटा थोका थोक ॥ १ ॥ प्रवहण मांहे ततक्षण, जरीयुं निर्मल नीर ॥ समिधादिक पण संग्रह्यां, सज्ज थया वर वीर ॥ २ ॥ जोजनहे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तें परवस्या, लोक सयण तिण गाम ॥ एहवे छल लाध्यो जलो, महेश्वरदत्तने ताम ॥ ३ ॥ कहे न मयाने हे प्रिये, जइयें वनह मझार ॥ तुरत फरी ने आवशुं, होशे जमण तैयार ॥ ४ ॥ देखशुं कि हां ए द्वीपने, फरी फरी नयणे तेह, जीव्याथी जो युं जलूं, मान वचन धरी नेह ॥ ५ ॥ अति जोली नमया सती, कपट न जाणे तास ॥ साथें थइ प्राणेशने, आवी वनह निवास ॥ ६ ॥

॥ ढाल त्रेवीशमी ॥

देशी बिंदलीनी ॥ करथी कर ग्रही आडे, निज त्रियने वनह देखाडे हो ॥ कंत महाकपटी ॥ रे प्रमदा तुमें देखो, ए सायरतट सुविशेषो हो ॥ कं० ॥ १ ॥ छे तरु केहवा ऊंचा, जेम वासगमणीना ए पेखो पहोंचा हो ॥ कं० ॥ तरुथी वेलि वीटाणी, जेम अहिंसाधर्मथी जाणी हो ॥ कं० ॥ २ ॥ ए सुरतरु मन मोहे, जगतीशिरछत्र ज्युं सोहे हो ॥ कं० ॥ केहवुं छे वन ए दीठुं, मुजने लाग्युं मीठुं हो ॥ कं० ॥ ३ ॥ चालो तमें आगल नारी, तीहां होशे कौतुक जारी ॥ कं० ॥ दंपती आघां चाल्यां, वर कदली वनमें माल्यां हो ॥ कं० ॥ ४ ॥ रंजा पवनें [illegible]

तस दीरघदल बहु डोले हो ॥ कं० ॥ लुंबी झूंबी रहीयां, फल मोटां रस महमहियां हो ॥ कं० ॥५॥ महोटुं सर जले जे नरीयुं, जेम नानकडो ए दरीयो ॥ कं० ॥ शीतल नूमी जे सूहावे, पंखीपण रमवा आवे हो ॥ कं० ॥ ६ ॥ ते सरपाले बेठां, पियु प्र मदा बीहु एकेठां हो ॥ क० ॥ पीयुडे मांडी माया, पण कांइए न जाणे जाया हो ॥ कं० ॥ ७ ॥ गूढ कपट कुण जाणे, ब्रह्मापण नविहुं पीठाणे हो ॥ कं० ॥ पढें प्रमदा पन्नणे, पियु पोढो जागीस हवे खांणे हो ॥ कं० ॥ ८ ॥ कहे पीयु पोढो नारी, इहां बेठो बुं धीरज धारी हो ॥ कं० ॥ पोढी नाह नरो सें, तेणे सुखनिद्रा ग्रही होंशे हो ॥ कं० ॥ ए ॥ व निता सूती जाणी, चिंते पियु कपटनो खाणी हो ॥ कं० ॥ जो हणुं एहनें तेगें, तो पातक लागशे वेगें हो ॥ कं० ॥ १० ॥ एह सूती ठे नारी, जो मुंकुं तो होये सारी हो ॥ कं० ॥ एहने इहां परिहरवी, इहां ढील न कांइ करवी हो ॥ कं० ॥ ११ ॥ कर्म कहो केम चूके, जुउं प्रमदा प्रीतम मूके हो ॥ कं० ॥ नु जंगनी भ्रांते बाला, जूउं नाह तजे सुकुमाला हो ॥ कं० ॥ १२ ॥ वनिता मूकी वनमें, कांइ करुणा ना

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

वी मनमें हो ॥ कं० ॥ दोड्यो बांधी मूठी, फरी न करे नजर अपूठी हो ॥ कं० ॥ १३ ॥ नारी उवेखी नाखी, जेम घृतमांथी मांखी हो ॥ कं० ॥ प्रवहणे दोड्यो आवे, जूउ केहवी बुद्धि उपावे हो ॥ कं० ॥ १४ ॥ बोल्यो श्वासे नराणो, हलफलतो मांड खेदा णो हो ॥ कं० ॥ रे लोको सज थाउ, एणे प्रवहणे दोडी जाउ हो ॥ कं० ॥ १५ ॥ ताणो पट शुं विचा रो, जलनिधिमां पोत हंकारो हो ॥ कं० ॥ नोज न वहाणमां करशुं, पण नद्द इहांथकी वलशुं हो ॥ कं० ॥ १६ ॥ ढील करो ठो कांइ, सज थाउ वहे ला नाइ हो ॥ कं० ॥ एह त्रेवीशमी ढाल, कही मोहनविजयें रसाल हो ॥ कं० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा.

॥ दोहा ॥

पडतो ध्रूजंतो थको, कहे महेश्वरदत्त ॥ जूउ ए आवे अठे, रजनीचर केइ ऊत्त ॥ १ ॥ दंतुर वली दीरघ अधर, कर आयुध विकराल ॥ केश विलूटे कांबरे, उ आवे ऊंघाल ॥ २ ॥ उ ऊडे रज अंबरे, चरणे धमके नूर ॥ आवे ठे उतावलो, जेम पयो निधि पूर ॥ ३ ॥ शुं बल कीजें एहथी, एह पुलिंद प्रचंरू ॥ मुऊ वनिताने पापीए, कीधी खंडो खंड ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ४ ॥ नाठो आव्यो तुम कन्हे, कहुं बुं न करो वा
र ॥ प्रवहणमां बेसी तुरत, जो वंछो हित सार
॥५॥ बीहिना लोक इस्युं सुणी,बेठा प्रवहणमांहि ॥
कपटी पण बेठो तुरत, सयण वच्चे सोत्साहि ॥ ६ ॥
वाहण चाल्यां जलधिमां, मूंक्यो तेहज द्वीप ॥ ज
न वनिता दुःख वारवा, आव्या तास समीप ॥७॥

॥ ढाल चोवीशमी ॥

उग्रसेन नृपनी तनुजाशुं रंगें राज, तथा नरवर
साजी॥एदेशी॥ते महेश्वरदत्त धूतारो राज,मांड्या
फंद प्रचारारे॥किहां गइ सा नारी रे॥ ए आंकणी
॥ सयण आगल ते रुदन करतो, राज छोडे आंसु
धारा रे ॥ कि० ॥ १ ॥ कूटे छाती धरणीए लोटे रा
ज, मूखथी कहे प्रिया प्रिया रे ॥ कि० ॥ लीधी व
निता कांइ जदाली राज, ए शुं कर्युं दइया रे ॥
कि० ॥ २ ॥ हमणां हुंती मुख आगल रुडी राज,
एम ए किहां गइ नाशी ॥ कि० ॥ हमणां कां नथी
बोलती मोसुं राज, थइ कां बेठी मेवासी रे ॥ कि०
॥ ३ ॥ तें शुं माहरो मोह न आण्यो राज, एका ए
क गइ छोडी रे ॥ कि० ॥ हियडामां तुं खटकीश
कांते राज, जिम रही जाली ठंडी रे ॥ कि० ॥४॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

एम दुःख कारीमुं मांमी बेठो राज, लोक सयल प्रति बूझे रे ॥ कि० ॥ शुं दुःख एवडुं मनमां व होठो राज, माह्या आगम सुझे रे ॥ कि० ॥ ५ ॥ जेह गयो ते पाठो नावे, तो दुःख केहनुं कीजें रे ॥ कि० ॥ दैव थकी बल नांही कोश्नुं, होवे तो व हेंची लीजें रे ॥ कि० ॥ ६ ॥ जिन चक्री हरिबल बलिराजा, केश गया एणी वाटें रे ॥ कि० ॥ ते तु म दुखडुं कांश न जाणे, तो शुं होवे उचाटे रे ॥ कि० ॥ ७ ॥ जाणता हूंता ज्ञान लहंता, एम अ जाण कां हूउं रे ॥ कि० ॥ मानो वचन अम फि कर निवारो, लेश जल मूखडुं धूउं रे ॥ कि० ॥ ८ ॥ शीष सलामत पाघ घणेरी, जाणता नथी ए उ खाणो रे ॥ कि० ॥ वचन सुणीने निर्दयी राज, हुं उं सहेज सपराणो रे ॥ कि० ॥ ए ॥ कीधुं जोज न मनमांहे सुहातुं राज, मूकी नारी विसारी रे ॥ कि० ॥ जे निःस्नेही तस माया न होये राज, स स्नेही मायाधारी रे ॥ कि० ॥ १० ॥ जे विश्वासी घात उपावे राज, धिक धिक तास जमारो रे ॥ कि० ॥ श्ह परजव पापें पीडाये, ते सहु सहि अवधारो रे ॥ कि० ॥ ११ ॥ अनुक्रमें प्रवहण तरतां पहो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तां, यवन द्वीपने तीरें रे ॥ कि० ॥ उतर्‍यां सहु ज न सायर कंठे, आव्या नरपति नीरें रे ॥ कि० ॥ १२ ॥ महेश्वरदत्तें भेटणुं मेल्युं राज, नृप आगल अनिनवेरुं रे ॥ कि० ॥ रीझ्यो महिपति दीधो दिलासो राज, करो व्यवसाय घणेरो रे ॥ कि० ॥१३॥ नृप आदेशे महेश तिवारें, पुरमां वेच्यां वसाणां रे ॥ कि० ॥ कीधा गांठे दाम दुणा राज, परखी परखनाणां रे ॥ कि० ॥ १४ ॥ निगम्या केताएक दिवस तीहां राज, प्रवहण वली सज कीधां रे ॥ कि० ॥ खेड्यां प्रवहण महोदधिमांहे, निजपुर साहामां सीधां रे ॥ कि० ॥ १५ ॥ नर दरिये जव प्रवहण आव्यां राज, पूरे पवनें प्रेर्‍यां रे ॥ कि० ॥ दैवग तेथी पोत सविहु, गिरि कुंडलमां घेर्‍यां रे ॥ कि० ॥ १६ ॥ प्रवहण पर्वत परें स्थिर रहीयां, फरहरे पंचरंग नेजा रे ॥ कि० ॥ ढाल चोवीशमी मोहनें जांखी, सहु हुंसे निसूणी सहेजा रे ॥ कि० ॥१७॥

॥ दोहा ॥

वहाण रुंधाई रह्यां, न होय वायु प्रसंग ॥ नाविक सवि झांखा थया, ढीप्या सयल सलंग ॥ १ ॥ प्रवहण जन आतुर हुआं, उद्यम न चढ्यो हाथ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

चिंतातुर चिंते सहू, शुं करशुं जगनाथ ॥ २ ॥ ना वथी उतर्यो एकलो, तेह महेश्वरदत्त ॥ ततक्षण गिरि उपरें चढ्यो, कौतुक देखण ऊत्त ॥३॥ तिहां एक दीतुं देहरुं, उंची धज लहकंत ॥ दोय नगारां देहरे, अति आगल दीपंत ॥ ४ ॥ दीठां तेह महे श्वरें, लीधी गेडी हाथ ॥ नीशाणे दीधी तिहां, ग रज्यो नूधर नाथ ॥ ५ ॥ ऊबक्यो निपट गुहाथ की, उड्यो विहंग नारंभ ॥ पसर्यो पंखतणो पव न, अति उंचो ब्रह्मंड ॥ ६ ॥

॥ ढाल पचीशमी ॥

नंद सलूणा माहरा नंदना रे लो ॥ ए देशी ॥ ना रंड पंखीना वायसूं रे लो, तेणें हीलोव्यो सायरु रे लो ॥ गिरिकुंडलथी नीकळ्या रे लो, प्रवहण पंथ दिशा चळ्यां रे लो ॥१॥ कहे जन वहाण तो वह्यां रे लो, शेठ तो गिरि उपरें रह्या रे लो ॥ कीहांथी ए मेलो होयशे रे लो, वाट एहनी घरे जोइशे रे लो ॥२॥ वाहण पण नवि फरे फरी रे लो, कोश ब हु रहियो गिरि रे लो ॥ अनुक्रमे प्रवहण नावीयांरे लो, रूपचंडपुर आवियां रे लो ॥३॥ खबर हूई रुद्द त्तने रें लो, प्रवहण आव्यां पत्तने रे लो ॥ लोक स

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

हूने जणावीयुं रे लो, महेश्वरदत्त तो नावीयो रे लो ॥ ४ ॥ ऋषिदत्तादिक दुःख धरे रे लो, पुत्र न आव्यो घरे रे लो ॥ प्रवहणजन सवि धनीपणे रे लो, पोहता घर आप आपणें रे लो ॥ ५ ॥ हवे ते महेश्वरदत्तनी रे लो, वात कहुं अति नूतनी रे लो ॥ उतर्यो गिरिवरथी वहीरे लो, पण प्रवहण दीसे नहीं रे लो ॥ ६ ॥ ऊनो चिंतातुर होवतो रे लो, नयणे दश दिशि जोवतो रे लो ॥ एकलडो नीति धरे रे लो, आप उपाय घणा करे रे लो ॥ किहां घर किहां पुर किहां पिता रे लो, किहां मा ता बंधु किहां बंधुता रे लो ॥ ७ ॥ इहां हवे केह ने उलवे रे लो, कर्म कीधां ते नोगवे रे लो ॥ ८ ॥ नूख्यो तरष्यो एकलो रे लो, नटके जेम कोइ वेख लो रे लो ॥ वनफलमाटे घणुं नम्यो रे लो, सांज थइ रवि आथम्यो रे लो ॥ ए ॥ पेठो तरुने कोटरे रे लो, नूख्यो तिहां निद्रा करे रे लो ॥ एहवे ते तरु उपरें रे लो, देवदेवी वातो करे रे लो ॥ १० ॥ कंचन द्वीप विन्नावीयें रे लो, कौतुक जोवा जाइए रे लो ॥ एम कही अंबर वृक्षने रे लो, ते उडाड्यो तत क्षणें रे लो ॥ ११ ॥ नरदरीये गया जेहवे रे लो, जा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ग्यो महेश्वरदत्त तेहवे रे लो ॥ आलस मोडवा क्रम ह्यो रे लो, तेहवे सायरमां पड्यो रे लो ॥ १२ ॥ पड तां जलथी आफल्यो रे लो, मगरें ततक्षण ते गल्यो रे लो ॥ केतेक दिन मत्स्य ऊछल्यो रे लो, रूपचंद्र पुरें नीकल्यो रे लो ॥ १३ ॥ धीवरे तास नीहालियो रे लो, ततक्षण उदर विदारीयो रे लो ॥ तेमांहेथी महेश्वरदत्त नीकल्यो रे लो, धीवरे नृप आगल ते ध स्यो रे लो ॥ १४ ॥ उलख्यो लोकें एहवे रे लो, स ज्ज कस्यो नृपे तेहने रे लो ॥ आडंबरे घेर मोकल्यो रे लो, कुटुंब मनोरथ त्यां फल्यो रे लो ॥ १५ ॥ ढाल कहि पचवीशमी रे लो, मोहनने मनमें गमी रे लो ॥ हवे नमया सुंदरीतणी रे लो, वात कहुं मीठी घणी रे लो ॥ १७ ॥ सर्व गाथा.

॥ दोहा ॥

जागी नमया सुंदरी, तिणी वनमें तेवार ॥ जोयुं पण दीठो नहीं, पासे निज नरतार ॥ १ ॥ ऊठी अंबर सज करी, दीधो पियुने साद ॥ पाछो कोई बोल्यो नहीं, तब हूउं विषाद ॥ २ ॥ केम नवि दीधो नाहले, प्रत्युत्तर मुझ हेव ॥ सही प्रछन्नरह्यो हशे, छे हांसीनी टेव ॥ ३ ॥ नमया उंच स्वरें करी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

बोल्ली वनमां एम ॥ ठाना जे रह्यो ठो बूपी, ढूंढी का ढीश तेम ॥ ४ ॥ एम कही कदलीवनविषे, पेठी नमया नारी ॥ आलें कहे में दीठडा, उं उजा नी धार ॥ ५ ॥ कपट न जाएयुं कंतनुं, जोली नमया जाम ॥ केहवुं ए कंतारमें, करी गयो ठे काम ॥ ५ ॥

॥ ढाल ठवीशमी ॥

चंदलीया धूतारडा रे ॥ ए देशी ॥ नाहलीया निःस्नेही एम कां बूपी रह्यो रे, नारीयें धीर न धराय रे ॥ रामतनी वेलाए रामत कीजीए रे, विण अवसर केम थाय रे ॥ ना० ॥ १ ॥ अबलानी धीर जनुं शुं जूउं पारखुं रे, अबला बल कुण मात्र रे ॥ आवोने वालमीया तुमची वाटडी रे, जोतां हशे संयात्र रे ॥ ना० ॥ २ ॥ हांसीथी वीखासी प्रीत मजी हूवे रे, मानो प्राण आधार रे ॥ इण वनमें हांसीनी वेला शी अठे रे, हांसी एहवी निवार रे ॥ ना० ॥ ३ ॥ एम करतां तिहां पीयुडो केमही बोल्यो नहींरे, चिंते नमया नारी रे ॥ सहीतो वन मांहें ठेह देइ गयो रे, ए कपटी नरतार रे॥ना०॥४ वालमना पाय जोती सायरने तटें रे, आवी जोवें जामरे ॥ एके कोइ नावडलूं तिहां दीठुं नहीं रे, थइ

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

चिंतातुर ताम रे ॥ ना० ॥५॥ फिट फिट रे निःस्नेही निर्गुण नाहला रे, धिक धिक मुझ अवतार रे ॥ उतारी कूपमां मूकी दोरडी रे, कापे एहवो कवण गमार रे ॥ ना० ॥ ६ ॥ में तो शुं कांइ तुझने कहीए दूहव्यो रे,शुं तुझ उकल्युं एह रे ॥ करुणा ए शुं नावी तुझ हियडे रे, एह शो कारिमो नेह रे ॥ ना० ॥७ ॥ वदीए बे तुझ बाती वज्र सरीखडीरे, दोड्यो जे घरणी मूकीरे ॥ परिहरतां केम चाल्युं मनडुं ताह रुंरे, दीठी शी मुझमां चूक रे ॥ ना० ॥ ८ ॥ नेहड लो न शक्यो नाहलीया नीवाहिने रे, दीधो अचिं त्यो बेह रे ॥ रे रे किम विधाता हाथे घडे रे, ए हवा नर निःस्नेह रे ॥ ना० ॥ ए ॥ एहवी जो न करे तो तारीरे, ऊंची कला नवि थाय रे ॥ तुं पण दीसे बे निर्दय हियडे रे, एहवुं तुझ न सुहाय रे ॥ ना० ॥१०॥ भांखुं बुं कर जोडी दैव में ताहरो, केहो ऊलव्यो ग्रास रे॥मुझने जे तें मेल्यो एहवो नाहलो रे, ए तुझने शाबासरे ॥ ना० ॥११॥ धुरथी जो वालमीया कूड हुं जाणती रे, तो कांइ नावत साथ रे ॥ रेहती हुं मंदिरमें डुःख नवि देखती, नित्य पूजत जगनाथ रे ॥ ना०॥१२॥ पेहलां तो जल पीधुं पबे घर पूबीयुं

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रे, हुवुं जेवुं लखीयुं ललाट रे ॥ मुनिवरनुं जे भाख्युं तेह खरुं थयुं रे, जल वही आव्युं वाट रे ॥ ना० ॥ १३ ॥ दैवे जो पांखडली दीधी होत जो रे, तो जइ मलती कंत रे ॥ केम जइने मलीयें आडो सायरु रे, सायरु तेम तदंत रे ॥ ना० ॥ १४ ॥ पियुडाने ऊंलूंडी आवे मनमें रे, नारी निगमे केम दीह रे ॥ उपाडी नाखी विरहपयोधिमां रे, मीठुं बोलतो केम जीह रे ॥ ना० ॥ १५ ॥ थानारुं ए लख्युं एहवुं भाग्यमां रे, वालिम ताहरो विजोगरे ॥ इहां कोइ कोइनो वांक कोइ नहीं रे, पूर्व कर्मनो भोग रे ॥ ना० ॥ १६ ॥ जंगलमें पण मंगलमाला होयशे रे, शील थकी सुविशाल रे ॥ पभणी ए मनमानी छवीशमी रे, मोहनविजयें रसाल रे ॥ना०॥१७॥ सर्व गाथा ॥

॥ दोहा ॥

नमया छेह देइ गयो, नाह महेसरदत्त ॥ अबला झूरे एकली, सायर तट संसत्त ॥ १ ॥ विरह म होजो केहने, विरह डुस्सह दीठ ॥ धरणी पण शत खंड हुवे, जल विरहे उकिठ ॥ २ ॥ वल्लह विरह अथाह जल, थाह न लप्रे कोय ॥ कां न हुवुं ताहरुं मिलण, जंगल भेटण होय ॥ ३ ॥ जिहां विरहानल प

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रजले, तिहां नर केहो नूर ॥ दघे दावानल जिहां, तिहां केम होय अंकूर ॥ ४ ॥ मानव कवण सही श के, विरह भुयंगम झल्ल ॥ जाली उंडी नीकले, पण न लहुं विरहासल्ल ॥ ५ ॥ विरह वज्र वंचे कवण, विरह दुःख न सहाय ॥ झाख लताथी वीछडे, तेम तेम दुर्बल थाय ॥ ६ ॥

॥ ढाल सत्यावीशमी ॥

शुक देव कहे रे उपाय, तुमें सांभलो परीक्ष त राय ॥ ए देशी ॥ हवे नमया सुंदरी नार, मूके नयणथी आंसूधार ॥ पडी शोचना सरित मझार, विरहें थइ व्याकुली रे ॥ कुण जाणे पराइ पीर ॥ जस वीचे ते सहेज शरीर, विरहीनो विरह गहीर॥ वि० ॥ १ ॥ फिरे वनमां मृगली जेम, जिहां विरह तिहां धीरज केम ॥ जीहां प्रीत तिहां गति एम ॥ वि० ॥ २ ॥ करी प्रीति निवाहे कोय, करी एकं गो ताणे लोय॥ पठी तेहनी एह गति होय ॥वि०॥ ॥ ३ ॥ एकंगो पतंगने नेह, थई रसीयो झंपावे देह ॥ पण दीपक न गणे तेह ॥ वि० ॥ ४ ॥ करी प्रीत निवाहे कोय, तेतो विरलो कोइक होय ॥ तस पीजें पयतल धोय ॥ वि० ॥ ५ ॥ जे उत्तम जननी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रीति, तेहनी तो जगमांय प्रतीति, खलनी तो वि परीत रीति ॥ वि० ॥ ६ ॥ दे एम छेह करी विश्वा स, वह्यो नार जननीयें तास ॥ ते तो एमही उदरे दशमास ॥ वि० ॥ ७ ॥ एम रटती फीरे वनमांही, तास संग सखी नहि पाहि ॥ पडतां रहे वृक्ष संबा हि ॥ वि०॥ ८ ॥ कहे हृदयने रे चंड, कांइ न होय विरहे शतखंड ॥ केम वहीश तुं दुःख करंरु ॥वि०॥ ए ॥ अयि प्राण कहुं तुं तुम्म, नहिं वालम निकट निस्सम्म ॥ कहेवाशो केहना इम्म ॥ वि० ॥ १० ॥ कांई सरजी एणे संसार, निर्नागिणी एहवी नारि ॥ जे ह तजी एम नरतार ॥ वि० ॥ ११ ॥ रे धरणी न दे कां माग, पियुविरह वाई गयो खाग ॥ जूउं कपटी ए लाध्यो शो लाग ॥ वि० ॥ १२ ॥ ए वनमां कव ण आधार, पीयर केइ कोष हजार ॥ गति केइ करि श किरतार ॥ वि० ॥ १३ ॥ पुरुषें पण नाण्यो प्रेम, गयो वालिम मूकी एम ॥ तस रूंधी न राख्यो केम ॥ वि० ॥ १४ ॥ थइ वैरण निंद दुरंत, जेणे राख्यो उलवी कंत ॥ एम कही नमया विलपंत ॥ वि० ॥ १५ ॥ पूरवे में कीधां पाप, होशे दीधा कोइने शा प ॥ तेह प्रकट्या आपो आप ॥ वि० ॥ १६ ॥ दीधा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

होशे आले दोष, पीधा होशे आलें कोश ॥ तो जो गवतां केहो शोष ॥ वि० ॥ १७ ॥ कऱ्या हशे कान नदाह, मृग मार्या हशे फंदमांह, बिल पूऱ्या हो शे नीरप्रवाह ॥ वि० ॥ १८ ॥ कऱ्या बालक मात विछोह, वेच्यां होशे आयुध लोह, कऱ्या होशे सा धु कोह ॥ वि०॥ १९ ॥ सूची अणीये अनंता जीव, कऱ्या चूरण कंद दहेव ॥ कीधा होशे आहार सदै व ॥ वि० ॥ २० ॥ गो कन्या भूमि अलीक, होशे बोल्यां नवातरे ठीक ॥ फल तेहनां एह नजीक वि० ॥ २१ ॥ करी उद्यम करुं धनजाल, थई बेठो हुईश रखवाल ॥ लीधुं होश्ये में ते उदाल ॥वि०॥२२॥ वावऱ्यां होशे अणगल नीर,ग्रही धाल्या पंजर की र ॥ रंग्यां होशे रातां हीर ॥ वि०॥ २३ धरणीनुं वि दाऱ्युं पेट, शरसंधि रमीयां खेट॥ कऱ्यां शातनपातन पेट ॥ वि० ॥ २४ ॥ परदारा संगति कीध, रस रंजी वारुणी पीध ॥ सेव्यां होशे व्यसन प्रसिद्ध ॥ वि० ॥ २५ ॥ तिथिपर्व जाणी कऱ्यां भंग, करी होशे के ली अनंग ॥ वली मिथ्या वादि प्रसंग ॥ वि०॥२६॥ जिनमतथी कऱ्यो विषवाद, गुरुजनना कऱ्या अप वाद ॥ हूउं होशे संतविषाद ॥ वि० ॥ २७ ॥ एम

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

निंदे पुरातन कर्म, दृढ धारे जिनवरधर्म॥ लहियें जे हथी संपत्ति शर्म ॥ वि० ॥ २८ ॥ ए सत्यावीशमी ढाल, कही मोहनविजयें विशाल॥ कहुं आगल वा त रसाल ॥ वि० ॥ २९ ॥ सर्व गाथा ॥

॥ दोहा ॥

चार प्रहर दिन वन गमी, पियु विण विण साहि त्य ॥ महासती दुःख देखीने, आथमियो आदित्य ॥१॥ थई रजनी उदयो शशी, विहंग करे विश्राम ॥ पसरी दशदिश चंद्रिका, उज्ज्वल शीतल दा म ॥ २ ॥ लता गुल्ममांहे वसी, नमया सुंदरी ता म ॥ नयणे नावे नींद्रडी, मध्यरयणी थइ जाम ॥३॥ पियुविरहे तलपे घणुं, जलविण जेहवुं मीन ॥ जिम जिम नेही सांभरे, तेम तेम जंपे दीन ॥४॥ रे रे चं द कलंकीया, लाज न आवे तुझ ॥ अबला जाणी ए कली, शुं संतापे मुझ ॥ ५ ॥ जो पीयुमेलो तुं करे, तो तुझमानुं पाड ॥ नित देउं आशीष तुज, करी रा खुं मनवाड ॥ ६ ॥

॥ ढाल अठ्ठावीशमी ॥

गोकुल गामने गोंदरे रे, आ शी लूंटा लूंट मारा वाहला रे ॥ ए देशी ॥ एकलडी सायरतटें

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रे, नमया माऊम रात ॥ मारा वाला रे, इंडुने दीये उलंजडा रे, मीठडी मीठडी वात ॥ मा० ॥ ॥ १ ॥ चांदलिया धूतारडारे, निर्दय निठोर कठोर मा० ॥ विरहीया विरह जगाडतो रे, चंचल चित्तडा चोर ॥ मा० ॥ चां० ॥ २ ॥ लोक कहे तुऊमें सुधा रे, ते तो मुधा में दीठ ॥ मा० ॥ जाणुं हुं मुऊ जाणतो रे, तुऊमां छे गरल गरिष्ठ ॥ मा० ॥चां०॥ ॥ ३ ॥ सायर पुत्र तो तुं नहीं रे, तुं वडवानलनी जाति ॥ मा० ॥ ताहरुं नाम दोषाकरुं रे, तेहज साची विख्यात ॥ मा० ॥ चां० ॥ ४ ॥ हियडे तुं रखे फूलतो रे, जे मुऊ माने छे ईश ॥ मा० ॥ ग्रह्युं विष पीयुषने तज्युं रे, शंकर तो छे बालिश ॥ मा० ॥ चां० ॥ ५ ॥ ताहरेज नाग्यें ए राहुने रे, दैवें न दीधुं पेट ॥ मा० ॥ नहीं तो होत तुं पाधरो रे, एम दुःख देत न नेट ॥ मा० ॥ चां० ॥ ६ ॥ क्यारे कदीय तुं उगमे रे, दिनयर केरी सेज ॥ मा० ॥ जाय छे किहां माटीपणुं रे, कां नथी करतो तेज ॥ मा० ॥ चां० ॥ ७ ॥ एहवो जोरावर जो अछे रे, रवि शशि संगम रात ॥ मा० ॥ त्यारे कां नथी ऊगतो रे, जाणी में ताहरी वात ॥ मा० ॥ चां० ॥ ८ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

दीसे छे शीतल दीसतो रे, पण पावकथी दुरंत ॥ मा० ॥ मोलुं दही जेम पीवतां रे, जेम होय शीत लदंत ॥ मा० ॥ चां० ॥ ए ॥ कांइक करुणता राखी यें रे, कठिण न थइए मामूर ॥ मा० ॥ तो जग दीश नलूं करे रे, साहिब हाजरा हजूर ॥ मा० ॥ चां०॥ १० ॥ कांइक कीजे संनारणुं रे, कांइक कीजे उपकार ॥ मा० ॥ दीजे जइने उलंनडो रे, जिहां होय मुऊ नरतार ॥ मा० ॥ चां० ॥ ११ ॥ नूंडा तुं अंबर संचरे रे, तुजने शी लागे वार ॥ मा० ॥ नाह कठोर मेहली गयोरे, जो तुं नयण उघाड ॥ मा० ॥ चां० ॥ १२ ॥ जे कोय वेरी करे नहीं रे, तेम करी नाठो कंत ॥ मा० ॥ जो तुं मेलावो मे लवे रे, तुं मुऊ वीर महंत ॥ मा० ॥ चां० ॥ १३ ॥ एम विलपे ते व्याकुली रे, तेहवे विहाणी रातरे ॥ मा० ॥ चंद बूप्यो रवि ऊगम्यो रे, सुंदर हूउं प्रनात ॥ मा० ॥ चां० ॥ १४ ॥ वली गुहथी नीकली रे, आवी महोदधि तीर ॥ मा० ॥ निसासो नरती थ कीरे, त्यां कुण जाणे पीर ॥ मा० ॥ चां० ॥ १५ ॥ पियु पियु करी नमया रडे रे, नाह मलो एक वार ॥ मा० ॥ वली चित्तडाथी चिंतवे रे, किहां मले व

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नह मझार ॥ मा० ॥ चां० ॥ १६ ॥ जेह हाथेथी महेली गयो रे, त्रेवडी हुंसांतुंस ॥ मा० ॥ ते पियु केम आवी मले रे, म करय मुधा मनहुंस ॥ मा०॥ चां० ॥ १७ ॥ दुखडुं इहां कोण सांभले रे, रोये न लाभे राज ॥ मा० ॥ मोह तेणे नाणीउं रे, इयो छे तेहथी काज ॥ मा० ॥ चां० ॥ १८ ॥ जीहां ती हां शील सखाइउं रे, शीलथी मंगलमाल ॥ मा०॥ मोहनविजयें भली कही रे, अठ्यावीशमी ढाल ॥ मा० ॥ चां० ॥ १ए ॥ सर्व गाथा.

॥ दोहा ॥

हवे तो नमया सुंदरी, मनमां धीरय दिऊ ॥ हवणां मलशे वालमो, प्रेम विलुऊ प्रसिऊ ॥ १ ॥ जे ते कम्म उवद्यियो, तेहना भोगव्य भोग ॥ छे गति ए संसारनी, क्षण वियोग क्षण योग ॥ २ ॥ भोगव्य तुं ताहरां कर्यां, कां तुं धरे विषाद ॥ जे जेहवुं फल वावियें, तेहवो तास सवाद ॥ ३ ॥ जो तें वावी कोदरी, शाल तुं केम लणेश ॥ पामीश क मल किहां थकी, पन्नर जो तुं खणेश ॥ ४ ॥ मुऊने मुनियें कह्युं हतुं, कंत विछोहो जेह ॥ पूरव कर्म तणे वशे, उदये आव्यो तेह ॥ ५॥ प्रेम करी पलटे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नहीं, ते विरलो संसार ॥ पण इहां प्रेम किशो करे, जीहां कृतकर्म प्रसार ॥ ६ ॥

॥ ढाल उंगणत्रीशमी ॥

कोई आण मेलावे साजनां ॥ ए देशी ॥ हो उठी नमया सुंदरी, सायर तटथी एह हो ॥ आवी कदली वनमां, दीठुं सरोवर तेह हो ॥ १ ॥ शील सखाइ होइशे, एहने वनह मझार हो ॥ मलशे वाहलां मानवी, होशे जयजयकार हो ॥ शी० ॥ २ ॥ बेठी सरोवरने तटे, हियडे खटके शाल हो ॥ इहां पर हरीगयो पियुडो, आण्युं कांइ न वाल हो ॥ शी० ॥ ३ ॥ एह कदलीना गेहमां, रहेता लागे बीक हो ॥ उंपहेली गिरिकंदरी, दीसे छे नजीक हो ॥ शी० ॥ ४ ॥ तजी सरवर ग्रही कंदरा, पेसी लीधो विश्राम हो ॥ निर्मल जलें भरी नानडी, मुख पखाल्युं ताम हो ॥ शी० ॥ ५ ॥ जे वनफल भूंई पड्यां, ते लेइ कीध आहार हो ॥ पवित्रपणे शुद्ध चित्तथी, ध्यान धरे नवकार हो ॥ शी० ॥ ६ ॥ एहज मंत्र प्रभावथी, अहि थयो फूलनी माल हो ॥ कुष्ट गयो जपतां थकां, पाम्यो सुख श्रीपाल हो ॥ शी० ॥ ७ ॥ शिवकुमारें ए मंत्रथी, जटिलनो पुरिसो कीध हो ॥ जिनदासें

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

महावन्नथी, बीजपूरक फल लीध हो ॥ शी० ॥ ७ ॥ पाम्यां जिह्वने जीह्वडी, मंत्रथी सुरना जोग हो ॥ गगनें उडती मोसली, एहज मंत्रने योग हो ॥ शी० ॥ ए ॥ हवे ते नमया नारीने, पीयु विण दीरघ दीह हो ॥ वरस जीसी थाये घडी, उपनी एहवी एह हो ॥ शी० ॥ १० ॥ निशि वासर नेही विना, होवे अति प्रलंब हो ॥ पूजूं जिन जेम सांजले, इहां कोइ जो लाजे बिंब हो ॥ शी० ॥ ११ ॥ गिरिवरमें नमया जमे, घणीए कीधी तलास हो ॥ तोही पण जिनराजनी, मूरत न मली तास हो ॥ शी० ॥ १२ ॥ फिरि पाछी गइ कंदरा, माटी जल लेइ हाथ हो ॥ मन मानीतो तेहनो, निपायो जगनाथ हो ॥ माटी तणो निपजावियो, नानकडो प्रासाद हो ॥ तेहमां प्रजु पधरावियां, गाती सुकंठें नाद हो ॥शी०॥१३॥ स्थाप्युं नाम युगादिनुं, हरखी घणुं मनमांह हो ॥ वनफल वनमां फूलडां, ढोके नित्य सोत्साह हो ॥ शी० ॥ १४ ॥ जावें जावे जावना, कहे हो जिन अनुकूल हो ॥ माहरा नाह तणी परें, रखे होता प्रतिकूल हो ॥ शी० ॥ १५ ॥ जो छे करुणा ताहरी, तो छे मंगल माल हो ॥ मोहनविजयें जली कही, उंगण

त्रीशमी ढाल हो ॥ शी० ॥ १६ ॥ सर्व गाथा ॥

॥ दोहा ॥

वीतरागने विनवे, देव शिरोमणि देव ॥ ए वनमां पामूं किहां, तुम पद पंकज सेव ॥ १ ॥ मीठी कूई कर चढी, खारा दरीया मद्य ॥ ए वेलाए तुं मल्यो, परम सनेही मुद्य ॥ २ ॥ मात पिता बांधव खसा, ससरो सासू कंत ॥ दुःखमांहि होय वेगलां, एक तुं सखाइ भगवंत ॥ ३ ॥ तुं करुणानिधि तुं विबुध,तुज गुण अपरंपार ॥ भव सायरमां डूबतां, तुज पद पद्म आधार ॥ ४ ॥ एम जन्म सुकियारथो, करती नमया नित्य ॥ भूथी लही वनफल जमे, धरती तापस वृत्ति ॥५॥ वस्त्र तणी बांधी धजा, दरी उर्द्ध बहु वान ॥ काननमें नमयासुंदरी, एम करे गुजरान ॥६॥

॥ ढाल त्रीशमी ॥

देशी वीठीयानी ॥ हांरे लाल नमया सुंदरीनो पिता, निज नयरथी चढीयो जहाजरे लाल ॥ सिंहल द्वीपनी साहमो, सुंदर व्यवसायनें काज रे लाल ॥१॥ हुं बलिहारी रे शीलनी, नहि शीलसमो जग कोय रे लाल ॥ जेह थकी वनमें इहां, मनमेलु मेलो होय रे लाल ॥ हुं० ॥ २ ॥ हां० ॥ प्रवहण तरतां नीरमें,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ते पाम्यां निशाचर द्वीप रे लाल ॥ नमया तातें रे पोतने, सायर तटे राख्यां ठीप रे लाल ॥ हुं० ॥ ३ ॥ हां० ॥ प्रवहण हुंती उतस्यां, जल इंधण लेवा लोक रे लाल ॥ सायरतटे नमया पिता, बेठो तिहां विटाइ लोक रे लाल ॥ हुं० ॥ ४ ॥ हां० ॥ दीठुं कदलीवन तिहां, अलगाथी नयणे तेण रे लाल ॥ जोवा कारण संचस्यो, एकलो न जाणे कोण रे लाल ॥हुं०॥५॥हां०॥ दीठां तेणें धरणी तलें, वनितानां पगलां गोण रे लाल ॥ चिंते इहां ए वनमां, रहेती हशे नारी कोण रे लाल ॥ हुं० ॥६॥ हां० ॥ दीसे छे पगलां तुरतनां, हमणां गइ दीसे छे नारी रे लाल ॥ होशे कोइक वियोगिणी, अथवा किन्नरी अनुहार रे लाल ॥ हुं० ॥७॥हां०॥ एम चिंती ऊतावलो, चाल्यो नमयानो तात रे लाल ॥ कदलीवन मूकी करी, गयो डुंगर निकट विख्यात रे लाल ॥हुं०॥८॥हां०॥ तिहां एक तेणे दीठी धजा, फरहरती पवन प्रकाश रे लाल ॥ जाणुं सही इहां कोइनो, रहेवानो दीसे छे वासरे लाल ॥हुं०॥९॥हां०॥ विण जाण्ये केम कोइना, मंदिरमांहे दीजे पाय रे लाल ॥ का ह्यानी एह रीत छे, विणतेडे कीमही न जवाय रे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

लाल ॥ हुं० ॥ १० ॥ हां० ॥ संकोचाईने रह्यो, ए कलो कंदरा बार रे लाल ॥ कान देइने रे सांजले, तिहां वयणतणा जणकार रे लाल ॥ हुं० ॥ ११ ॥ हां० ॥ कोइक भूल्युं छे मानवी, इहां वसियुं दीसे छे तेह रे लाल ॥ लोकदिशा उभी ए ध्वजा, फर हरती कंदरा गेह रे लाल ॥ हुं० ॥ १२ ॥ हां० ॥ कान देइ वली सांजल्युं, नर किंवा नारी एह रे लाल ॥ हलुवे जेम तिहां सांजले, तेम साद उल खीयो तेह रे लाल ॥ हुं० ॥ १३ ॥ हां० ॥ मूऊ पुत्री जे नर्मदा, ते सरखो दीसे छे साद रे लाल ॥ ते केम संजवियें इहां, एम मनथी करे विसंवाद रे लाल ॥ १४ ॥ हां० ॥ होय किंवा नहिं होय, मुऊ पुत्री नमया एह रे लाल ॥ बीजी कुण माही असी, एम बोले मीठी जेह रे लाल ॥ हुं० ॥ १५ ॥ हां० ॥ पेठो कंदरीमांहे धसि, दीठी निज पुत्री नेण रे लाल ॥ तातें बोलावी बालिका, अति मीठे मनोहर वयण रे लाल ॥ हुं० ॥ १६ ॥ हां० ॥ नमया जो जो बोलशे, निज तातथी वेण रसालरे लाल ॥ रंग रली ए त्रीशमी कही मोहनविजयें ढालरे ॥ लाल ॥ हुं० ॥ १७ ॥ सर्वगाथा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ दोहा ॥

नमयाए दीठो पिता, हर्षित मनमां जोर ॥ धाराधर देखी जिस्यो, तांडव मांडे मोर ॥ १ ॥ क्षणेक करी आलोचना, ए सुहणुं के साच ॥ कीहांथी ए वनमें पिता, ए शो दीसे साच ॥ २ ॥ के कोई वनदेवता, प्रगट्यो गुफा मझार ॥ दीसंतो दीसे पिता, पण केम करुं जुहार ॥ ३ ॥ बोल्यो तात सुता प्रत्यें,रे वत्से सुण वात ॥ चित्तथी शी करे शोचना, हुं बुं ताहरो तात ॥ ४ ॥ शुं तुं उंलखती नथी, हुं तुज जनक सहदेव ॥ ताहरो साद सुणी इहां, मिलवा आव्यो हेव ॥ निश्चय जाणी नर्मदा, ऊठी प्रणम्या पाय ॥ आलिंगीने जनक पण, मल्यो हेज न समाय ॥ ६ ॥

॥ ढाल एकत्रीशमी ॥

तुम चरणे मेरो चित्त लीनो ॥ ए देशी ॥ नमया सुंदरी तातने कंठे, लागी ठाती नराणी उत्कंठे ॥ प्रजु जे करे ते मानी लीजें ॥ नयन थकी ऊरे आंसु धार, जाणे त्रूटो मोती हार ॥ प्र० ॥ १ ॥ गदगद कंठथी बोली न शके, हियडुं डुःख ते केम करहि शके ॥ प्र० ॥ तव तेहने तातें बुचकारी, एवडुं

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

दुःख केम करे विचारी ॥ प्र० ॥ २ ॥ इण द्वीपें इण वनमें तुं केम छे, कहे मुजने जेहवुं जेम छे ॥ ॥प्र०॥ पासे नहीं कोइ संग सहेली, किहां गयो वा लम तुज महेली ॥ प्र० ॥ ३ ॥ में तुज उत्तमने परणाइ, तिहांथी तुं इहां किण विध आइ ॥ प्र० ॥ कहे तव नमया तातने वाणी, केती कहुं हुं कर्म क हाणी ॥ प्र० ॥ ४ ॥ जव हुं परणी पीयु गुण जोती, राखतो तव पीयु अंबर धोती ॥ प्र० ॥ ते इहां छेह देइ गयो वनमें, करुणा किमपि न आणी मनमें ॥ प्र० ॥ ५ ॥ में एम पीयुडानुं कूड न जाण्युं, जोले जा वें साचुं पिछाण्युं ॥ प्र० ॥ इहां एकलडी दिहडा गालुं, वनफलथी ए पिंमने पालुं ॥ प्र० ॥ ६ ॥ तमे शुं करो वली शुं करे पीयुडो, पूर्व कीधां जोगवे जीवडो ॥ प्र० ॥ जालमें जेह लख्युं ते लहीए, अंत गंतनी केहने कहीए ॥ प्र० ॥ तुमे जाण्युं हशे मा हरी बाला, परण्या पछे सुख लहेशे ते वाला ॥प्र०॥ पण जो माहरा वखतमें न लिखियो, वांक नहीं में कोइनो परखियो ॥ प्र० ॥ ७ ॥ तातें निसूणी पुत्री वाणी, सांजलतां तिहां थाती जराणी ॥ प्र० ॥ ऐ ऐ महारी पुत्री एवां, दुःख जोगवे छे वनमांहे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

केवां ॥ प्र० ॥ ए ॥ में विण जाणे करी मूर्खाइ, जे एहवा कपटीने परणाइ ॥ प्र० ॥ एम कही हियडे लगाडी बाला, रखे दुःख धरती हवे गुणमाला ॥ प्र० ॥ १० ॥ नमयाने तव आणंद हूउं, दुखडाने तव दीधो दूउं ॥ प्र० ॥ मनमेलू मले एहवे टाणे, ते सुख बिहु मन के जिन जाणे ॥ प्र० ॥ ११ ॥ ताढी लहेरी जेम सायर केरी, वुठा जलधर पवनें फेरी ॥ प्र० ॥ तेहथी अति टाढो वाहला मेलो, ते साचुं रखे जूठमें नेलो ॥ प्र० ॥ १२ ॥ तातजी तुमे इहां जिनवर नेटो, नव नव दुःखडां क्षीणेकमां मेटो ॥ प्र० ॥ तात कहे इहां जिनवर किहांथी, क हे पुत्री प्रगट्या डे इहांथी ॥ प्र० ॥ १३ ॥ ततक्षण ते प्रतिमा दरसाइ, इंगुल तेलनो दीप बनाई ॥प्र०॥ चैत्यवंदन चित्त चोखे कीधूं, दरिसणपीयूष नयणे पीधूं ॥ प्र० ॥ १४ ॥ तारण तरण तुं जिन कहेवाये, स्वामी कीसी जो तुं प्रसन्न थायें ॥ प्र० ॥ स्वामी नि रंजन निपट नीरागी, तुम चरणथी अम प्रीतडी लागी ॥ प्र० ॥ १५ ॥ आप तस्या तिम अमने ता रो, तुं शिववनिता देवणहारो ॥ प्र० ॥ जगमांहे न हि कोइ तुम सम दाता, तुं नले जायो धन धन

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तुम माता ॥ प्र० ॥ १६ ॥ नमया तातें जिनस्तुति कीधी, समकित सुखडी रूडी लीधी ॥ प्र० ॥ मोह नविजयें मन स्थिर राखी, ढाल भली एकत्रीशमी भांखी ॥ प्र० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा ॥

॥ दोहा ॥

नमयातातें जिनस्तवन, कीधूं रूडी रीत ॥ पुत्रीने एवुं कहे, अंतरंग धरि प्रीत ॥ १ ॥ जो तुझ पियुडे परहरी, एहवा वनह मझार ॥ तुं ते उपरे प्रीतडी, नाणीश कोईवार ॥ २ ॥ आपणने चाहे घणुं, क्षण क्षण में सो वार ॥ आपण तेहने चाहीयें, मान्य सुता निर्धार ॥ ३ ॥ हाथ नमे जो कोइने, वहेंत नमे तो कोय ॥ दिलभर दिल छे जिहां तिहां, एम भांखे सहु लोय ॥ ४ ॥ जावा दे जो ते गयो, म करिश फिकर लगार ॥ आव्य संघाते माहरे, छोडी परो कंतार ॥ ५ ॥ सिंहल द्वीप थई पछे, पहोचशुं आपणे गेह ॥ तिहां बेठी तुं पालजे, शील धर्म ससनेह ॥ ६ ॥ जो मेलो लीख्यो हशे, तो तुझ मलशे कंत ॥ नहिं तो बेठी मंदिरें, भजजे जिन भगवंत ॥ ७ ॥

॥ ढाल बत्रीशमी ॥

आज टकारो कंकण रे, नणदल ठणक रह्यो मो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

री बांह ॥ कंकण मोल लीउं ॥ ए देशी ॥ तात व चनथी नर्मदा रे, सूरिजन हर्षित थइ मनमांहि ॥ गोरडी गुणवंती, जेहने छे शीयल सन्नाह ॥ गो० ॥ (जेहनेछे शील सहाय पाठांतरे) तात संघातें ते संचरी रे ॥ सू० ॥ आवी प्रवहण ज्यांहि रे ॥ गो० ॥ जे०॥ १ ॥ परिहस्युं वन जिम तद नवें रे ॥सू०॥ उत्कट स्वर्गावास ॥ गो० ॥ बेठी तेह विछोहमें रे ॥ सू० ॥ तात संघातें उल्लास ॥ गो० ॥ जे० ॥ ॥ २ ॥ जोजन कीधां नावतां रे ॥सू०॥ पहेस्यो नो तन वेष ॥ गो० ॥ जो सन्माने छोरडुं रे ॥ सू० ॥ तेहमां केहो विशेष ॥ गो० ॥ जे० ॥ ३ ॥ बेठां स घलां मानवी रे ॥ सू० ॥ प्रवहणमांहे जे वार ॥ गो० ॥ मूक्यो पोत खलासीयें रे ॥ सू० ॥ महो दधि मध्य ते वार ॥ गो० ॥ जे० ॥ ४ ॥ जेहवो वेग उतावलो रे ॥ सू० ॥ त्रूटे तंती ताए ॥ गो० ॥ अ धिके वेगे तेहथी रे ॥ सू० ॥ प्रवहण करे रे प्रचार ॥ गो० ॥ जे० ॥ ५ ॥ सिंहलद्वीपें जातां थकां रे ॥ सू० ॥ पवन थयो प्रतिकूल ॥ गो० ॥ पवने प्रेर्यां आवियां रे, अनुक्रमें बब्बर कूल ॥ गो० जे० ॥ ६ ॥ देखी बब्बर कूलने ॥ सू० ॥ छीप्यां प्रवहण तुंग

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ गो० ॥ केरा सायरने तटें रे ॥ सू० ॥ ताण्या वर पंचरंग ॥ गो० ॥ जे० ॥ ७ ॥ सहित सुता नमया पिता रे ॥ सू० ॥ आव्यो केरा मांह ॥ गो० ॥ बे सारी नमया जणी रे ॥ सू० ॥ एकांते सोत्साह ॥ गो० ॥ जे० ॥ ८ ॥ जोजन प्रमुख जलां कर्यां रे, नमयादिकें तेणी वार ॥ गो० ॥ प्रहर दिवस जब पाछलो रे ॥ सू० ॥ शोचे शाह तेवार ॥ गो० ॥ जे० ॥ ए ॥ नमयाने मूकी इहां रे ॥ सू० ॥ जेटुं बब्बर जूप ॥ गो० ॥ पुरमे वली रोजगारनुं रे ॥ सू० ॥ दीसे छे केहवुं स्वरूप ॥ गो० ॥ ॥ जे० ॥ ॥ १० ॥ अंबर पहेर्यां सुंदर रे, पहेर्या नर शृंगार ॥ गो० ॥ लीधूं अमूलक जेटणुं रे ॥ सू० ॥ साथें सवि परिवार ॥ गो० ॥ जे० ॥ ११ ॥ पुत्रीने कहे पेखजो रे ॥ सू० ॥ पट मंडप मनुहार ॥ गो० ॥ आवीश हुं हमणां फरी रे ॥ सू० ॥ जाउंबुं नयर मझार ॥ गो० ॥ जे० ॥ १२ ॥ एम कही नमयानो पिता रे ॥ सू० ॥ परिवर्यो परिकर साथ रे ॥गो०॥ एम पहोंतो दरबारमें रे ॥ सू० ॥ जिहां बेठो नृप नाथ ॥ गो०॥ जे०॥ १३ ॥ बत्रीश राजकुली सजी रे ॥ सू० ॥ वच्चे मकरध्वज राय ॥ गो० ॥ नमया तातें

Jain Education International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पाधरा रे ॥ सू० ॥ प्रणम्या पुरपति पाय ॥ गो० जे० ॥ १४ ॥ परदेशी व्यापारियो रे ॥ सू० ॥ जाणी नृप दे मान ॥ गो० ॥ आदरथी ग्रह्युं नेटणुं रे ॥ सू० ॥ नूपें दीधां पान ॥ गो० ॥ जे० ॥१५॥ कुशला लाप परस्परें रे ॥ सू० ॥ पूछे आणी प्रेम ॥ गो० ॥ पुरमांहे व्यापारनी रे ॥ सू० ॥ मागी आणा तेम ॥ गो० ॥ जे० ॥ १६ ॥ प्रणमी नृप नमयापिता रे ॥ सू० ॥ आव्यो आपणे गाम ॥ गो० ॥ ढाल कही बत्रीशमी रे ॥ सू० ॥ मोहने एह अभिराम ॥ गो० ॥ जे० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा.

॥ दोहा ॥

वेच्यां नमयाने पिता, करियाणां पुरमांहि ॥ दाम करया गांठें नला, परखी पारखमांहि ॥ १ ॥ पुरमांहे कीरति थई, नमया जनकनी जोर ॥ एहवो कोण अपत्य छे, जे होये गुण चोर ॥ २ ॥ सुपुरुष जिहां जाये तिहां, पामे आदर मान ॥ नागरवल्ली मान लहे, जाते तो छे पान ॥ ३ ॥ तृणचर नाभि थकी थई, मृगमदनी शी जाति ॥ पण जो गुण छे तेहमें, तो छे जग विख्याति ॥ ४ ॥ नमया तात निरंतरें, आवे नृप दरबार ॥ बब्बरमांहे दिन थया,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

बहुला हेज भंगार ॥ ५ ॥ नमया केरामां रहे, ता त करे संभाल ॥ वालमने संभारती, निगमे दिवस विशाल ॥ ६ ॥

॥ ढाल तेत्रीशमी ॥

सलूणी जोगण रूडी बे ॥ ए देशी ॥ बब्बर कू लमांहिं वसे छे,हारिणी गणिका एक ॥ जेहथी पुरंद र अप्सरा,रही हारी तेहथी विवेक ॥ कर्मनी गति न्यारी छे, अरे हां जूउं विचारी बे ॥ १ ॥ ए आं कणी ॥ हारिणी जन मन हारिणी साची, कारिणी मोह प्रपंच ॥ प्रगट कपटनी तेह सारिणी, वधा रिणी प्रीति रोमंच ॥ क० ॥ २ ॥ मधुर वयण वली नयण अनोपम, सयण करे क्षणमांहि ॥ प्रगटी मयणतणी नली, ए तो रयणि उद्योत विभाहि ॥ क० ॥ ३ ॥ गणिका रयण तणी छे कणिका, ला वण्य अणिका समान ॥ अमृतनी छे वेलडी, स्नेह यंत्रनी क्षणिका निदान ॥ क० ॥ ४ ॥ नारी नृत्य कारीयो हारी, एहवी अटारी तेह ॥ विषय कटा री विभावरी, शील शूरने ऊंपावे तेह ॥ क० ॥५॥ कामि जनने मनमें सरखी, विषय जननी संसार ॥ एहवी गणिका रूयडी, जस हाथे घडी किरतार

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ क० ॥ ६ ॥ बब्बर रायें तेहश्री दीधी, छत्र धारिनी सेव ॥ धरणीधव माने घणुं, एह विषयी जननी टेव ॥ क० ॥ ७ ॥ एक दिन नृप कहे ते म णिकाने, माग्य कांइक मुऊ पास ॥ तुऊ गुणें रीज्यो छुं घणो, छुं पूरुं ताहरी आश ॥ क० ॥ ८ ॥ गणिका कहे सुणो नयर नरेश्वर, जो छे करुणा तुऊ ॥ तो उणती छे केहनी, महाराज मंदिरें मूऊ ॥ क० ॥ ए ॥ पण एक मागुं पसाय तुमारो, सारो मोरुं काम ॥ जे सारथवाह आपणे, इहां घडवा आवे दाम ॥ क० ॥ १० ॥ तेह अठोत्तर सहस सो वनना, आपे मुऊ दीनार ॥ आवे मंदिर माहरे, सुख जोगवे जेह सार ॥ क० ॥ ११ ॥ ते मुऊ मंदिर जो नवि आवे, तो देवुं तस अपमान ॥ जो मुऊने माग्युं दीयो, तो देउं एह दिवान ॥ क ॥ १२ ॥ नृप कहे जोली ए शुं मागे, जो मागे ते प्रमाण ॥ जे कह्युं ते लेजें सुखे, कुंण रंक अने कुंण राण ॥ क० ॥ १३ ॥ नृपना वयणथकी ते गणिका, आवे जे सारथवाह ॥ लेवे धन ते पासथी करे, केलि अनंत उत्साह ॥ क० ॥ १४ ॥ हारिणी गणिकायें आव्यो जाणी, नर्मदासुंदरी तात ॥ जे किरतारें जला क

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

स्या, तस ज्ञानी केम रहे वात ॥ क० ॥ १५ ॥ ग णिका मिलवा आतुर हूइ, तेम वली धननो लोज ॥ जो जो एह संसारमां, नथी दीसतो लोजनो थोज ॥ क० ॥ १६ ॥ लोज नूंमो ते गुहिर महोदधि, कोइक लाजे पार ॥ ढाल कही तेत्रीशमी, ए मो हनविजयें सार ॥ क० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

हवे ते गणिका हारिणी, आलोचे स्वयमेव ॥ चे टी गुण पेटी जली, ते तेटी ततखेव ॥ १ ॥ रे चेटी सायर तटें, पटकुल ताण्यो जेण ॥ तेहने जेम तेम जोलवी, मंदिर आणो तेण ॥ २ ॥ जो ते नाकारो करे, तो तुं कहेजे एम ॥ अम मंदिर आव्या विना, रे नर जाइश केम ॥ ३ ॥ मुद्रा अठोत्तर सहस, हेमतणी अम देह ॥ अम स्वामिनी मळ्या पढी, जे जाणे ते करेह ॥ ४ ॥ चेटीने एम शीखवी, मूकी तेणें विख्यात ॥ ते पण आवी पाधरी, ज्यां ढे न मयातात ॥५॥ करी प्रणाम ऊजी रही, दासी करे अ रदास ॥ अहो सार्थ गणिका तिणें, मूकी ढे तुम पास ॥६॥ जे दिन तुमने सांजळ्या, ते दिन हूंती तेह ॥ मिलवा मन तरसे घणुं, निपट बंधाणो नेह ॥ ७ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ढाल चोत्रीशमी ॥

बेडो नांजी ॥ एदेशी ॥ नमया तात ते दासी वयणें, घणुं अघणुं ए खेदोणो, परदारानी संगति निसुणी, हियडे अति शरमाणो ॥१॥ अलगी रहेने हांरे कहेनी बे तुं दासी, अ० ॥ हांरे शी मांडी कूडनी फांसी ॥ अ० ॥ हांरे तुं दिसती नथी विश्वासी अ० ॥ए आंकणी॥ अरे दूती किहां तुं हुंती, थइ धूती जे आवी ॥ जारे अबूती देइश जूती, चढशे नूति साची ॥ अ० ॥ २ ॥ अमें व्यवहारी किम परनारी, सेवुं जोय विचारी ॥ खारी विषथी विषय कटारी, मतवारी धूतारी ॥ अ० ॥ ३ ॥ अमें संतोषी बुं निज दारा, केम सेवुं परदारा ॥ नोगवतां निर्धारा सारा, एहनां फल बे खारां ॥ अ० ॥ ४ ॥ पररामाना जे हने नामा, जन्म्या तेह निकामा ॥ मुख सामा जोई नवि पाम्या, धन्य जे एम तजे वामा ॥ अ० ॥ ५ ॥ अमें श्रावक आगम नावक, नावक मिथ्या अराति॥ परदारा पावकमां पगलां, देतां केम वहे बाती ॥ अ० ॥ ६ ॥ दानवराय अटंका वंका, शूर पण धरता शंका ॥ दाशरथीयें देई रुंका, लंका कीधी पंका ॥ ॥ ७ ॥ पद्मोत्तर जस अविचल उत्तर, सायर उत्तर

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

आगो ॥ तेह निरुत्तर कीधो मुकुंदें, परत्रिय अयस अखाडो ॥ अ० ॥ ८ ॥ रे दासी तुं कुबुद्धिनी मासी, एम नकीजें हांसी ॥ आशा शी विशवासी जोली, कहीये वात विमासी ॥ अ० ॥ ए ॥ तुज ठकुराणी वेश गवाणी, अमे वाणियाणी जाया ॥ अमथी ए केम हुवे कमाणी, जाणी वादल ठाया ॥ अ० ॥१०॥ नमया तातनी,निसुणी वाणी,अति विलखाणी चेटी ॥ चित्तथी जाएुं कांहुं आवी, मायने पेटें बेटी ॥ अ० ॥ ११ ॥ कहे कर जोडी तहें निगोडी, कां नांखो ऊवखोडी ॥ ठे होडी मुऊ स्वामिनी जोडी, गोर डियो ठे थोडी ॥ अ० ॥१२॥ ए अंगना जेणें अंगी यें, अंगें नवि आलिंगी ॥ नवरंगी नवि जिणे अनुषंगी, तेह कुरंगी प्रसंगी ॥ अ० ॥ १३ ॥ नारी नागकुमारी सारी, नाखुं तेह उवारी ॥ जेणें हाथें ए गणिका संवारी, धातानी बलिहारी ॥अ० ॥ १४ ॥ जे परहूणा, आवे सयाणा, इणपुर लेइ वसाणां ॥ ते मंदिर गणिकाने आवे, एहवी महीपति आणा ॥ अ० ॥ १५ ॥ सहस एक आठें अधिकेरा, आपे ते दीनार ॥ नहीतो तेहने नवि दिये जावा, जाषित लखत ठे सार ॥अ०॥१६॥ चेटीनी निसूणीने वाणी,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नमयातात जे कहेशे ॥ ढाल कही चोत्रीशमी रूडी, मोहन हेजें लहेशे ॥ ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

जांखे नमयानो पिता, चेटी निसुण विचार ॥ कहो ठकुराणीने लियो, जोइयें तो दीनार ॥ १ ॥ तु मथी बीजी वारता, अमथी तो नवि थाय ॥ एम कहेजे मीठी गिरा, तेह कहेतां शुं जाय ॥ २ ॥ राजा पण कोपे नहीं, कागलियाना कान ॥ ते माटे कहेजे घणुं, चेटी तुं कहुंं मान ॥ ३ ॥ चेटी आवी दोडती, निज ठकुराणी पास ॥ ए सारथपति स्वामिनी, दीसे छे कोइ दास ॥ ४ ॥ मिलवाने वांछे नहिं, तुज सरीखुं जे पात्र ॥ ए अण बोलाव्यो न लो, घर जेहवी नहिं यात्र ॥ ५ ॥ एणे तो एहवुं कहुंं, लागे ते लयो दिनार ॥ पण परदारा प्रीतडी, करतां केम व्यवहार ॥ ६ ॥

॥ ढाल पांत्रीशमी ॥

चुनी चुनी कलीयां में सेज बीछांउ, फुलांरी गज राह ॥ माहरा मारुडा, पाणीझारो ठमको वाजे ॥ ए देशी ॥ जाउं रे चेटी तेडी आवो, जेम सारथवाह ॥ मारा पंथीडा जोगीडा कांय न आवो, आवो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

माहारा राज ॥ निपट न लोजी थाउं ॥ए आकणी॥ कहेजो स्वामी मया करो मोसुं, मंदिर करो गज गाह ॥ मा० ॥ १ ॥ तुमथी जला जला सारथवाह, आंगण अमचे आया ॥मा०॥ दीसो ढो तेहथी चतुर घणेरा, फोगट शी करो माया ॥ मा० ॥ २ ॥ हूकम अढे मूफ नरवर केरो, लेउंबुं तिण दीनार ॥ मा०॥ नहीं तो अमारे घेर कोण आवे, अमे गणिका अव तार ॥ मा० ॥ ३ ॥ जो तमे माहरे गेह न आवो, तो किम लेउ दीनार ॥मा०॥ मन माने तो करजो क्रीडा, पण आवो एक वार ॥मा०॥४॥ वयणथी न होवे मेलो, तस धनेंकेम मन माने ॥ मा० ॥ रे रे दासी खासी माहरी, एम तुं कहेजे ढाने ॥ मा० ॥५॥ आवी दासी तरत उजाणी, जिहां ढे चीवरगेह ॥ मा० अहो सार थपति विनति मानो अमथी आणो नेह ॥ मा० ॥६॥ मूफ ठकुराणी घणुं बुन्धाणी, तुमहुंती निर्धार ॥ मा० ॥ मंदिरसुधी तो करो करुणा, साथें लेइ दी नार ॥ मा० ॥ ७ ॥ वातडीए तो एम मत वाहो, एम केम मूके कोय ॥ मा० ॥ हे प्रिय प्रेम एम बनी आवे, वाते वडां नवि होय ॥ मा० ॥ ८ ॥ जो मन माने तो तिहां रहेजो, पराणे न होवे प्री

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

त ॥ मा० ॥ गाम वसे नहिं बांध्ये कणबी, जिहां तिहां एह छे रीत ॥ मा० ॥ ए ॥ जो तुमें नहीं आ वो तो तुमने, चालवा नहिं दे राय ॥ मा० ॥ नानें महोढे तुमची आगल, शी कहुं वात बनाय ॥मा० ॥ १० ॥ शाहें आलोचीने जोयुं, एतो गणिका जा ति ॥ मा० ॥ नर सुर असुर ते पार न पामे, जे ए हना अवदात ॥ मा० ॥ ११ ॥ जे कोइ नारी थकी हठ ताणे, ते सम मूढ न कोय ॥मा०॥ अपर वली तस गायुं गाये, ते पण तेहवो होय ॥ मा० ॥ १२॥ करीए आपणा मननुं जाण्युं, ताणीयें नहिं कोइ साथे ॥ मा० ॥ शुं करे कामिनी जो होय आपणुं, मनडुं आपणे हाथे ॥ मा० ॥ १३ ॥ दासी वयणें जनक नमयानो, लेइ तुरत दीनार ॥ मा० ॥ आ व्यो दासी साथे सुंदर, गणिकाने आगार ॥ मा० ॥ ॥ १४ ॥ गणिकायें आसन बेसण दीधुं, घणी करी मनुहार ॥ मा० ॥ जले तुमें स्वामी महेल पधारया, मोहोटी करी किरतार ॥मा०॥१५॥ एवडी शी करी खांचा ताणी, कनडीथी महाराज ॥ मा० ॥ नृपनो हुकुम अने हुं चाहुं, तो तुमने शी लाज ॥ मा० ॥ ॥ १६ ॥ साकर घोले मुखथी गणिका, सारथवाह

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

निहाले ॥ मा० ॥ मोहनविजये रूडी जांखी, पांत्री शमी ए ढाले ॥ मा० ॥ १७ ॥ सर्वगाथा

॥ दोहा ॥

गणिकाए मांरुया घणा, हाव जाव धरी वाच ॥ पण जोलववा शाहने, सा नवि लाजे दाव ॥ १ ॥ शाह तिहां मन दृढ करी, बेठो चित्र समान ॥ वचन सुणी गणिका तणां, एकरंगे दीये कान ॥ २ ॥ जिहां शीलसन्नाह वर, तिहां कुसुमायुध बाण, किमपि न जोरो करिशके, मन माने तेम ताण ॥ ३ ॥ नमयातात कहे तहां, रे गणिका अवधार ॥ लटपट जावा दे परी, ए ल्यो तुम दीनार ॥ ४ ॥ अमें श्रावक जिन रायना, परदारा परिहार ॥ देखी पेखी अम थकी, केम होये एह आचार ॥५॥ मान्य कह्युं तुं माहरुं, अमे आव्या आगार ॥ जलुं थयुं तुमने मळ्या, सोप्यां तुम दीनार ॥ ६ ॥

॥ ढाल ठत्रीशमी ॥

अमे महीआरु आदि जुगादि, तुं कीहांनो ठेदाणी रे ॥ ए देशी ॥ कहे दासी हारिणी गणिकाने, रही श्रवणमां पेसी रे ॥ एहने केरे कामिनी रूडी, मनोहर नानडे वेशें राज ॥ १ ॥ हुं तो एह

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ने मटके मोहीरे ॥ देही कुंकुमने वान, जेही रे अप्सराने मान ॥ हुं० ॥ ए आंकणी ॥ नयण देइने घडी धातायें, कहेतां नावे लासे रे ॥ आज तो व धती दीठी आज्ञा, काले कीहां ते जासे राज ॥हुं० ॥ २ ॥ नागकुमारी देवकुमारी, तेम ए मानवनी कु मारीरे ॥ अहो ठकुराणी बाला उपरें, नाखुं तेह उ वारी राज ॥ हुं० ॥ ३ ॥ शुं जाणुं एहनी ठे पुत्री किंवा एहनी नारी रे ॥ में तो जोले जावें दीठी, पण नावे ते निरधारी राज ॥ हुं० ॥ ४ ॥ ते कन्या जेम तेम करतां, आपण मंदिरें आवे रे ॥ कल्पल ता सम इच्छित दाता, दीठेहीज सुहावे राज ॥ हुं० ॥ ५ ॥ ए हरिणाक्षी इंदु अमृतथी, नीसरी दीसे आखी रे ॥ जो एहमां कांइ कूडुं जाखुं, तो सरजण हार ठे साखी राज ॥ हुं० ॥ ६ ॥ एमही पण ए सारथवाहो, आपणे वश नवि होशे रे ॥ तो तमे कांये जूलो ठकुराणी, नारी न ल्यो कां खोंची राज हुं० ॥ ७ ॥ काम सरे वली मान वधे तेम, लोकें नवि होय हांसी रे ॥ अने वली सारथवाह न जा णे, तो तमने शाबासी राज, ॥ हुं० ॥ ८ ॥ गणिका दासी वयण सुणीने, रही क्षण एक सिहां [illegible]

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मीठी मीठी वातो मांडी, शाह थकी अभिमानी राज ॥ हुं० ॥ ए ॥ स्वामी किण नयरें वसो छो, शी खबरो तुम केरी रे ॥ दीसो छो दृढधर्मी सारा, कीर्ति तुम अभिनेरी राज ॥ हुं० ॥ १० ॥ मुद्री केणें एह घडी छे, कुंदन पण छे सारो रे ॥ मणा न थी कारीगरमांहे, धन्य एहनो घडनारो राज ॥ ॥ हुं० ॥ ११ ॥ सोवनकार इंहाना मूरख, एहवी न घडे कोई रे ॥ काढी आलो मुऊने जोवा, तत क्षण देश्श जोई राज ॥ हुं० ॥ १२ ॥ जो कारीगर एहवो होये, तो एहवी घडावुं रे ॥ चोयफेर मूद्रिने चूनी, उंल उंले जडावुं राज ॥ हुं० ॥ १३ ॥ नमया तातें ते गणिकाने, दीधी मुद्रिका काढीरे ॥ क्षण एक तो रसनायें वखाणी, आंगलीए करी गाढी राज ॥हुं०॥१४॥ दासीने गणिकायें तेडी, ए मुद्री तुं लेजे रे ॥ जाजे सीधी एहने मेरे, तेह नारीने देजे राज ॥ हुं० ॥ १५ ॥ कहेजे सार्थप तुऊने तेडे, आ मेली सहिनाणी रे ॥ भूलवणीमां नांखी तेहने, आण जे इंहां सपराणी राज ॥ हुं० ॥ १६ ॥ दासी पहोती मेरा सांमी, कर ग्रही मूद्री राखी रे ॥ ए

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

बत्रीशमी ढाल सोहाती, मोहनविजयें नांखी राज॥ हुं० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा

॥ दोहा ॥

गणिका तो बेठी करे, मीठी मीठी वात ॥ कपट न जांणे तेहनुं, नमयाकेरो तात ॥१॥ नमया सुंदरी नेकने, दासी आवी तेह ॥ करी प्रणाम ऊन्नी रही, नांखे एम धरी नेह ॥ २ ॥ सारथ वाह तुमारडे, शुं थाये कहो मूऊ ॥ नमया कहे माहरो पिता, ए संबंध अगुह्य ॥ ३ ॥ दासी कहे धन्य तुमपिता, तुं बे पुत्री जास ॥ उदधितणी पुत्री रमा, तेहवो तुऊ आन्नास ॥ ४ ॥ अमघर तात तुमारडो, बेठो मांऊी गुह्य ॥ तिहांथी तुमने तेडवा, एम मूकी बे मुऊ ॥ ५ ॥ ते रखे जूठुं मानती, ब्यो सहीनाणी एह ॥ तात हाथनी मुद्रिका, एम कही दीधी तेह ॥ ६ ॥

॥ ढाल साडत्रीशमी ॥

सखीरी आयो वसंत अटारडो ॥ ए देशी ॥

सखीरी दासी कहे नमया न्नणी नमया न्नणी ऊगो होय असूर ॥ सुगुण जनमोहना ॥ स० ॥ तात जोता हशे वाटडी ॥ वा० ॥ मंदिर पण बे दूर ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सु० ॥ स० ॥ १ ॥ नहिं आवो हमणां तुमे ॥ ह० ॥ तातजी करशे रीश ॥ सु० ॥ स० ॥ बीजो फेरो मू ऊने ॥ मू० ॥ विशवावीश ॥ सु० ॥ स० ॥ २ ॥ अ म ठकुराणीने पुत्रिका ॥ पु० ॥ छे अति माही तेह सु० ॥ स० ॥ तातें तस देखी करी ॥ दे० ॥ तुमने संनाखां एह ॥ सु० ॥ स० ॥ ३ ॥ तात कहे मुऊ बालिका॥बा०॥ अति माही गुणवंत॥सु०॥स०॥अम ठ कुराणी पण कहे॥प०॥मुऊ पुत्री अति संत॥सु०स०॥४॥ पुत्रीमाटें परस्परें ॥ प० ॥ परठी तेणे होरु ॥ सु० ॥ स० ॥ हूकम तेणें बीहु मेलव्यो ॥ मे० ॥ केहमां दीजें खोड ॥ सु० ॥ स० ॥ ५ ॥ तातें तेणे कारणें ॥ का० ॥ मूऽी दीधी मुऊ ॥ सु० ॥ स० ॥ तत्क्षण मूकी तेडवा ॥ ते० ॥ अहो नमया कहुं तुऊ ॥ सु० ॥ स० ॥ ६ ॥ जोउ निहाली मुऽिका, ॥ मु० ॥ छे तुम तातनुं नाम ॥ सु० ॥ स० ॥ कूड अमें केम नांखीए नां० ॥ सोने न लागे श्याम ॥ सु० ॥ स० ॥ ७ ॥ जो जूठ करी त्रेवडो ॥ त्रे० ॥ तो कांइ न उलखे एह ॥ सु० ॥ स० ॥ कर कंकण शी आरशी ॥ आ० ॥ जोवी पडे छे जेह ॥ सु० ॥ स० ॥ ८ ॥ नमया सुंदरी मुऽि का ॥ मु० ॥ देखी वांच्युं नाम ॥ सु० ॥ स० ॥ तात

Jain Educationa International - For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तणा करनी खरी ॥ क० ॥ में उलखी अनिराम ॥ सु० ॥ स० ॥ ए ॥ तात वचन केम लोपियें ॥ लो० ॥ एम कस्यो मनथी विचार ॥ सु० ॥ स० ॥ गणिका कूड न जाणियुं ॥ न० ॥ नमयायें तेणी वार ॥ सु० ॥ स० ॥ १० ॥ दासी साथे संचरी ॥ सं० ॥ नमया सुंदरी तेह ॥ सु० ॥ स० ॥ जेम कोइ नर जाणे नहीं ॥ जा० ॥ तिण विधे आणी गेह ॥ सु० ॥ स० ॥ ११ ॥ बेसारी प्रछन्न उरडे ॥ उ० ॥ नमयाने सोत्साह ॥ सु० ॥ स० ॥ खबर करी गणिका तणी ॥ ग० ॥ दासीयें समस्यामांहि ॥ सु० ॥ स० ॥ १२ ॥ नमया पासेंथी मुद्रिका ॥ मु० ॥ लीधी करीने प्रपंच ॥ सु० ॥ स० ॥ दीधी गणिकाने दासीयें ॥ दा० ॥ जूउं कपटीना संच ॥ सु० ॥ स० ॥ १३ ॥ सोंपी नमया तातने ॥ ता० ॥ पाछी मुद्रिका तेह ॥ सु० ॥ स० ॥ मलशे कारीगर एहवो ॥ ए० ॥ तोजी मगावशुं एह ॥ सु० ॥ स० ॥ १४ ॥ मेरे पधारो साहिबा ॥ सा० ॥ करवो हशे रोजगार ॥ सु० ॥ स० ॥ राखजो अम ऊपर मया ॥ ऊ० ॥ सोंपो अमने दीनार ॥ सु० ॥ स० ॥ १५ ॥ गणिका वयणें हरखियो ॥ ह० ॥ नमया केरो तात ॥ सु० ॥ स० ॥ सूंपी दीनार ऊठ्यो तदा ॥ ऊ० ॥ देई

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

आशिष विख्यात ॥ सु० ॥ स० ॥ १५ ॥ आव्यो शा ह उतावलो ॥ उ० ॥ मेरे थई उजमाल ॥ सु० ॥ स० ॥ ए कही साडत्रीशमी ॥ सा० ॥ मोहनविजयें ढाल ॥ सु० ॥ स० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा ॥

॥ दोहा ॥

आव्यो नमयानो पिता, मेरामांहि जेवार ॥ न मया सुंदरी पुत्रिका, दीठी नहीं तेवार ॥ १ ॥ अर ही परही अंगजा, जोइ घणुं ए तेण ॥ पण नमया लाने नहीं, खबर न जाणी केण ॥ २ ॥ शाह करे आलोचना, कुण अपहरी गयो एह ॥ एम अण चिं ति किहां गई, हूंती पुत्री जेह ॥ ३ ॥ बब्बर कूलें घर घरे, जोई नमया तात ॥ पण नमयानी सोहणे, को इ न जाणे वात ॥ ४ ॥ सेवकने उलंजडा, देवे नमया तात ॥ मेराथी मुझ अंगजा, किणें अपहरी कहो वात ॥ ५ ॥ शुं जाणुं सेवक कहे, अमने न थइ व्य क्ति ॥ मानव तो कुण अपहरे, थइ कोइ दैवी शक्ति ॥६॥

॥ ढाल आडत्रीशमी ॥

फूलडी काजल सारे राज, देखो नमर नजारा मामारे राज ॥ मृग नयणी नागरी फूली ॥ ए देशी ॥ नमया तात विचारे राज, क्षण क्षणमें पुत्री संज्ञा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रे राज, केम विसारे कहो ॥ गुणवंती ॥ ए आंक णी ॥ कर्म कठिन धीय केरां ॥ रा० ॥ केहवी करेछे घेरां ॥ रा० ॥ कि० ॥ १ ॥ एक तो पीयुडे मूकी ॥ रा० ॥ वनमाहीथी विगर सलूकी ॥ रा० कि० ॥ हुं तिहांथी लइ आव्यो ॥रा०॥ तो ते सूतो सिंह जगाव्यो ॥ रा० ॥ कि० ॥ २ ॥ अपहरी जे लेइ गयो कोइ ॥ रा० ॥ पुरमांहिंतो घणुंए जोइ ॥ रा० ॥ कि० ॥ पुत्री गइ वली हासो ॥ रा० ॥ एतो कोइक हुउं त मासो ॥ रा० ॥ कि० ॥ ३ ॥ दुःख धरतो ते व्यव हारी ॥ रा० ॥ तिहां तेड्या ताम वेपारी ॥ रा० ॥ कि० ॥ वेची करीयाणां सीधां ॥ रा० ॥ मुह मागया पैसा लीधा ॥ रा० ॥ कि० ॥ ४ ॥ प्रवहण सवि स ज कीधां ॥ रा० ॥ सवि साथ बेसारी लीधां ॥ रा० ॥ कि० ॥ बब्बर कूल निवारी ॥ रा० ॥ प्रवहण ते मेळ्यां हकारी ॥ रा० ॥ कि० ॥ ५ ॥ अनुक्रमें नरु अच्च आव्या ॥ रा० ॥ सायर तटें पोत ढीपाव्यां ॥ रा० ॥ कि० ॥ नृगुकछमांही धर्मधारी ॥ रा० ॥ जिनदास अठे व्यवहारी ॥ रा० ॥ कि० ॥ ६ ॥ न मया तातनो तेही ॥ रा० ॥ परिपूरण अठेय स नेही ॥ रा० ॥ कि० ॥ वाहणने आव्यां जाणी,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ रा० ॥ ते सांहमो आव्यो सपराणी ॥ रा० ॥ कि० ॥ ७ ॥ हियडे हियडुं मेली ॥ रा० ॥ तीहां मि लिया बेहु मन मेली ॥ रा० ॥ कि० ॥ नमया तात उल्लासें ॥ रा० ॥ घर तेडाव्या जिनदासें ॥ रा० ॥ कि० ॥ ८ ॥ सुभग रसोइ कीधी ॥ रा० ॥ जीमवा ने थाली दीधी ॥रा०॥ कि० ॥ भोजन करीने उठ्या ॥ रा० ॥ फोफल पण उपर घूट्यां ॥ रा० ॥ कि० ॥ ए ॥ बिहु मित्र बेठा एकांते ॥ रा० ॥ अन्योन्य हूआ उल्लांते ॥ रा० ॥ कीम नमया सुंदरी केरी ॥ रा० ॥ कही वातो अति अभिनेरी ॥ रा० कि० ॥ १० ॥ नमया पुत्री माहारी ॥रा०॥ अहो मित्र भत्री जी ताहरी ॥ रा० ॥ कि० ॥ बब्बरकूल कलोइ ॥ रा० ॥ तिहां अपहरी लेइ गयो कोइ ॥ रा० कि० ॥ ११ ॥ ढुंढी आपणें साथें ॥ रा० ॥ पण पुत्री न आवी हाथे ॥ रा० ॥ एक तिहां गणिका कहावे ॥ रा० ॥ मुऊ तास भरुंसो आवे ॥रा०॥कि०॥ १२ ॥ मानी ठे तास राजाए ॥ रा० ॥ होवे तो केम क हाये ॥ रा० ॥ कि० ॥ जो तमे तिणी पुर जावो ॥ रा० ॥ तो मुऊ पुत्रीनी खबर लेइ आवो ॥ रा० ॥ कि० ॥ १३ ॥ मानीश पाड तुमारो ॥ रा० ॥ इहां

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

कीजें काज मारो ॥ रा० ॥ कि० ॥ पुत्री दुःख के म सहीयें ॥ रा० ॥ अंतर गतिनी केहने कहीयें ॥ रा० ॥ १४ ॥ कही जिनदास सनेही ॥ रा० ॥ अमे कारज करशुं एही ॥ रा० ॥ कि० ॥ एम शुं वे ण वढावो ॥ रा० ॥ फोगट शुं पाड चढावो ॥रा०॥ कि० ॥ १५ ॥ जाइश बब्बर कूलें ॥ रा० ॥ तिहां रहीश वेष अनुकूलें ॥ रा० ॥ कि० ॥ उलवी नमया जिहांथी ॥रा०॥ लेइ आवीश तेहने तिहांथी ॥रा० ॥ कि० ॥ १६ ॥ जो नमया लेई आवुं ॥ रा० ॥ तो मित्रनो मुजरो पावुं ॥ रा० ॥ कि० ॥ मोहने मन स्थिर राखी ॥ रा० ॥ आडत्रीशमी ढाल ए नांखी ॥ रा० ॥ कि० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा.

॥ दोहा ॥

नमया तातें मित्रने, एम कही संदेश ॥ निज प्रवहण सज्ज करयां, पाम्यो आप निवेश ॥ १ ॥ सयल कुटुंब मिल्यां तिहां, नमया जनकें ताम ॥ ब ब्बर कूलतणी कही, वीतक वातो ताम ॥ २ ॥ कहे कुटुंब न करो कीसी, फीकर तुमे मनमांह ॥ नलूं हशे मिलशे सुता, करो हेज सोगांहि ॥ ३ ॥ एह वे नरुयच नयरथी, पोत नरी सुविलास ॥ बब्बर

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

कूल दिशाजणी, चाल्यो ते जिनदास ॥ ४ ॥ सायर लहर झकोलथी, चाले प्रवहण अनुकूल ॥ ते अनुक्रमें आवीया, तरतां बब्बर कूल ॥ ५ ॥ जिनदास लेई भेटणुं, भेट्यो बब्बर राय ॥ पाम्यो मान महोत्सवें, तिम पंचांग पसाय ॥ ६ ॥

॥ ढाल उंगणचालीशमी ॥

हरीयामन लाग्यो, ए देशी ॥ नृप आदेशें नगरमां, वणिज करे जिनदास रे॥ नेही केम वीसरे ॥ वचन संभाखुं मित्रनुं, हियडामां सुविलास रे ॥ ने०॥ १ ॥ सहदेवें मूऊने इहां, पुत्री जोवा काज रे ने० ॥ मूक्यो पोतानो गणी, हेतुउं जाणी आज ॥ ने० ॥ २ ॥ में पण मित्रने कह्युं अहे, आणीश पुत्री तूऊरे ॥ ने० ॥ ते तोहुं भूली गयो, मांड्यो व्यापार अबूऊ रे ॥ ने० ॥ ३ ॥ जाणतो हशे मित्र माहरो, जे एह मुऊ जिनदास रे ॥ ने० ॥ बब्बरमां करतो हशे, मुऊ पुत्रीनी तलास रे ॥ ने० ॥ ४ ॥ ते मुऊने नवि सांभरे, गाजे हे रोहिण मांहिरे, ॥ ने० ॥ ए मुऊने जुगतुं नहिं, केलवुं प्रपंच कांई रे ॥ ने० ॥ ५ ॥ जिहां मनमेलो आपणो तेहथी केम हुवे कूड, रे ॥ ने० ॥ लोक उखाणो एम कहे,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जिहांकूड तिहां धूड रे ॥ ने० ॥ ६ ॥ उतारे कूप कविचें जो सूरिजन सिरदार रे ॥ ने० ॥ नेह वि लूधां मानवी, ते केम करे नाकार रे ॥ ने० ॥ ७ ॥ नेह महाधन जगतमां, जो करी जाणे कोय रे ॥ ने० ॥ फोगटीयांनो नेहलो, निर्वाहो नवि होय रे ॥ ने० ॥ ८ ॥ हिये जूदा होठे जूदा, तेहथी केम पति आयरे ॥ ने० ॥ साचा स्नेहि सजन तणी, ले ठे लोक बलाइ रे ॥ ने०॥ ए ॥ शापुरुषनी प्रीतडी, जेहवी पहाणें रेह रे ॥ ने० ॥ ओछा प्रीतडी जे हवी, पावशें जीरण गेहरे ॥ ने० ॥ १० ॥ करिय नरुंसो आपणो, खोले दीधुं शीषरे ॥ ने० ॥ कूड जो करीयें तेहथी, तो केम सहे जगदीशरे ॥ ने० ॥ ११ ॥ नेह तणें वशें हलधरे, कंधे राख्यो मुकुंद रे ॥ ने० ॥ नाद तणे नेहकरी, हरिण पडे ले फं दरे ॥ ने० ॥ १२ ॥ कहेवायें न एकना, फरीयें जे गेह गेह रे, ॥ ने० ॥ ते जूठा माणसथकी, केम निवहाये, नेह रे ॥ ने० ॥ १३ ॥ चंच पडे पीडाय बहु, गयणे जो उमहे नहि मेह रे, ॥ ने० ॥ गंगा जल नवि पीये, जूवो चातकनो नेह रे ॥ ने०॥ १४ ॥ जो पंकज नवि संपजे, जिहां सरवर अवतंसरे ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ने० ॥ अवर कुक्कुटनी परें, न खणे ते कहियें हंस रे ॥ने०॥ १५ ॥ तेमाटे संसारमां, नेह अनोपम वस्तु रे ॥ ने० ॥ जे नेही हो आपणा, अहोनिश कुशला अस्तु रे ॥ १६ ॥ नेहीनी जे पुत्रिका, जोउं नयर मझार रे ॥ ने० ॥ ढाल ए उंगणचालीशमी, कही मोहनें शिरदार रे ॥ ने० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा॥

॥ दोहा ॥

बब्बरकूलें घरोघरे, जोयुं ते जिनदास ॥ पण ते नमया सुंदरी, नावी मूझ तलास ॥ १ ॥ सूरिजन आगल हुं खरो, केम थाईश हेव ॥ उरग ठबुं दरीनो इहां, न्याय मिल्यो जगदेव ॥ २ ॥ तो पण उद्यम कीजीये, उद्यम वडो संसार ॥ विण धेनु उद्यम थकी, पय पीवे मांजार ॥ ३ ॥ ते जिनदास अहोनिशें, जोवे नगरागार ॥ हवे श्रोताजन सांजलो, नमयानो अधिकार ॥ ४ ॥ जे दिन नमयानो पिता, चाल्यो आपण देश ॥ ते दिनथी हर्षित थई, गणिका चित्त विशेष ॥ ५ ॥ अति धूतारी ठे हारिणी, चिंते चित्तमझार ॥ मुझ आयत्तें ए निश्चें, हुइ हवे ए नार ॥ ६ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ढाल चालीशमी ॥

वीण मा वाईशरे,विठल वारुं तुजने ॥ ए देशी॥ पेखो निगुणीरे केहवुं कहेठे गणिका ॥ गंजारो ऊघाडी काढी, बाहिर नमया वणिका ॥ पे० ॥ ए आंकणी ॥ हियडाथी गाढी आलिंगी, सिंहासन बे साडी, हारिणीए नमयानी आगल, कारमि माया देखाडी ॥ पे० ॥ २ ॥ ताहरे तातें माहरे मंदिर, पुत्री तुजने वेची ॥ ते तुजने कांई न जणाव्युं, जनक वडो तुज पेची ॥ पे० ॥ ३ ॥ रे पुत्री तुं जोय विचारी, तात संबंध तें दीठो ॥ रे जोली एणे संसारे, स्वारथ सहुने मीठो ॥ पे० ॥ ४ ॥ तुझ सरखी पुत्री वेचंतां, एहनुं मन केम चाल्युं ॥ अमे दयालु परोपकारी, मुह मागुं धन आल्युं ॥ पे० ॥ ५ ॥ देख लूच्चाइ ताहरा तातनी, नाम न पूठां फेरी ॥ तातें कीधूं जहेवुं तुझने, तहेवुं न करे वैरी ॥ ६ ॥ एहेवो कुण ठे वेचे परघर, जे आपणडां ठोरु ॥ मायायें नवि ठोडे अलगां, वाठरु आंने ढोरु ॥ पे० ॥७॥ अमें तो तेहने घणुंए वार्यो, पण तेणे न कर्युं वार्युं ॥ ताहरे तातें धनने अरथें, कीधूं अति अविचार्युं ॥ पे० ॥ ८ ॥ निज बालक

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रतिपालवा माटें, हरणी सिंहथी घाये ॥ तेहथी पण तुऊ तात नीपावट, घणुंय कह्यें शुं थाये ॥ पे० ॥ ए ॥ एतो जलुं जे माहरे मंदिर, वेची मद जर माती ॥ जो बीजे वेचत तो ताहरी,कहे ने शी गति थाती ॥ पे० ॥ १० ॥ एहवुं जरुर पड्युं हतुं केवुं, जे तुऊ वेची तातें ॥ हुंतो राखीश पुत्री करीने, माहरे तो आव्युं धातें ॥ पे० ॥ ११ ॥ तुं मूऊ पुत्री हुं तुऊ माता, ए सघलुं छे ताहरुं ॥ तुं माहरें हुं बुं ताहरे, एहवुं मन छे महारुं ॥ पे० ॥ ॥ १२ ॥ माहरे तूऊ उपरें नथी कोई, तुं घरनी ठकुराणी ॥ जे तुं देइश ते हुं लेइश, में एकतारी आणी ॥ पे० ॥ १३ ॥ प्राण तणी परें तुऊने राखीश, दोहिली न करुं क्यारें ॥ साकर घोली दूध ज्युं पाइश, पाणी मागीश ज्यारें ॥ पे० ॥ १४ ॥ हथेलीनीं छायामांहे, अहोनिश राखीश तुऊने ॥ जे कोइ वातें दुःख तुं पामे, देजे उलंजा मुऊने ॥ पे० ॥ १५ ॥ दासीयो ताहरी खिजमत करशे, हुकम हुकममें रहेशे॥ जे तुं कहीश ते निर्वहेशे सघलुं, ताहरुं खुंद्युं खमशे ॥ पे० ॥ १६ ॥ हुं पण बुं राजा सरखी, रखे कांइ प्रीछती बीजी ॥ मुऊ पुत्री जाणीने तुऊने,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सहुको करशे जीजी ॥ पे० ॥ १७ ॥ जोहुं तुऊथी अंतर राखुं, तो परमेश्वर साखी ॥ ए चालीशमी ढाल सनूरी, मोहनविजयें जांखी ॥ पे० ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

वचन सुणी गणिकातणां, नमया थइ निसनेह ॥ चित्तथी करे विचारणा, एम शुं कहे छे एह ॥ १ ॥ धन शुं थोडुं छे घरें, जे एम वेचे तात ॥ हिये उपावी एहवी, केम मनाये वात ॥ २ ॥ दासी मूकी एणीए, मूऊने राखी गेह ॥ तात जणी विप्रता रियो, एहनुं कारण एह ॥ ३ ॥ अनुमानें जोतां थकां, दीसे गणिका एह ॥ मायायें करी मुऊ थकी, मांडे ऊठो नेह ॥ ४ ॥ गणिकायें नमया जणी, लही उदासी जाम ॥ मीठे वचनें चड वडी, मुखथी बोले ताम ॥ ५ ॥ रे पुत्री चिंता तजो, हसो रमो हित आणि ॥ परिकर निकर हे पद्मिनी, पोतानो करि जाणि ॥ ६ ॥

॥ ढाल एकतालीशमी ॥

देशी हमीरियानी ॥ कहे गणिका नमया जणी, सांजल माहरी वात ॥ सुरंगी ॥ खोटी शीकरे शो चना, जूंमी केहनो तात ॥ सु० ॥ १ ॥ मान वचन

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तुं माहरुं, जोगव्य सुंदर जोग ॥ सु० ॥ ए टाणुं रखे चूकती, करीश सनेही संयोग ॥ सु० मा० ॥३॥ बनना कुसुमतणीपरें, जोबन एले म खोय ॥ ए अव सर कुण निर्गमे, एहवो ठे मूरख कोय ॥ सु० ॥ मा० ॥ ३ ॥ एक जोबनने प्राहूणो, केतादिन विलं बाय ॥ सु० ॥ एह कपूरतणी परे, क्षणमें उमीजाय ॥सु०॥ मा० ॥ ४ ॥ चंपक वरणी देहडी, फरी फरी किहां पामीश ॥ सु० ॥ ले लाहो जोबनतणो, जो बुद्धि दे जगदीश ॥ सु० ॥ मा० ॥ ५ ॥ जोबन एह गया पठी, कहे मुऊने तुं शुं करीश ॥ सु० ॥ तुंतो मांखीनी परें, बेठी हाथ घसीश ॥ सु० ॥ मा० ॥६॥ चतुराइ तुऊ जेहवी, तेहवोज पुरुष अमूल ॥सु०॥ गणिकाकुल मारगतणां, कारज कस्य तु कबूल ॥सु०॥ मा० ॥ ७ ॥ आशा अमें तुऊ ऊपरे, राखी ठे मेरु समान ॥ सु० ॥ आशाए इंडां अनल तणां, महोटां होवे निदान ॥ सु० ॥ मा० ॥ ८ ॥ आशा प्रथम देई करी, जे तो करे निराश ॥ सु० ॥ धिक धिक जीवित तेहनुं, जे नवि पूरे आश ॥ सु० ॥ मा० ॥ ॥ ए ॥ जे अमें लीधी तुऊने, ते तो एहज माट ॥ नाकारो जो कहिश तुं, केम पोसाशे घाट ॥ सु० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मा० ॥ १० ॥ मुखने पूढी जोजन करो, तनुने पू
ढीने पहेर ॥ सु० ॥ जाय तु रथमें बेसीने, बन उ-
पवनने शहेर ॥ सु० ॥ मा० ॥ ११ ॥ तेल फूलेलने
अगरजा, तेहमां रहो गरकाव ॥ सु० ॥ नवनवरंगें
हसो रमो, पान सोपारी चाव ॥ सु० ॥ मा० ॥१२॥
वचन सुणी गणिकातणां, बोली नमया ताम ॥सु०॥
बाई तुमें अण बोल्यां रहो, ए तुमचुं नहीं काम ॥
सु० ॥ मा० ॥ १३ ॥ हुं व्यवहारीनी पुत्रिका, तुमे
तो गणिका निदान ॥ सु०॥ ए अणघटतुं कां करो,
कांइक राखो शान ॥ सु० ॥ मा० ॥ १४ ॥ जावा
दो जोलामणी, अमें तुझ बाल गोपाल ॥ सु० ॥
जोउंबुं कुल साहमुं, नहितर देइश गाल ॥ सु० ॥
मा० ॥ १५ ॥ वाड जो गलशे चीजडां, तो रखवा
लशे कोण ॥ सु० ॥ कहिये एहवुं वरे पडे, जेवुं आ
टे लूण ॥ सु० ॥ मा० ॥ १६ ॥ नीचे वाहनें केम च
ढे, जे चढिया सुंढाल ॥ सु० ॥ मोहनविजयें जली
कही, एकताल्लीशमी ढाल ॥ सु० ॥ मा० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

नमयाने गणिका कहे, पुत्री निसुण जगीश ॥
आरुं आरुं बोलतां, एम केम तुं बूटीश ॥ १ ॥ जे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

केड्ये लाग्यां खरां, ते तुऊ तजशे केम ॥ विगर दि लासायें अली, अमने तुं मत ठेड ॥ २ ॥ जेह पड्युं मादल गले, दैवतणुं तुं जोय ॥ विणवाये केम बूटीये, एम जांखे सहु कोय ॥ ३ ॥ जास वशे जे को पड्या, छोड्या हीज छुटाय ॥ ते जे कहे ते कीजीयें, एम कीधें शुं थाय ॥ ४ ॥ अंगीकार करो तुमे, आ मंदि र आचार ॥ जेह कहो ते ऊगरे, मानो एह मनुहार ॥५॥ नमया तव विलखी थई, मुख मेहले निःश्वास ॥ दुःखजर दाऊी विरहिणी, ऐ ऐ करे विषास ॥ ६ ॥

॥ ढाल बहेंतालीशमी ॥

घेरी घेरी पण घेरी रे, मोकुं या विरहाने घेरी ॥ ए देशी ॥ घेरी घेरी पण घेरी रे, मुने ए गणिकाए घेरी ॥ मु० ॥ एक तो महारे कंते मुऊने, वनमां की धी अनेरी ॥ तास संदेशो न आव्यो मुऊने, केणे न कह्यो फेरी रे ॥ मु० ॥ १ ॥ मात पिता पण दूरें रहीयां, केही विध होशे मोरीरे ॥ मु०॥ नूरकी नां खी एणे नंजेरी, केरे मूकी चेरी रे ॥ मु० ॥ २ ॥ मे कांइ दैवनी कीधी दीसे, मोटी चोरी हेरी रे ॥ सां जले कुण कहुं हुं केहने, माहरा मनडा केरी रे ॥मु० ॥३॥ कल्प लताशी पहेली करीने, कीधी दीसे कंथेरी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रे ॥मु०॥ नाह वियोगे हियडामांहि,खटके खरी खरेरी रे ॥मु०॥ ४ ॥ ए गणिकाने वशे हुं आवी,निसरी न शकुं अवेरी रे ॥मु०॥ जेहथी शील रतन रहे माहरुं, केही बुद्धि अनेरी रे ॥ मु० ॥ ५ ॥ जिहां गये रहे शील सलूणुं, कोण देखाडे ते शेरी रे ॥ मु० ॥ दैव अटारो शीयल उदालण, गणिका किहांथी उदेरी रे ॥ मु० ॥ ६ ॥ खारो ऊंमो नीम जवो दधि, शीलता मीठी वेरी रे ॥ मु०॥ नमया विलपे जेम मृग विलपे, देखी दूर आहेरी रे ॥ मु० ॥ ७ ॥ ए तो माहरुं कह्युं न माने, मांमी बेठी बखेडी रे ॥ मु० ॥ जे कोइ नारी धूतारी जगमां, तेहमां एह वडेरी रे ॥ मु० ॥ ॥ ८ ॥ नांखे नमया सांभल गणिका, मुऊथी रहेजे परेरी रे ॥ तहारुं कीधुं तुहीज पामीश, आवीश जो तुं आरेरीरे ॥ ए ॥ शीलरतन राखवा कारण, नाखी तास नीठेरी रे ॥मु०॥ निसूणी गणिका घणुंए कूदी, कही जेहवी वठेरी रे ॥ मु० ॥ १० ॥ बोली गणिका रे रे बाला, तुं शुं अमथी जलेरी रे ॥ मु० ॥ तुं जो बननुं फल शुं जाणे, ठे तुं हजीअ अलेरी रे ॥मु०॥ ॥ ११ ॥ फूल गुलाबनी शी गति जाणे, दीठी जेणे कणेरी ॥ मु० ॥ दोहिली आवे तनुचतुराइ, मूढमति

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जो घणेरी रे ॥ मु० ॥ १२ ॥ कूपक मेरूक सायर केरी, जाणे शुं ते लहेरी रे ॥ मु० ॥ देव कुसुमनो स्वाद शुं जाणे, चाखी जेणें बहेरी रे ॥ मु० ॥ १३ ॥ लारु लराावी लारुकवाही, मायें तुजने उछेरी रे ॥ मु० ॥ त्यारे बोले बे एम तुं त्रटकी, होये जीन्न ब बेरी रे ॥ मु० ॥ १४ ॥ जो जो नमया बुद्धि उपाइ, राखशे शील अप्रकंपी रे ॥ मु० ॥ मोहनविजयें ढा ल अनोपम, बहेंतालीशमी जंपी रे ॥ मु० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

कंहे नमया गणिका न्नणी,म म कर जूठी वात॥ तुब वचन केम जंपियें, केम करीयें परतात ॥ १ ॥ तें ताहरां कीधां करम, न्नोगव्य तुं मतिमंद ॥ पण बीजाने शावती, पाडे एहवे फंद ॥२॥ तीन पंचासां ताहरे, जीववुं दीसे तुच ॥ दीये बे जे कारणे,ए शी खामण मुच ॥३॥ वरसे शशी अंगारडा,पयोधि बांके मर्याद ॥ नासे सिंह शियालथी, सुधा निवारे स्वाद ॥ ४ ॥ जो ते सघलां नीपजे, ते सांन्नल अवली ल ॥ परनरथी परवश हुइ, सतियो न मूके शील ॥५॥ ते माटे तुजने किशुं, कहुं घणुं हित लाय ॥ तुं रहेजे इज्जत थकी, न्नांखुं गोद बिछाय ॥ ६ ॥

॥ ढाल त्रेंतालीशमी ॥

हुं तुझ वारुं कान जावा दे ॥ए देशी॥ हुं तुझ वारुं गणिका जावा दे, माहरो सनेही वाहलो रह्यो छे दूर रे ॥ मूक मारो केडलोने, रही हुं हजूर रे ॥ मुने जावा दे ॥ हुं० ॥ कां नवि जाणे मूंडी, कारिमो संसाररे, रे रे तुं दाझेलाने कां दीये खार ॥ मू० ॥ हुं० ॥ १ ॥ जेहने सूहायें तेहने नांखीयें एह रे, सूणी एहवी वातडीने कंपेछे देह ॥ मू० ॥ गणिकायें विचाखुं एतो सीधी नवि जोय रे, एहने देखाडुं नीति तो वश होय ॥ मू० ॥ हुं० ॥ २ ॥ नांडनी नेंस मांगे प्रासुए तेह रे, तिलने पील्याविना नव वे सनेह ॥ मू० ॥ सीधी आंगलीए क्यारें, नवि नीकले क्षीर रे॥ इहां कोण गोडावाने आवे छे नीर ॥ मू० ॥ हुं० ॥ ॥ ३ ॥ माहरे वशें आवी तें किहां जाय रे, एक वार पूछुं एहने वातडी बनाय ॥ मू० ॥ पेट पछुंसी शाने शूल उपाय रे ॥ कडुउं महोरुं जोतुं अतिमथ्युं थाय रे ॥मू०॥हुं०॥४॥ जी जी करतां तुंतो थायछे शेर रे, कांइ हठ एवडो तुंताणे छे फेर ॥मू०॥ नहिंतो हुंए तुने चाबकानी गोर रे, घाली एणी कोटडीमां कूटी श जोर ॥ मू० ॥ हुं० ॥ ५ ॥ एहवे गणिकानी कूखें

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

उपन्युं शूल रे, जीवडलो मोंघो हूउं तस प्रतिकूल ॥ मू० ॥ शील सुरंगा केरो महिमा जगमांय रे, शील सखाइ तेहने केम दुःख थाय ॥ मू० ॥ हुं० ॥ ६ ॥ गणिका तो पहोंती तिहांथकी कोइक गतिमांय रे, जेह जे करे छे तेहने शी गति थाय॥मू०॥ उन्नी आ लोचे नमया सुंदरी ताम रे, थोडेशे हेतें ए तेणें श्यां कर्यां काम ॥ मू० ॥ हुं० ॥ ७ ॥ जगमां जीव्यानो जनने एह विश्वास रे, मांडीने बेसे छे एवी फूठी फूठी आश, ॥ मू० ॥ हवणां ए बेठी हूंती होयने नाथरे, पण को सनेही एहने नवि हुउं साथ ॥ मू० ॥ हुं० ॥ ८ ॥ ऐ ऐ केहवो छे एहवो जूठो संसार रे, मूकीने जोवंता गइ एहवां आगार ॥ मू० ॥ जूठानो नरंसो एतो केटलो करायरे, साचा रे सनेही मोटा खोटा हूया जाय ॥ मू०॥ हुं०॥ए॥ एहवी फूरेछे उन्नी नर्मदा नारी रे, गणिकानो रा जाने पहोतो संदेशो तेवार ॥मू०॥ राजाए विचार्युं एहवुं ए गणिकाकेरो माल रे, आव्यो छे अजाण्यो हाथ हुआवुं निहाल ॥ मू० ॥ हुं० ॥ १० ॥ जग मां जीव्यानो महोटो नेहो निर्धार रे, नहीं तो निःस्नेही सहूको क्षीणके मझार ॥ मू० ॥ सेवकने

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

संप्रेष्या नूपें गणिकाने आगार रे ॥ आव्या ते दोडता तिहां न कस्यो विचार ॥ मू० ॥ हुं० ॥११॥ धसमसता पेठा ते जेहवे गेह मझारी रे, तेहवे तिहां दीठी नयणे नर्मदानारी ॥ मू० ॥ पडि आ लोचें नोला तस देखी देह रे ॥ सहुको विचारे कुंण अंगना एह ॥मू०॥हुं०॥१२॥ हारिणीयें दासी सुरंगी, एहवी राखीछे आगार रे, जइने राजाने क हीयें, एहनो तेह विचार रे ॥ मू०॥ सेवक तो सहु कोय पाठा आव्या दरबार रे, राजाने पयंपे एहवुं करी मनुहार ॥ मू०॥हुं०॥१३॥ हारिणी जे गणिका ते तो, पोहती परलोक रे ॥ पण केम लीजें एहनी, मायानो संजोग ॥मू०॥ एहने आवासें एहथी रूडी एक नारी रे, दीसे छे अमीणे जाणे राख्यो एणे नार ॥ मू० ॥ हुं० ॥ १४ ॥ एहने जो नयणे देखो, आवे तव दाय रे ॥ बीजीतो तारीफी एहनी, केटली कराय ॥ मू० ॥ नांखी सुरंगी चंगी, त्रेंतालीशमी ढाल रे ॥ मोहनना कह्याथी वातो, लागे छे रसाल ॥ मू० ॥ हुं० ॥ १५ ॥ सर्व गाथा ॥

॥ दोहा ॥

कहे नूपति निज सचिवने, जे गणिकाने गेह ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सुंदर छे एहवी त्रिया, तेडी आणो तेह ॥ १ ॥ हा रिणी सरसी जोइ ए, तो ते तेहने गाम ॥ आपण तेहने राखियें, दीजे छत्री काम ॥२॥ सजिव नृपति आदेशथी, आव्यो गणिका गेह ॥ दीठी नमया सुंदरी, मनोहर गौरी देह ॥ ३ ॥ कहे सचिव न मया जणी, रे सुकुलिणी नार ॥ तूठो परिपूरण खरो, तुझ ऊपर किरतार ॥ ४ ॥ बब्बरकूल नरेश नी, करय उलग मनरंग ॥ प्राणतणीपरें राखशे, रहेजो सदा अनुषंग ॥ ५ ॥ धण कण कंचन वसन गृह, छे गणिकाने गेह ॥ ते सवि तुझने सोंपशे, मान्य वचन मुझ एह ॥ ६ ॥

॥ ढाल चुम्माल्लीशमी ॥

काल्ली ने पील्ली वादल्ली ॥ ए देशी ॥ नमया स चिव कह्या थकी साजनां, शोचे चित्त मझार ॥ वि षयातुर राजा थयो साजनां, ऐ ऐ सरजणहार ॥ जोजो रे हवे नारी चरित्र, करशे नमया नार ॥१॥ ए आंकणी ॥ नृप पासें लेइ जाशे ॥सा०॥ मंत्री वीश वा वीश ॥ राजा मुजने प्रार्थशे ॥ सा० ॥ त्यारें हुं शुं करीश ॥ जो० ॥ २ ॥ श्यो जोरो अबलातणो ॥सा०॥ शील हुं राखीश केम ॥ परवश पडीयां मानवी ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सा०॥ कुण विध राखे नेम ॥ जो० ॥ ३ ॥ अणबोली नमया रही ॥ सा० ॥ भांखे हो मंत्री ताम ॥ रे गुण वंती गोरडी ॥ सा० ॥ केम एम बेठी आम ॥ जो० ॥ ४ ॥ बेसो एणे सुखासने ॥ सा० ॥ खोटा म करो विचार ॥ राजाने आवी मलो ॥सा०॥ रहो अहनिश दरबार ॥जो०॥ ५ ॥ अति हठ ताणी मंत्रीए ॥सा०॥ ततक्षण नमया नार, बेठाडी ऊपाडीने ॥सा०॥ सुंदर रथह मझार ॥ जो० ॥ ६ ॥ परवश ए नमया पडी ॥ सा० ॥ अतिही धरे मन लाज, जाणीयें पंजरमां पड्यो ॥ सा० ॥ वनवासी मृगराज ॥ जो० ॥ ७ ॥ पर म मंत्र मनमें गणे, चौद पूरवनो जे सार ॥ रथ बेठी आवी सती, एहवे चहूटा मझार ॥ जो० ॥ ८ ॥ त व तिहां शीलने राखवा ॥ सा० ॥ नमयायें कीधो विचार ॥ जो छल इहां कोइ करूं ॥सा०॥ तो रहे शील उदार ॥ जो० ॥ए॥ दोहा ॥ बुद्धि शरीरां नीपजे, जो उपजे ततकाल ॥ वानर वाघ विलोवियो, एकलडे शीयाल ॥जो०॥ १० ॥ बुद्धिथकी मंत्रीश्वरे ॥ सा० ॥ भोलव्यो यक्ष ऊमाल ॥ बुद्धि हरी कपि रोलिया ॥ सा० ॥ एकलडे शीयाल ॥ जो० ॥ ११ ॥ नमया राखण शीलने ॥ सा० ॥ मंत्रीने विप्रतार ॥ रथहुंती कूदी

पडी, परवरि खाल मझार ॥ जो० ॥ १२ ॥ कादवथी तनु लीपीयुं ॥ सा० ॥ देखे लोक समक्ष ॥ जाणीने घहेली थइ ॥ सा० ॥ जाणे वलग्यो यक्ष ॥ जो० ॥ १३ ॥ चीर पटोली कंचुकी ॥ सा०॥ कीधां ते खंडो खंड ॥ जाणीने कांइक कहे ॥ सा०॥ मुखथी करे आ क्रंद ॥ जो० ॥ १४ ॥ बीहाडे लोको जणी ॥ सा० ॥ बू टा केश कराल ॥ क्षिण हसे क्षिणके रुवे ॥ सा० ॥ क्षणके विलोके खाल ॥ जो० ॥ १५ ॥ एम असमं जस देखीने ॥ सा० ॥ मंत्री विनवे भूपाल, स्वामीजी ते सुंदरी ॥ सा० ॥ थइ दीसे छे कराल ॥ जो०॥१६॥ रूप अनोपम छे घणुं ॥ सा० ॥ पण तस परवश देह, ते केमही साजी हुवे ॥ सा० ॥ तो बहु उपजे स नेह ॥ जो० ॥ १७ ॥ मंत्री वचन सूणी करी ॥ सा० ॥ आलोचे महीपाल, मोहनविजयें वर्णवी ॥ सा० ॥ चुम्मालीशमी ढाल ॥ जो० ॥ १८ ॥ सर्व गाथा ॥

॥ दोहा ॥

महीराज मंत्री भणी, कहे सांभल्य मुज वेण ॥ नारीने साजी करे, एहवो कोइ छे सेण ॥ १ ॥ भूपें पडह वजावियो, बब्बरकूल मझार ॥ जे नमया साजी करे, ते लहे लाख दीनार ॥ २ ॥ एहवे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

केणे ब्राह्मणें, पडह छब्यो तेणीवार ॥ एहने हुं सा
जी करुं, एहमे किस्यो विचार ॥ ३ ॥ नृप सेवक ब्रा
ह्मण जणी, आण्यो राजा पास ॥ महाराज ते ना
रीने, तेडावो आवास ॥ ३ ॥ नृपें अनुचर तेडवा,
मूक्या तास तिवार ॥ पकडीने दरबारमां, आणी
नमया नार ॥ ५ ॥ एक अलोधी ओरडी, बेसाडी
तिण मांहि ॥ आव्यो ब्राह्मण मंत्रवी, नमया पास
सोत्साहि ॥ ६ ॥ दूर विसर्ज्या लोकने, ब्राह्मण पूरी
द्वार ॥ नमयाने साजी करे, जोजो मूढ गमार ॥७॥

॥ ढाल पिस्तालीशमी ॥

साहेबा मोतीडोने हमारो जीवनां मोती० ॥
ए देशी ॥ ब्राह्मण जोलो जेद न लेहेवे, नमया आ
गल धूप उखेवे ॥ नर्मदा नवरंगी, सलूणी शील
सुप्रसंगी ॥ मंत्र जणीने ऊजणी नाखे, सती शि
रोमणि सर्वे सांखे ॥ नर्मदा नवरंगी ॥ १ ॥ सुंदरी
जाणे ब्राह्मण जोलो, फोकट श्यो मांड्यो छे ए रोलो
॥न०॥ जेम जेम ब्राह्मण ओंजे दूणे, तेम तेम सा उत्त
मांग धधूणे ॥न०॥ २ ॥ एहवे नमया बुद्धि उपावे,
काढीदंत ब्राह्मण पर धावे ॥न०॥ बीहीनो वाडव ऊठी
जाग्यो, काइक पहेखुं कांइक नागो ॥न०॥ ३ ॥ द्वार

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

उघाडी ब्राह्मण दोड्यो, जाणीये वाळीथी रेवत छोड्यो ॥ न० ॥ आगलें मंत्रवी पूंठल नमया, चहु टा लगे एम करतां तेसुं गया ॥ न० ॥ ४ ॥ लोकें तेह ब्राह्मण जगास्यो, जूउं मंत्रवादीए मंत्र हका स्यो ॥ न० ॥ नमया जिन गुण कंठे गाये, जाणीयें सुकंठे कोइक मोरली वायें ॥ ५ ॥ बब्बर चहूटे न मे थइ धीठी, एहवे जिनदासें ते दीठी ॥ न० ॥ पुरजन अलगा करीने पूछे, कहे सुंदरी कारण एह शुं छे ॥ न० ॥ ६ ॥ जिनना गुण तुं गाय छे रूडी, तो केम एम पुरमें नमे ऊूंकी ॥न०॥ बाहेर एहवी अंतर काहि, तो एम लोक कां मूक्यां वाही ॥न०॥ ७॥ दीसे श्रावक कुलनी जाइ, साच कहो मुज आ गल बाइ ॥न०॥ छे कोण तुं पुत्री छे केहनी, जाणुंछुं हुं तुं छे रे जेहनी ॥ न० ॥ ७ ॥ हुं पण श्रावक छुं सू ण बहेनी, मूज आगल तु साचुं कहेनी ॥ न० ॥ कहे नमया हलूए शुं फेरी, ए शी वेला पूछ्या केरी ॥ न० ॥ ए ॥ जो तु साचोछे जिननो पंति, तो मुज पूछ जे कहेशुं एकंति ॥ न० ॥ जे अवसर प्रीछे ते काह्यो, जे नवि जाणे ते फोकट वाह्यो ॥ न० ॥ १० ॥ तव जिनदास छानो थइ रहीयो, नमया नेद न कोइने

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

कहियो ॥ नमया पूंठ जमे निशदीहे, पण नवि बोलावे करि जीहे ॥ ११ ॥ नमया जमे पुरमांहे एकाकी, जाणीये परम महारस ढाकी ॥ न० ॥ राजा केइ उपाय करावे, पण नमयाने लेखे नावे ॥ न० ॥ १२ ॥ आणत मूकने कोण गवाडे, जाणीने उंघे तेने कोण जगाडे ॥ न० ॥ एहवे कौमुदी महोत्सव आवे, पुर जन सघला वनमां जावे ॥न०॥ १३ ॥ नमया पण जिनवरने गेहें, ऊभी स्तुति करे पूरण नेहें ॥ न० पूंठले पण जिनदास आव्यो, नमयाथी धर्म सनेह उपाव्यो ॥न०॥ १४ ॥ नमया आघुं पाछुं जोइ, जिनदास हूंती वातें हूइ ॥ न० ॥ हुं वर्धमान नयरनी वासी, माहरो जनक सहदेव विसासी ॥ न० ॥ १५ ॥ परणी मूजने सकोमे नाहे, पण ते मूकी गयो वनमांहे ॥ न० ॥ तिहां मुज तात मल्यो अणजाणी, तिहांथी इहां इण पुरमांहे आणी ॥न०॥ १६ ॥ उंलवी गणिकाए मूजने राखी, राख्युं शील एम करी सुसाखी ॥न०॥ पिस्तालीशमी ढाल सवाइ,सुंदर मोहनविजयें गाइ ॥ न० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

नमयाने जिनदास कहे, हुं पण जाखुं सच्च ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पुत्री हुं जिनदास अहुं, नयर जिहां नरुअच्च ॥१॥ ताहरे तातें मूजने, कही तहारी सवि वात ॥ हुं हुं नेही तेहनो, मध्यंतर विख्यात ॥ २ ॥ तुऊने जोवा कारणें, हुं इहां आव्यो एम ॥ में पण तुज राखी गुप्त करी, कहो प्रगट हुइ केम ॥ ३ ॥ हवे तुं मु जने मली, न धरिश केहनी बीक ॥ तुं मत जाणे एकली, तुं छे मूज नजीक ॥ ४ ॥ तुं छे पुत्री मुज तणी, मुजथी म करीश लाज ॥ जेम तेम करी संगे करिश, जो करशे जिनराज ॥ ५ ॥ एम कही जिनदास ते, आव्यो तुरत वखार ॥ दाम सयल गांठे करी, वाहण कर्यां तैयार ॥ ६ ॥

॥ ढाल बेंतालीशमी ॥

झांझरीया मुनिवरनी देशी ॥ राजायें तव सांज ल्युं जी, प्रवहण सजे जिनदास ॥ सेवक मूकी तेह ने जी, तेडाव्यो निज पास ॥ १ ॥ गुणमणि गोरडी नमया सुंदरी नारी, ए आंकणी ॥ कहे जिनदास नरेसरने जी, फरमावो महाराज ॥ केम मुजने ते डावियो जी, सेवक मूकी आज ॥ गु० ॥ २ ॥ कहे नृप कारज माहरुं जी, सांजली करजे तुं एक ॥ इहां एक नमया सुंदरी जी, ते अति छे निर्विवेक ॥गु०॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ३ ॥ चौहटे गलीयें चाचरें जी, ते अति करे तो फान ॥ बीहाडी बीहती नथी जी, फरती करती तोफान ॥ गु० ॥ ४ ॥ नयर कस्युं इण नारीयें जी, वानर वनह समान ॥ कोइ आडो नवि उतरे जी, ए नमयाहो तान ॥ गु० ॥५॥ ते माटे तुमे एहने जी, घाली पोतमकार ॥ कोइ परदेशे मूकजो जी, सापण परें निरधार ॥ गुं० ॥ ६ ॥ बे परदेशी प्राहु णी जी, थइ वली एहवे वेश ॥ एहनी कुंण करे चाकरी जी, लेइ चालो परदेश ॥ गु० ॥ ७ ॥ कहे जिनदास हसी करी जी, वारु जी महाराज ॥ परवश नमया नारीने जी, प्रवहण ठावुं आज ॥ गु० ॥ऊ॥ करी प्रणाम नररायने जी, ऊठ्यो ते जिनदास ॥ धसमसतो हेजे नस्यो जी, आव्यो नर्मदा पास ॥ ॥ ए ॥ ऊठ्य पुत्री मुऊ प्रवहणे जी, आवी बेसो हेव ॥ नमया निसुणी दोडती जी, जइ बेठी तत खेव ॥ गु० ॥ १० ॥ नवरावी नमया नणी जी, प्रग ट्युं रुप यत्न ॥ जेम कचरो धोया पठी जी, ऊलहले जेहवुं रत्न ॥ गु० ॥ ११ ॥ बेसाडी महोत्सवें जी, पेहराव्या शणगार ॥ मुंहगा नांड तणी परें जी, राखी तेणीवार ॥ १२ ॥ प्रवहण ताम हंकारियांजी,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सयल मनोरथ सिद्ध ॥ नर्मदापुरवर आवीयां जी, जीतना जंगी दीध ॥ गु० ॥ १३ ॥ उतर्या प्रवहण थकी जी, नमयाने ससनेह ॥ अति उत्सव आडंबरे जी, आणी तातने गेह ॥ गु० ॥ १४ ॥ नमया देखी तातने जी, उलटियो उछरंग ॥ सयल कुटुम्बतणां तिहांजी, हरख्यां अंगोअंग ॥ गु० ॥१५॥ हेज तणां आंसु झरे जी, अमीये उठ्या मेह ॥ नमया आनंदशुं वसे जी, निज माताने गेह ॥ गु० ॥ ॥ १६ ॥ हसे रमे क्रीडा करे जी, टाल्यो दुःख जंजाल ॥ मोहनविजयें वर्णवीजी, बेंतालीशमी ढाल ॥ गु० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा.

॥ दोहा ॥

नमया तात नणी तिहां, सोंपीने जिनदास ॥ चाल्यो तिहांथी अनुक्रमे, आव्यो निज आवास ॥ ॥ १ ॥ नमया तातने घरे, रहे सदा मनरंग ॥ सहीउंशुं क्रीडा करे, निर्विकार निःशंक ॥ साधु अवज्ञाथी इणे, केतां सहियां दुःख ॥ पण एक शील सहायथी, पुण्ये पामी सुख ॥ ३ ॥ तात कहे नमया नणी, रे पुत्री तुज कंत ॥ कहेतो तेडावुं इहां, मूकीने उदंत ॥ ४ ॥ पीयु गुण संभारे सती,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रही अणवोल्ली ताम ॥ तात सुता मन राखवा, नी-पाव्युं जिनधाम ॥ ५ ॥ अति उत्तम उन्नत सुजग, जिन मूर्ति तस मद्य ॥ नमया नित्य पूजा रचे, वा जा गाजां सद्य ॥ ६ ॥

॥ ढाल सुडतालीशमी ॥

कानुडो तो वेण वजावें कालिंदीने कांठे ॥ ए देशी ॥ वर्धमानपुर परिसरमांहि, एहवे सद्गुरु आव्या ॥ पंचाचार विचारे पूरा, सहुकोने मनजा व्या ॥ १ ॥ नमया तात कुटुंब संघातें, गुरु चरणां बुज नेट्यां ॥ जेहना दरिसण दीठा हूंती, नव नव पातक मेट्यां, ॥ २ ॥ धर्माशीष सूरीश्वर नांखे, सहुको आगल बेठां ॥ गुरु उपदेश तणा मंदिरमां, नवियण हेते पेठां ॥ ३ ॥ धर्मोद्यम कीजे रे प्राणी, सुणीए जिनवर वाणी ॥ अमिय समाणी सफुरु शिक्षा, धारीजें हित आणी ॥ ४ ॥ जाणेछे ए जीव बिचारो, छे सघलुं ए मोरुं ॥ पण अभ्यंतर नि-रखी जोतां, शुं देखे छे तोरुं ॥ ५ ॥ तात जातने मात सुता पति, छे विपरीत सगाइ ॥ पण अंतर मेही मदमातो, तेणे रह्यो लयलाइ ॥६॥ पोतानो करी गणीयें जेहने, ते होवे साहमो वेरी ॥ छे संसार

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तणी गति एहवी, वली गति कर्मह केरी ॥ ७ ॥
काची काच घटी समकाया, कूडी शी तस माया॥
पंथीपरें विसामो जगमें, कुण डुर्बल कुण राया ॥
॥ ८ ॥ ढे संसार विचारी जोतां, बाजीगरनी बाजी
क्षणभंगुर अनित्य पदारथ, तो पण होवे राजी॥९॥
जेम वंध्याए सुहणे दीठो, जाणे सुत मुज आयो ॥
दीधुं नाम विश्वंभर एहनुं, हालरुए डुलरायो॥१०
जव सा जागी रोवा लागी, किहां गयो में दीठो॥
ते जेम खोटुं तेम जग खोटो, पण विषया रस
मीठो ॥११॥ इंद्र जाल विद्या रमनारा, रवि सेवक
थइ फूफे ॥ अंगकरंग घणाघण वीरुआ, जाण तो
साचुं बूफे ॥ १२ ॥ नारी पति साथे पावकमां, पेसी
वली सती थाये ॥ ए कूडुं तो नहीं केम साचुं, करीने
कोइथी गहायें ॥ १३ ॥ पाणीना पर्पोटा जेहवी,
जेम पाणीमांहे पतासो ॥ जेम काचो घट नीरें न
रियो, तेवो देह तमासो ॥ १४ ॥ समकित विण ए
जीव बिचारो, दोडे ढे हा डुंतो ॥ एणे एकेही
नवि मूक्यो, एके ठाम अबूतो ॥ १५ ॥ करशे धर्म
ते सुखियां थाशे, दीधो एम उपदेश ॥ रोमांचित
सवि पर्षद हूई, थयो समकित उपवेश ॥ १६ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नमया अति हरखी हश्यामां, निसूणी वयण रसाल ॥ मोहनविजयें रूडी भांखी, सुडतालीशमी ढाल ॥ १७ ॥ सर्व गाथा.

॥ दोहा ॥

नमया तात तिणे समे, कर जोडी कहे एम ॥ मुऊ पुत्री नमया सती, थइ वियोगिणी केम ॥ १ ॥ पूरवभव एणें किस्यां, कीधां कर्म अघोर ॥ जे एम इहां तिहां रडवडी, गुंमी बूटे दोर ॥ पाठांतरे गिरि वन गुहिर कठोर ॥२॥ गुरु कहे देवाणुप्रिय, सांभलो कहुं विरतंत ॥ तुऊ पुत्री छे महासती, गुण एहना छे अनंत ॥ ३ ॥ कीधां कर्म न बूटीयें, विणभोग व्ये कहाय, पूरव भव नमया तणो, सांभलजो हित लाय ॥ ४ ॥

॥ ढाल अडतालीशमी ॥

वाधाराजा वनरी ॥ ए देशी ॥ गिरि वैताढ्य पचास जोयणनो, पोहलो तेह प्रमाण्यो हे ॥ ससनेही नमया पूरव भव उपदेशे, तेम उंचो पण वीश जोयणनो, आगम मांहि वखाण्यो हे ॥ ससनेही० ॥१॥ तास शिखरथी नर्मदा तटिनी, पसरी एह जलपूरी हे ॥ स० ॥ सायरपूर भली अवगणती, विमल कम

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ले ससनूरी हे ॥स०॥ २ ॥ ए तटिनीनी हुती अधि
ष्ठाता, नर्मदानामे देवी हे ॥ स० ॥ रूडे रूपें रमऊ
म करती, कुसुम कुटुम्बे सुसेवी हे ॥ स० ॥ ३ ॥
एकदा नर्मदा नदी उपकंठे, धर्मरुचि मुनिराया हे
॥ स० ॥ निर्मल मन मुनिरह्या काउसग्गे, कोमल
कमल ज्यू काया हे ॥ स० ॥४॥ लागे ताप तपननो
तातो, लूटे अति परसेवो हे ॥स०॥ एणीपरें वैराग्य
दशायें, चाखे तपनो मेवो हे ॥स०॥५॥ ऊजो व्याई
ध्याननी ताली, नासायें दृग स्थापी हे ॥स०॥ मुनि
साक्षात्पणे प्रतिभासे, उपशम रसना व्यापी हे ॥
स०॥६॥ नर्मदा देवीये मुनिने दीठो, देखी रोष न
राणी हे ॥ स० ॥ चिंते माहरा तटने कंठे, कुण ए
कुत्सित प्राणी हे ॥ स० ॥ ७ ॥ महेली काया
वली मेले कपडे, मुऊ तटिनी अन्नडावे हे ॥स० ॥
एहने वेहवरावुं वहेतां जलमां, दील मेलुं रीसावी हे॥
स० ॥ ८ ॥ मुनिने क्रोधवा देवी विरचे, वाघ सिंह
विकराल हे ॥ स० ॥ करी जंघाइ पुछ उछाली, ते
साहमी धे फाल हे ॥ स० ॥ ए ॥ थइ गज शुंढा दं
के ग्रहीने, मुनिने उंचो उछाले हे ॥ स० ॥ पण मुनि
अचल महाचलनी परें, ध्यानथी मन नवि टाले हे॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ स० ॥ १० ॥ तव सा देवी मुनि मुख पेखी, चिंते केम नवि कंपे हे ॥स०॥ एम पराजविये छे तो पण, कडवुं वयण न जंपे हे ॥ स० ॥ ११ ॥ धन्य धन्य एहने ए हवी धीरता, सा पूछे कर जोडी हे ॥स०॥ कुंण तुं स्वा मी इहां केम ऊजो, कहो मुनि आमलो छोडी हे ॥ स० ॥ १२ ॥ कहे मुनि अमें साधु जिणंदना, पंच म हाव्रतधारी हे ॥ स० ॥ ध्यान धरी ऊजा लुं सुंदर, निरखी नूमिका सारी हे ॥ १३ ॥ देवी कहे अहो साहु शिरोमणि, खमजो मुऊ अपराध हे ॥ स० ॥ में तुमने एहवा नवि जाण्या, अबुऊि जेम अगाध हे ॥ स० ॥ १४ ॥ मुनि कहे अमने क्रोध न होवे, खंति तणाबुं अन्यासी हे ॥ स० ॥ एश्ये लेशे सां नल्युं नरगें, जे जीव सहे नरगावासी हे ॥ स० ॥ १५ ॥ नेही निस्नेही बिहु छे सरीखा, अमें लेखवीयें एम हे ॥ स० ॥ जे जेहवुं करशे तेहवुं ते लहेशे, प ण अमे कोपूं केम हे ॥ स० ॥ १६ ॥ नमया देवी सु प्रसन्न थश्ने, सांनली वचन रसाल हे ॥ स० ॥ मो हनविजयें मीठी नांखी, अडताशमी ढाल हे ॥ स० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ दोहा ॥

नमया देवी आगले, कहे तपोधन ताम ॥ प्राणीने नवि पीडीयें, अहो सूरि विण काम ॥ १ ॥ दया सुधा कुंभी अछे, जगमांहि निःशंक ॥ तिहां मज्जन करतां मिटे, कल्मष तणूं कलंक ॥ २ ॥ काम दुघा सम ए दया, इछित सुख दातार ॥ सकल धर्म अग्रेसरी, जांखे जगदाधार ॥ ३ ॥ दया विहूणा बापडा, चउ गइ मांहे भमंत ॥ दया धारि शिव नारिथी, अहोनिशि लील करंत ॥ ४ ॥ जे निर्दय निठुर निगुण, ते केम लहेशे ठाण ॥ केम जलथी आवे तरी, अति ऊंचो पाषाण ॥ ५ ॥ सदयी जे वि नीचे गई, पामे पण शिव होय ॥ जारें बूडे तुंबिका, पण आवे तरि सोय ॥ ६ ॥

॥ ढाल उंगणपचासमी ॥

मागे महिडारो दांण, धूतारडो मागे महिडारो दांण ॥ ए देशी ॥ सुंदर दे उपदेश, रे मुनीश्वर सुंदर दे उपदेश ॥ सुललित मीठी वाणी रे, जयं कर टालें दुरित कलेश ॥ जीव सयलनो सारिखो रे, कीडी तेम मातंग ॥ थोडे घणें पुदगलें थयुं, इहां नाहनुं मोटुं अंग रे ॥ सुं० ॥ १ ॥ आलया

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

हुंती उरडे रे, उरडाहूंती गेह ॥ इयत्तावछिन्न अ जुआलडुं, पण दीपक तेहनो तेह ॥सुं०॥ २ ॥ पूरा ए सहेजें गले रे, एतो पुद्गल धर्म ॥ पण जो ह णीए हाथथी, ते तो बांधे निकाचित कर्म रे ॥ सुं० ॥ ३ ॥ नोगद बिहु इंद्रीतणा, एम नांखे जि नराय ॥ द्रव्येंद्रिया, नावेंद्रिया, वली द्रव्यथी नेद बे थाय रे ॥ सुं० ॥ ४ ॥ नावेंद्रिया बे नेद थी, लब्धि तथा उपयोग ॥ लब्धि कहीयें तेहने, जे होये आचरण वियोग रे ॥ सुं० ॥ ५ ॥ उपयो गथी नावेंद्रिया रे, एगंदियादिक जीव ॥ पंच विषय तद्गतपणे, ते अनुनवे अतुल आ जीव रे ॥सुं० ॥ ६ ॥ जेम कन्या नूषण सजी रे, तुरग प्रति आरूढ ॥ वदन नरी तांबूलथी, सा संचरी होय अमूढ ॥ सुं० ॥ ७ ॥ आवे जिहां कूपक नर्यो रे, पारदनो द्युतिवंत ॥ तस उपकंठे ऊनी रहे, मुख मधुरो शब्द कहंत ॥ सुं० ॥ ८ ॥ शब्द सुणी क न्या नणी रे, ग्रहवाने रसराय ॥ दोडे उपांग विना तिहां, एम उपयोग इंद्रिय कहाय रे ॥ सुं० ॥ ए ॥ वली बकुलादिक वृक्षने रे, सिंचे गंगातोय ॥ पण मदिरा सिच्या विना, तस कुसुम कुरंब न होय ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सुं० ॥ १० ॥ एकेंद्रिय उपयोगथी रे, जाणजो सु
ख दुःख एम ॥ जास करण वधतां हूइ, तेह जा
णे नहिं कहो केम रे ॥ सुं० ॥ ११ ॥ मनमें करुणा
राखियें रे, सेवीजें मुनिलोय ॥ चिंतामणि सेवीजे
तो, अर्थिने सुप्रसन्न होय ॥ सुं० ॥ १२ ॥ चोथुं
शौच दया तणुं रे, सहु कोय पूरे साख ॥ ते माटे
कहुं बुं सूरि, मनमांहे दया तुं राख रे ॥ सुं० ॥
१३ ॥ अमे उपशम संयम धरु रे, क्रोध न करुं ति
लमात्र ॥ क्रोधी क्रोध करंतडां, वणसाडे प्रीतिनुं
पात्र रे ॥ सुं० ॥ १४ ॥ क्रोध शमे धरतां क्षमा रे,
खंतें क्रोध न थाय ॥ तृण विण मंमुलें जइ पड्यो,
पण आफूरडो अग्नि उलाय रे ॥ सुं० ॥ १५ ॥ नम
या देवी मुनितणा रे, लखि लखि प्रणमे पाय ॥ अ
हो तपसी कीजें जलो, मुऊ ऊपर कोय पसाय रे
॥ सुं० ॥ १६ ॥ सोंपी समकित वासना रे, देवी
जणी हित लाय ॥ ढाल उंगणपच्चासमी, कही
मोहनविजयें बनाय रे ॥ सुं० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा. ॥

॥ दोहा ॥

सा देवी उपदेशथी, अतिही थइ प्रवीण ॥ सा
धु अवज्ञाथी कहो, शुं शुं होशे प्रक्षीण ॥ १ ॥ दे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

वी साधु पराजवें, निर्धन निगुण सरोग ॥ इह जव परजव ते लहे, वाहलातणो वियोग ॥ २ ॥ सा धु अवज्ञा फल सुणी, कंपी सुरी अतीव ॥ पातक ए विण जोगव्यां, केम छूटशे जीव ॥ ३ ॥ सा न मया देवी चवि, मणुअ लोग उपन्न ॥ नामे नमया सुंदरी, महासती धन्य धन्य ॥ ४ ॥ पूर्व कर्म थ की एणें, पाम्यो कंत वियोग ॥ विकल थई वन वन जमे, पुनरपि थई अशोग ॥ ५ ॥ नमया पूरव जव सुणी, थइ मूर्छांगत एम ॥ दीठो पूरव जव जा लो, सुगुरु जांख्यो जेम ॥ ६ ॥

॥ ढाल पचासमी ॥

कान्हजी मेहलोने कांबली रे ॥ ए देशी ॥ नम या आवी मंदिरें रे, मुनिनी सुणी वाणी ॥ मनथी मांही विचारणा रे, जो जो कर्म कहाणी ॥ १ ॥ हुं बलिहारी सुगुरुनी रे ॥ जेह जन दरिसण पामे, रहे अलगा संसारथी रे ॥ विषय जालने सामे ॥ हुं ॥ ॥ २ ॥ सदन संबंधि सहोदरा रे, तेहथी खोटी शी माया ॥ स्वारथनां सहु को सगां रे, नवि कोइ एना कहेवाया ॥ हुं० ॥ ३ ॥ वाहलाढूंती वाहलोरे, तेजो माहरो न हुवो ॥ बीजो तो कोण होयशेरे, कर्मनी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

गति ए जुवो ॥ हुं० ॥ ४ ॥ दावानल जेम परजले रे, एह संसार असारो ॥ अलगो रहे ते ऊगरे, नहिं तो नहिं कोइ आरो ॥ हुं० ॥ ५ ॥ एहमां जो संजम आदरुं रे, खरुं एह छे जोतानुं ॥ आग ब लंतें झूंपडे रे, निकल्युं ते पोतानुं ॥ हुं० ॥ ६ ॥ ता तने नमया विनवे रे, वो मुऊने आदेश ॥ जो अनु मति होय तुम तणी रे, तो ग्रहुं मुनिनो वेश ॥ हुं० ॥ ७ ॥ तृस थइ नव नोगवी रे, नथी हुं अणतृप्ति ॥ पामि परीक्षा सहु तणीरे, एम वचनें प्रीछवती ॥ हुं०॥ ८ ॥ तात कहे नमया नणी रे, श्यो छे अवसर ताहरो ॥ जेह तुं संयम आदरें रे, मोह गांमीने मा हरो ॥ हुं० ॥ ए ॥ संयम छे अति दोहिलो रे, नथी खेल हांसीनो ॥ जेम बेगो मणिधर रे, जेम अ तुल खजानो ॥ हुं० ॥ १० ॥ कोइ दांते मीणने रे, लोहचणा चावे ॥ संयम वेलु कवल जिस्यो रे, नीर सो कोने नावे ॥ हुं० ॥ ११ ॥ लेवोछे मणि वासुकी तणो रे, नरवी आनथी बाय ॥ कोपातुर मृगपति तणा रे, मुखें घालवो हाथ ॥ हुं० ॥ १२ ॥ खड्गनी धारा उपर रे, होंशे कहो कोण चाले ॥ विफरिया वनगज नणी रे, पंगू नर किम झाले रे ॥ हुं०॥१३॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ए जेम सघलुं दोहिलुं रे, तेम संजम छे तेहवो ॥ बेठां बेठां उपन्यो रे, केम वैराग्य एहवो ॥ हुं० ॥ १४ ॥ ग्रीष्म ऋतुने तावडे रे, अणुवाणे पगे फिरशो ॥ काय सुकोमल एहवी रे, केम गोचरी करशो ॥ हुं० ॥ १५ बावीश परिसह आकरा रे, ते केम करी सहेशो ॥ भार महाव्रत पांचनो रे, केही विधें वहेशो ॥ हुं० ॥ ॥ १६ ॥ योग युक्तिनी योजना रे, योगेश्वरें तेने जाणी ॥ मोहनविजयें पचासमी रे, वारु ढाल व खाणी ॥ हुं० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा ॥

॥ दोहा ॥

रण रसिया रणमंडलें, पाछा न दिये पाय ॥ नि रति संयम पालवा, हाम तेणे न घलाय ॥ १ ॥ संयम तो सुरगिरि शिखर, उंचो अपरंपार ॥ तिहांथकी जे कोइ लडथड्या, भूला भमे संसार ॥ २ ॥ मटक विरागी होयतां, संयम तो न पलाय ॥ बाजीगरना नृपतिसम, राज्य कितो निवहाय ॥ ३ ॥ संयम सोहिलो जो हुवे, तो सहु पाले एम ॥ तरुण भाव संयम पणे, संय्यम ग्रहशो केम ॥ ४ ॥ बोली नमया सुं दरी, अतिलूखो परिणाम ॥ संयम लेतां वारीयें, ए नहिं उत्तम काम ॥ ५ ॥ बालक बीहाव्यो रहे,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

अज्ञाने करी एम ॥ पण संयम रसलालची, वचनें बीहे केम ॥ ६ ॥

॥ ढाल एकावनमी ॥

चंदनरी कटकी नली ॥ ए देशी ॥ संसारनां सुख दाखवी, शुं नोलावो ठो तात, मनडुं हो रा ज, सुगुण संयम पर माहरुं ॥ मूरखनुं हित कां करो, किजे पंडित बोल ॥ म० ॥ सु० ॥ १ ॥ रोगी कडवे औषधें, निश्चें होय नीरोग ॥म०॥ पण मीठा आहारथी, केम नीरोगनो योग ॥ म० ॥ सु० ॥ ॥ २ ॥ कर्मतणो रोग टालवा, संयम औषध जेम॥ म० ॥ पण मीठो नाकारडो, करमनें कहीयें केम ॥ म० ॥ सु० ॥ ३ ॥ चाले जे बुद्धि पारकी, ते सम मूढ न कोय ॥ म० ॥ करीयें जे मन साखि द्ये, तो तो मनवांछित होय ॥ म० ॥ सु० ॥ ४ ॥ हुं संयम अरथी थइ, लेइश संयम नार ॥ म० ॥ तुम वचनें चाल्युं हवे, तो कुण होय आधार ॥ म० ॥ सु० ॥ ॥ ५ ॥ तात आगल नमया कहे, श्लोक अनुपम एम ॥ म० ॥ चारित्रथी राची थकी, आणी परम विवेक ॥ म० ॥ सु० ॥ ६ ॥ तत्त्वातत्वविचाराय, स्वैव बुद्धिःक्षमा नृणां ॥ परोपदेशो विफलो, यथाऽ

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सौधनदत्तवत् ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ तात कहे नमया
जणी, ते कुंण हतो धनदत्त ॥ म० ॥ कहे मूझने
समझाववा, एम कहे उत्सुत्त ॥ म० ॥ सु० ॥ ७ ॥
खोटुं जाखुं केम पिता, साचो बे तेह संबंध ॥ म०
तात आगल नमया कहे, धनदत्तनो संबंध ॥ म० ॥
सु० ॥ ८ ॥ नयर विशाला सुंदरुं, तिहां वसतो,
धनदत्त ॥ म० ॥ लछी परिगल मंदिरें, यौवन वय
उन्मत्त ॥ म० ॥ सु० ॥ ए ॥ तात जरातुर तेहनो,
अवयव थयो बलहीन ॥ म० ॥ उपनी मस्तक वे
दना, तेणें तेह जांखे दीन ॥ म० ॥ सु० ॥ १० ॥
तेड्यो तेणे धनदत्तने, बेसाड्यो निज पास ॥ म० ॥
डुःख निवेद्युं पुत्रने, सुत सुणि करिय विखास ॥
म०॥सु० ॥ ११ ॥ तात जरातुर तरफडे, पण शाता
नवि पामंत ॥ म० ॥ धनदत्त तात डुःख देखीने,
गदगद कंठे कहंत ॥ म० ॥ सु० ॥ १२ ॥ रेरे तात
तुमारडी, केही अवस्था एह ॥ म० ॥ जे कांइ मन
डांमें हुवे, कहो तेम करीयें तेह ॥ म० ॥ सु० ॥
॥ १३ ॥ कांइ एम डुःख जोगवो, कहो जे हूइ
वात ॥ म० ॥ वचन सुणी धनदत्तनां, मंद स्वरें
कहे तात ॥ म० ॥ सु० ॥ १४ ॥ रे सुत में धन मे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

लव्युं, ते करी कूड प्रपंच ॥ म० ॥ लछी छे पापानु बंधनी, एहमां नहीं खलखंच ॥ म० ॥ सु० ॥ १५ ॥ में लछी नवि वावरी, सातें क्षेत्र मझार ॥ म० ॥ ते लछी शा कामनी, जो नवि हुवे उपगार ॥ म० ॥ सु० ॥ १६ ॥ विलसी हिज लछी नली, जाणे बाल गोपाल ॥ म० ॥ मोहनविजयें वर्णवी, एकावनमी ढाल ॥ म० ॥ सु० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा.

॥ दोहा ॥

बोली जूठां मोटकां, में ए मेल्या दाम ॥ पण ए साथे कोइने, नवि आया विरजाम ॥ १ ॥ सोवन कुंगरियो करी, लोजीजनें अनंत ॥ पण एक कटको हेमनो, लेइ न गयो कोइ संत ॥ २ ॥ कूपक जलने द्रव्य ए, नित नित जेम ववराय ॥ तेम तेम बिहु खूटे नही, शास्त्रें एम कहाय ॥ ३ ॥ ते कारण अं गज तमे, धन जे आपणे गेह ॥ सुकृतने वासें सदा, वावरजो धरि नेह ॥ ४ ॥ जो धन वावरशो तमे, तो गति लहेशे जीव ॥ नहिं तो तुमने सांज लो, परितापीश सदैव ॥ ५ ॥ धनदत्त नाम कहे पिता, मनमां हुउं प्रसन्न ॥ धर्म गाम तुम मेलवुं, वा वरशुं ए धन्न ॥ ६ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ढाल बावनमी ॥

केसर वरणो हो काढी कसुंबो माहरा लाल ॥ ए देशी ॥ सुतने वयणे हो जनक प्रसन्नो, माहरा लाल ॥ ते सुरलोकें हो तुरत उपन्नो ॥ माहरालाल ॥ कांति अनोपम हो सुरपुर भूषण ॥ मा० ॥ निर्मल देहीहो, नहीं को दूषण ॥ मा० ॥ १ ॥ धनदत्त हि यडे हो, ताम विचारे ॥ मा० ॥ कोइ गति तातें हो, कृत स्वीकारे ॥ मा०॥ जगस्थिति दीसे हो, अ रघटमाला ॥ मा० ॥ उपजे विणसे हो, वस्तु विशा-ला ॥ मा० ॥ २ ॥ पण मुऊ तातनुं हो, विण संज्ञा ह्युं ॥ मा०॥ दान प्रचारूं हो, कुल अजुवालुं ॥मा०॥ जे गयो परघर हो, फेर न आवे ॥ मा० ॥ धनदत्त मनडुं हो, एम समजावे ॥ मा० ॥ ३ ॥ अवनीत लमांहे हो, जे धन हुंतु ॥ मा० ॥ एणे बाहिर हो, कीधूं अहुं तुं ॥ मा० ॥ शत्रुकारें हो, ते धन खरचे मा० ॥ उलट अधिको हो, पण नवि विरचे ॥मा०॥ ॥ ४ ॥ साते क्षेत्रे हो, अति धन वावे ॥ मा० ॥ पूर्ण कमाणी हो, सबल उपावे ॥ मा० ॥ तेणे ना कारो हो, मुखथी न साख्यो ॥ मा० ॥ कृपणपणाने हो, दूर निवाख्यो ॥ मा० ॥ ५ ॥ वेहेंता जलधि हो,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ये बेहु सरीखो ॥ मा०॥ आवे ते कनेहो, अर्थी आ कर्ष्यो ॥ मा० ॥ प्राप्ति जेहवी हो, तेहवुं पामे ॥मा०॥ पण नवि वारे हो, तेबहु आमे ॥ मा०॥ ६ ॥ कीर्ति प्रसरी हो, धनदत्त केरी ॥ मा०॥ वाजे जगमां हो, कीर्ति नेरी ॥ मा०॥ सोखी हरखे हो, कीर्त्ति कसके मा० ॥ दोषी नर ते हो, देखी न शके ॥ मा० ॥७॥ विप्र महोदय हो, ऐहवे नामें ॥ मा० ॥ अति खल निवसे हो, तिणहिज गामे ॥ मा० ॥ धनहत्तसाथे हो, करी मित्राइ ॥ मा० ॥ वातें रीझवे हो, करी पवित्राइ ॥ मा० ॥ ८ ॥ खलने मलतां हो, वार न लागे ॥ मा० ॥ काम सख्याथी हो अलगो नागे ॥ मा० ॥ गरल अपूरव हो, खल निर्वासे ॥ मा० ॥ श्रवण पहोते हो, विष प्रतिन्नासे ॥ ए ॥ विप्र प्ररू पे हो, मित्र महारा ॥ मा० ॥ अमे शुन्न वांछक हो, अहोनिश तहारा ॥ मा० ॥ तुझ सुख सुखिया हो, पुण्य पवाडे ॥ मा० ॥ होय जो कूवे हो, आवे अ वाडे ॥ मा० ॥ १० ॥ एम धन उपरे हो, कां तुं रूठो ॥ मा० ॥ पुंठ विचारी हो, जोय अपुंठो ॥मा०॥ जो धनधोरणि हो, ताहरे होशे ॥ मा० ॥ तो तुज साहमुं हो, कोहु जोशे ॥ मा० ॥ ११ ॥ धनविण

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मानव हो, कोडि न पावे ॥ मा० ॥ साहमा सधनी हो कोडि उपावे ॥ मा० ॥ निर्धन नरने हो, कोइ न धीरे ॥ मा० ॥ धनने आदर हो, सहु को उदीरे॥ ॥ मा० ॥ १२ ॥ उरगकलेवरहो, कोथी होवे ॥मा०॥ पण निर्धनने हो, कोइ न जोवे ॥ मा० ॥ पुरुष वि भूषण हो धन कहेवाये ॥ मा० ॥ प्रभुता विभुता हो धनथी थाये ॥ मा० ॥ १३ ॥ धन बिहु अक्षर हो, पण गुण मोटो ॥ मा० ॥ धनवंत साचो हो, बीजो खोटो ॥ मा०॥ प्रभु निर्द्रव्ये हो एकज पूजा ये ॥ मा० ॥ पण नर बीजो हो द्रव्य सराये ॥मा० ॥ १४ ॥ पूरवपुण्ये हो, तुं धन पायो ॥ मा० ॥ राखी न जाणे हो, कोय ठगायो ॥ मा० ॥ देतां न कहे हो, कोइ नाकारो ॥ मा०॥ धन सहु वांछे हो, आप पियारो ॥ मा० ॥ १५ ॥ मित्रविहूणो हो, इम कुण कहेशे ॥ मा० ॥ रूडुं डुंडुं हो, तुं निर्वहेशे ॥मा०॥ मारी शिक्षा हो, धनदत्त मानो ॥ मा० ॥ एम कही वाडव हो, रहियो ठानो ॥मा०॥१६॥ धनदत्त मनमां हो,एम विचारे ॥मा०॥ दान देयंतो हो,कोइ न वारे ॥मा०॥ जांखी रूडी हो, ढाल बावनमी ॥ मा० ॥ मोहनविजयें हो, विनवत अनमी ॥ मा० ॥ १६ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ दोहा ॥

ए वाडव माहरो खरो, नेही इण संसार ॥ धन पण कांइ नथी मागतो, कहे छे हित उपगार ॥ १ ॥ एणे मुऊ साचुं कह्युं, हुं तो दीउंछुं दान ॥ पण धन विहूणा नर हुवे, नीरस तरण समान ॥ २ ॥ धनदत्त ब्राह्मण वचनथी, परिहस्युं देवुं दान ॥ लोन्न दशा पसरी खरी, नीचसंगति निदान ॥ ३ ॥ संगति उत्तम कीजीयें, तो थइये वरवीर ॥ परिखा जल गंगा गयुं, तो थयुं गंगानीर ॥ ४ ॥ जो जो संगति नीचथी, आपद असी अमेल ॥ जो खलसंगति आदरे, तो निष्फल नागरवेल ॥ ५ ॥ धनदत्त धन ढगला करी, राख्या मंदिरमांहि ॥ नाकारो शीख्यो फरी, विप्र वचनथी त्यांही ॥ ६ ॥

॥ ढाल त्रेपनमी ॥

सासू पूछे वहु वात ॥ माला किहां छे रे, ए देशी ॥ मूर्ख मित्रनी वातो रे, कहो कुण माने रे ॥ एक अज्ञानिनी टोली रे, करे कुण काने रे ॥ ए आंकणी ॥ धनदत्त ब्राह्मणथी नरमाणो, वाहला मारा नवि मनमें शरमाणो ॥ लाज तणी तेणे वात न राखी, यशनो रत्न गमाणो रे ॥ क० ॥ १ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

दान देयंतें वधती हुंती, लछी परिगल गेहें रे, दान निवारे धनदत्त साथें, लच्छी थइ निःस्नेही रे ॥ क० ॥ २ ॥ दानें लछी होय मद माती, विण दानें कृश थाये रे ॥ नोजनथी तनु पुष्ट होय तेम, नोजन विण न चलाये रे ॥ क० ॥ ३ ॥ मणि माणिकने सोनुं रूपुं, एहथी रीशें नराणां रे ॥ श्याम वर्ण कोपें धग धगता, हुइ अंगार समाणा रे ॥ क० ॥ ४ ॥ जलवट थलवट केरी लछी, तिणे ग ति जलनी कीधी रे ॥ जो जो धन दत्त मूढ पणाथी, दरिद्रीने साह्य दीधी रे ॥ क० ॥ ५ ॥ सुगुण सहो दर सयल सनेही, तेणे पण हित चोख्खुं रे ॥ दीवुं तिहां तेणे धनदत्त द्धारें, दान विटपि विण मोख्खुं रे ॥ क० ॥ ६ ॥ धनदत्त निर्धनने वशे नोलो, न मतो पुरमां लाजे रे ॥ पूर्व लाज अछे धनदत्तनी, जेह करे ते ठाजे रे ॥ क० ॥ ७ ॥ विप्र म होदय एहवे अवसर, धन दत्त मंदिर आव्यो रे ॥ निर्धन दीठो तेणे नयणे, सान करी समजाव्यो रे ॥ क० ॥ ८ ॥ एह शी सूरि जन ताहरी अ वस्था, ए शुं दैवें कीधुं रे ॥ रोहण शैल समो रय णायर, पुंज उलाली लीधो रे ॥ क० ॥ ए ॥ नेत्र

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सजल थइ धनदत्त बोल्यो,रे रे मित्र शुं कहीये रे ॥ अतरगतनी कहो कुण जाणे, जेह लख्युं ते लहीयें रे ॥ क० ॥ १० ॥ वाहला मित्रजी जइयें परदेशें, तिहां जइ उदर भरीशुं रे ॥ शुं करीये कहो केहने कहीयें, मूल मजूरी करीशुं रे ॥ क० ॥ ११ ॥ देशें चोरी विदेशे भिक्षा, एहवो बोल्यो उखाणो रे ॥ पण एकलडां केम सुहाये, हियडे विचारी जाणोरे ॥ क० ॥ १२ ॥ विप्र कहे सुण धनदत्त भाई, एक लडो केम ढोडुं रे, जो कांइ काम पडे जो ताहरे, शीषसहित तनु ओडुं रे ॥ क० ॥ १३ ॥ पण तुं मा हरा कथनमां रहेजे, धनदत्त कहे पण वारुरे ॥ ते बेहु चाल्या परदेशे, पेट भराइ सारु रे ॥ क० ॥१४॥ मूकी देश विदेशे पोहता, धनदत्त वाडव साथें रे ॥ पण कोइ उद्यम संपति केरो, नावे तेहने हाथेंरे ॥ क० ॥ १५ ॥ जे जे वाडव विधि प्रकाशे, धनदत्त तेह विधि चालेरे ॥ पण पूर्वापर ते न विचारे,पाछो उत्तर नालेरे ॥ १६ ॥ जो जो नमया ए दृष्टांतें, तात भणी समजावे रे ॥ अतिहि सुललित ढाल त्रेपनमी, मोहन कही समजावे ॥ क० ॥ १७ ॥ सर्वगाथा ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ दोहा ॥

एक दिन वनमां चालतां, तृषावंत धनदत्त ॥ मित्रकने मागे तिहां, पय पीवाने ऊत्त ॥१॥ मित्र कहे इहां बेश्य तुं, हृदय धरीने धीर ॥ वनमांहें सरवर थकी, लेइ आवुं हुं नीर ॥ २ ॥ बेसाडी धनदत्तने, कोइक तरुवर बांहि ॥ विप्र मित्र जल कारणे, गयो गहन वनमांहि ॥ ३ ॥ न मिल्युं जल ते विप्रने, चिंते मनमां ते एम ॥ विण पाणी निज मित्रने, वदन देखाडुं केम ॥ ३ पूठलथी धनदत्त हवे, मित्र तणी जोइ वाट ॥ जल नाव्युं दीठुं तेणे, चिंते हृदय निपाट ॥ ५ ॥ हलूये उठ्यो तिहां थकी, एकाकी धनदत्त॥ वनमांहे भूलो भमे, जिम करिवर उन्मत्त॥६॥

॥ ढाल चोपन्नमी ॥

मूजरो ल्योने जालिम ऊटणी ॥ ए देशी ॥ धनदत्त भोलो जी वनमां भमे, करवा विप्रनी शुद्धि ॥ तुमें फल जो जो नीचसंगति तणां ॥ ए आंकणी ॥ संगति नीचनी होये अलखामणी, प्राये निर्धन निर्बुद्धि ॥ तु० ॥ १ ॥ वनमें पारधीया खेटक रमे, बना मांडीने फंद ॥ ताणे बाण ते मृगवध कारणे, बेठा ते मतिमंद ॥ तु० ॥ २ ॥ मृग पण आव्या तृण च

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रता तिहां, पारधी फंद नजीक ॥ एहवे धनदत्ते ते अजाणते, कीधी उत्तम छींक ॥ तु० ॥३॥ छीकें नाठा ते मृग पाछा फस्या, दोड्या पारधि ताम ॥ रुष्या बोले मृग केणे त्रासव्या, कस्युं केणे वैरीनुं काम ॥तु०॥४॥ धनदत्त दीठो पारधीये तिहां, पकड्यो दोडीने ताम॥ नाख्यो मेदिनी लात प्रहारथी, कीधो हृदय अकाम तु० ॥ ५ ॥ रे रे फंद पड्या मृग त्रासव्या, तेहनां यह फल जोय ॥ बांधी चाल्याजी तरु शाखांतरें, पारधी न रह्यो जी कोय ॥ तु० ॥ ६ ॥ धनदत्त आफले बल घणुं करे, छोडी न शकेजी बंध ॥ कीणही वाटाउयें नवि तस दीठडो, कुसुम जिस्यो निर्गंध॥ तु० ॥ ७ ॥ एहवे वाडव वारि लेइ करी, आव्यो प्रथम तरुपास ॥ तेणे नवि दीठो तिहां धनदत्तने, तव ते करेजी विखास ॥ तु० ॥ ८ ॥ अनुपम दीठो ते धनदत्तने, तव ते दीठो बांध्यो जी मित्र ॥ केणे माहरो मित्र पराजव्यो, कांइक दीसे छे चरित्र ॥ तु० ॥ए॥ छोड्यो मित्रने शाखाथकी, पूछ्यो बंधविचार ॥ धनदत्त नांखेजी वाडवआगलें, व्याध तणो अधिकार॥ तु० ॥ १० ॥ नांखे वाडव धनदत्त आगलें, एम नवि कीजें अबूझ ॥ पुरबाहेर नर देखी तिहां, बोलीयें न

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

हीं कहुं तुझ ॥ तु० ॥ ११ ॥ दीठे मारग सीधा चा
लीयें, तो कुण दूहवे एम ॥ मान्युं धनदत्तें कह्युं वि
प्रनुं, चाल्या आगल जेम ॥ तु० ॥ १२ ॥ आव्या
कोइ पुरवर परिसरें, दीतुं सरोवर एक ॥ रजक नि
हाल्यो वस्त्र तिहां धोवतां, धनदत्त चिंते विवेक ॥
तु० ॥ १३ ॥ हलूए हलूए सरोवर संचर्यो, केडे
रह्यो कांइ विप्र ॥ दीठो रजकें धनदत्त आवतो, साह
मो दोड्यो जी क्षिप्र ॥ तु० ॥ १४ ॥ पकड्यो रजकें
धनदत्तने, तथा रजक कहे मुख एम ॥ दिवस घणा
नो करतो तस्करी, पकड्यो जाइश केम ॥ तु०॥१५॥
काले लेइ गयो वस्त्रनी ग्रंथिका, वली तुं आव्यो ढे
आज ॥ चोरनुं वितक तुझने विताडशुं, वलशे त्यारे
तुझ लाज ॥तु०॥१६॥ रजकवचनें धनदत्त चिंतवे, हुं
कुण चोर ढे कुण ॥ मोहनविजयें ढाल चोपन्नमी,
पन्नणी परम अनूण ॥ तु० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा.

॥ दोहा ॥

रे रजक कुंण चोर ढे, माहरुं धनदत्तनाम ॥ नग
री विशालायें रहुं, व्यापारी अभिराम ॥ १ ॥ दैव
वशें इहां हुं आवियो, अणबोल्यो इण ठाम ॥ मित्र
महोदय कथनथी, कीधां सवि आयाम ॥ २ ॥ विप्र

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

महोदय पण तुरत, आव्यो सरोवर पाल ॥ मुकाव्यो बंधन थकी, धनदत्तने सुविशाल ॥ ३ ॥ तिहांथी बिहु नेही निगुण, पाम्या एक कांतार ॥ विण संबल विलखा ज्यमे, धन विण कवण आधार ॥ ४ ॥ वन फुल फल सुवृक्षनां, तेह तणो आहार ॥ धनदत्त तात तणो हवे, सांजलजो अधिकार ॥ ५ ॥ प्रथम स्वर्गे थयो देवता, थयुं जे अवधिज्ञान ॥ पूरवज्यव दीठो तिणे, प्रगट त्रिदश विज्ञान ॥ ६ ॥

॥ ढाल पंचावनमी ॥

थाहरा मोहला उपर मेह, झरूखे वीजली ॥ ए देशी ॥ देखी विलोकें ताम, अवधि ज्ञाने करी ॥ हो लाल ॥ अ० ॥ दीठो धनदत्त पुत्र, पूरव ज्यव अनुसरी ॥ हो० ॥ पू० ॥ ऐ ऐ माहरुं वेण, निवाही नवि शक्यो ॥ हो० नि० ॥ दानांगणवड वीर थइने, नवि टक्यो ॥ हो० ॥ थ० ॥ १ ॥ वाडव वयणें एह, ज्योलाणो बापडो ॥ हो० ॥ ज्यो० ॥ वनचर परें वनमांहि, फरे ले उफाफलो ॥ हो० ॥ फ० ॥ मूढ पराइ बुद्धें, लहे अप त्राजना ॥ हो० ॥ ल० ॥ हजीय नथी कर तो ए, हृदय आलोचना ॥ हो० ॥ हृ० ॥ २ ॥ सम जावुं धनदत्त, उपाय कोइक रची ॥ हो० ॥ उ० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ए पण दुर्जन संग, रह्यो छे अति पची ॥ हो० ॥ र० ॥ एम आलोची देव, विमान तजी करी ॥ हो० ॥ वि० ॥ आव्यो वनह मझार, प्रबोध रसें भरी ॥हो०॥प्र०॥३॥ फोरवी शक्ति सुरंग, थयो व्यवहारि यो ॥ हो० थ० ॥ दिव्य वसन द्युतिमंत, शृंगारें शृं गारिउं ॥ हो० ॥ शृं० ॥ पोठ भरी तिहां रयण, त णि तेणे सांमटी ॥ हो० ॥त०॥ पहेर्यां ढलतां वस्त्र, सुरंग सूधां हठी ॥ हो० ॥ सु० ॥ ४ ॥ रुप अनो पम ताम, इस्यो देवे कर्यो ॥ हो० ॥ इ० ॥ बेठो ऊह उपकंठ, सुभरनीरें भर्यो ॥ हो० ॥ सु० ॥ ह रि नव पल्लव गुछ, तणा कुंजांकुरा ॥ हो० ॥ त० ॥ परिमल मुखरित भूरि, सलूणा मधुकरा ॥हो०॥स० ॥ ५ ॥ सुर जोवे धनदत्त, तणी तिहां वाटडी ॥ हो० ॥ त० ॥ हजीय न आव्यो मूढ, कुसंगी प्रीतडी ॥ हो० ॥ कु० ॥ हूउं ते धनदत्त, तृषातुर एहवे ॥ हो० ॥ तृ० ॥ दीठो दूरथी तेह, भर्यो ऊह तेहवे ॥ हो० ॥ भ० ॥ ६ ॥ दोडी आव्यो नीरहेतें, ते ऊह ऊपरे ॥ हो० ॥ ते० ॥ जेम कीधुं जलपान, बोलाव्यो ते सुरें ॥ हो० ॥ बो० ॥ रे रे वटाउ पंथ, भुल्यो शुं आवियो ॥ हो० ॥भु०॥ दीसे छे तुं कुलवंत, तो कां

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

एम जावियो ॥ हो० ॥ तो० ॥७॥ बेसो इहां विश्राम, करीने जाय जो ॥ हो० ॥ क० ॥ वचन उलंघी मुज, गमार न थाय जो ॥हो०॥ग०॥ धनदत्त तास वचन, रह्यो धीरज धरी ॥ हो० ॥र०॥ जो जो विबुधें ताम, विबुधता शी करी ॥हो०॥ वि० ॥ ८ ॥ धनदत्त देखे तेम,सुरेश्वरहित धरी॥हो०॥सु०॥ नाखी द्रह मांहि रयण, अंजलि जरी जरी ॥हो०॥अं०॥ एम असमं जस देखी, कहे धनदत्त इस्युं ॥हो०॥क०॥ रे व्यव हारी ए काम, करे बे तुं किस्युं ॥हो०॥क०॥ ए ॥ देखी पेखी रयण, द्रहे केम नाखीयें ॥ हो० ॥ द्र० ॥ सुख दुःख द्रव्यने .काज, सवे हुं सांखीए ॥ हो० ॥ स० ॥ के कोइ प्रेत विशेष, थयो बे तुज ने ॥ हो० ॥ थ० ॥ जे कांइ हृदयमें वात, हूवे ते कहो मुजने ॥ हो० ॥ हू० ॥ १० ॥ बोलोबो स्याह्यां वेण, करो कां ग्रथलता ॥ हो० ॥ क० ॥ उपहासीथी केम, तमे नथी बीहता ॥ हो० ॥ त० ॥ तव सुर बोल्यो एम, वचन रचना करी ॥ हो० ॥ व० ॥ रे पंथी वड वीर, कहुं तुज हित धरी ॥ हो० ॥ क० ॥ ११ ॥ हुं बुं सारथवाह, रयण संग्रह घणो ॥ हो० ॥ र० ॥ एक बे माहरे मित्र, योगींद्र सोहामणो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ हो० ॥ यो० ॥ तेणे मुऊने रत्न देखी, कह्युं एहवुं ॥ हो० ॥ क० ॥ माने माहरो बोल, तो हुं तुऊने कहुं ॥ हो० ॥ तो० ॥१२॥ ए वन गहन मऊार, एह ऽरह रूयडो ॥ हो० ॥ ए० ॥ सुंदर सलिल गंजीर, पद्म ऽरह जेवडो ॥ हो० ॥ प० ॥ तास तणे उपकंठ, रयण लेइ नावियें ॥ हो० ॥ र० ॥ अंजलि नरी नरी कोटिश, तेहमें वाविये ॥ हो० ॥ ते० ॥ १३ ॥ एक वरस मर्यादि, लगण तिहां स्थिर करी ॥हो०॥ ल० ॥ प्रगटे ऽरहथी ताम, रयणनी डुंगरी ॥ हो० ॥ र० ॥ मित्र वचनथी आज, इहां हुं आवियो ॥ हो० ॥ इ० ॥ सयल रयणनो पुंज, ऽरहांतरे वावियो ॥ हो० ॥ ऽ० ॥ १४ ॥ होशे रयणनो शैल, प्रजा कर रूयडो ॥ हो० ॥ प्र० ॥ साचो माहरो मित्र, कहे केम कूयडो ॥ हो० ॥ क० ॥ बोल्यो धनदत्त ताम, घणो पुलकित थइ ॥ हो० ॥ घ० ॥ ताहरी सारथ वाह, कहुं केम बुऊि किहां गइ ॥ हो० ॥ क० ॥ १५ ॥ कहिं ऽरहमां रत्न, उग्यां तें साजल्यां ॥ हो० ॥ उ० ॥ फेरी शी तस आश के, जे गांगें ग ल्यां ॥ हो० ॥ जे० ॥ ते नूल्यो ताहरो मित्र, जे तु ऊ नंजेरीउ ॥ हो० ॥ जे० ॥ तुं नोलो जे तास, व

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

चन नवि फेरव्यो ॥ हो० ॥ व० ॥ १६ ॥ मानीश एहवा मित्र, तणी जो शीखडी ॥ हो० ॥ त० ॥ मा गीश सारथवाह, नली तुं नीखडी ॥ हो० ॥ न० ॥ पंचावनमी ढाल, मोहनविजयें कही ॥ हो० ॥ मो० ॥ जे कोइ निपुण शिरोमणि, तेणे तो शर्दहही ॥ हो० ॥ ते० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा. ॥

॥ दोहा ॥

वणिक रूपें कहे देवता, सांनल्य तुं धनदत्त ॥ पर उपदेशें कुशल तुं, दीसे ठे उन्मत्त ॥ १ ॥ पर्वत पर जलती बहु, नयणे निरखे लोय ॥ पण पयतल बलतां थकां, मूढ न देखे कोय ॥ २ ॥ पर अवगु ण राई सरस, करे सुरशैल समान ॥ निज अव गुण मंदर समा, राई करे अयाण ॥ ३ ॥ एक वा र तुं ताहरी, गति सामुं तो जोय ॥ त्यार पढी पर बूजियें, एम माह्यो शुं होय ॥ ४ ॥ धनदत्त तव नि सुणी करी, कहे तव सुरने एम ॥ शीखामण देतां थकां, रीष चढावो केम ॥ ५ ॥ वचन मांनो जो माहरुं, तो सुखी होउ महाराज ॥ हुं तो हेत माटे कहुं, तव बोल्यो सुरराज ॥ ६ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ढाल बपन्नमी ॥

नटीयाणीना गीतनी अथवा सुरती प्यारी लागे जिनजी ताहरी ॥ए देशी॥ धनदत्तने एम नांखे हो, व्यवहारी रूपें देवता ॥ रे नड्डक मतिहीन, प्रथ मज तुं नुलवाणो हो, तेह तो तुं नथी शोचतो, कां न संनारे दीन ॥ ध० ॥ १ ॥ हुं तो जोगी व यणे हो, रयण वली आव्यो वाववा ॥ तो तें वास्यो मूऊ ॥ वाडवनी तुं शीखें हो, जे एम वनमां रड वडे, तो कुण वारशे तुऊ ॥ ध० ॥२॥ तुऊने जे को तातें हो, नोलुडा वचन कह्युं हतुं, न कर्युं तें नि र्वाह ॥ बांनणनां वचनथी हो, धूताणो एम नूलो नमे, हजीय नथी लाजतो थाह ॥ ध० ॥ ३ ॥ ते माटें कहुं तुजनें हो,धनदत्तजी नुंकुं म मानशो, कहे वाये ए रूढ ॥ हुं नोलवाणो केहवो हो, नोलवाणो तुं ए विप्रथी, मूढ हुं किंवा तुं मूढ ॥ ध० ॥ ४ ॥ पर उपदेशें राह्यो हो, ते कारण तुने हुं कहुं ॥ जो तुं संनाली पूंठ ॥ जे कांइ तुऊ आगल हो, विण पूबये जे में उपदिश्युं, ए साचूं के जूठ ॥ ध० ॥५॥ में तो जोगीवचनें हो, ऊहमांहि रत्न जे वोसर्यां ॥ पण तुं विचारी जोय ॥ वाडवना कह्याथी हो, तें

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

हज पुण्य प्रमार्जियुं, वली जन्म्यो डुर्जन होय ॥ध०॥
॥६॥ जो होइये निकलंक हो, तो परनुं कलंक प्रका
शियें॥ करी जाणो निर्धार, ते कारण तुमे जाउं हो॥
जूलशो पुरनी वाटडी, खोटा न करो उपचार ॥
ध० ॥ ७ ॥ धनदत्त तिहां मनमांहि हो, आलोचे
उंमी आलोचना, ए केम लहे मुऊ वात ॥ एणे जे
मूऊ जाख्युं हो, ते साची सघली वातडी, खोटा
नहिं अवदात ॥ ध० ॥ ८ ॥ वाडवने कह्ये लुब्धो
हो, में तातनुं वचन विसारियुं, जलो जूल्यो हुं
जोर ॥ मूरखने वली होवे हो, माथें मोटां शिंगडां,
कहेने कहुं करी शोर ॥ ध० ॥ ए ॥ मानव तो
नवि दीसे हो, दीसे वे ए तो देवता, नहीं तो जाणे
केम ॥ सारथवाहने जांखे हो, धनदत्त बेहु कर
जोडीनें, प्रगट प्रकाशी प्रेम ॥ ध० ॥ १० ॥ तमे
कोण वो बुद्धिवंता हो,मुऊ आगल साचुं जांखजो,
दाखो प्रगट स्वरुप ॥ धनदत्तना कथनथी हो, सा
र्थपनो दंज विसर्जियो, कर्युं सुररूप अनूप ॥ ध० ॥
॥ ११ ॥ निर्मल देही जेही हो, फाटिकनी जाणे म
यूषिका, अंबुज परिमलपूर ॥ जूषणने संजारे हो,
संपूजीत तन सोहामणो, तेजें न जिते सूर ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ध० ॥ १२ ॥ धनदत्तने सुर जांखे हो, सांजल्य हुं बुं ताहरो, पूरव जवनो तात ॥ सुरपुरनें सुरलीला हो, जोगवतां अवधि प्रयुंजीयो, दीठ तुज अवदात ॥ ध० ॥ १३ ॥ पूरव जवने नेहें हो, तुऊ प्रति बोधन आवियो, सारथवाहने वेश ॥ द्रहमांहे मणि कपटें हो नाखिने, तुऊ समजावियो अहो, हित शीख विशेष ॥ ध० ॥ १४ ॥ केम करीने चालीजें हो, बालूडा बूऊें पारकी, कीजें मन अनुजाय ॥ घणी घणी शी फेरी हो, जांखीजे तुजने शीखडी, तुजने कहुं बुं न्याय ॥ ध० ॥ १५ ॥ सुरवरने वचनें हो, प्रतिबूज्यो धनदत्त हियडे, दीठो तात सनेह ॥ देवें एक अनिमेषे हो, वनहुंती धनदत्त आणीयो, जीहां पूरव निज गेह ॥ ध० १६ ॥ गृह मांहे मणि माणिक हो, सोनुं ने रूपुं सामटुं, प्रगट्यो ऊाकऊमाल ॥ ठपन्नमी रतनाली हो, सुगुणीने हेतें ए कही, मोहनविजयें ढाल ॥ ध० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा ॥

॥ दोहा ॥

ते सुरवर धनदत्तने, सोंपी धण कण धाम ॥
प्रतिबोधी सुरपुर रमा, आजरणीकृत ताम ॥ १ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

धनदत्तें सुंदरपरें, मननुं चिंतव्युं कीध ॥ अवसानें सुख अनुजव्यां, सकल मनोरथ सिद्ध ॥ २ ॥ अथ इति पर्यंत ए कह्यो, धनदत्तनो अवदात ॥ नमया कर जोडी कहे, श्रवण अतिथि करो तात ॥ ३ ॥ विना वचन जिनराजनां, जे परबुद्धि राचंत ॥ तेहनी गति धनदत्त जिम, जाणो तात महंत ॥ ४ ॥ ए जणे नमया सुंदरी, तात जणी तिणिवार ॥ आणा द्यो चारित्रतणी, मानीश ए उपकार ॥ ५ ॥ जो पुत्री करी त्रेवडो, तो पूरो मननो कोड ॥ आलंबन द्यो अडवड्यां, विनति करुं कर जोडि ॥ ६ ॥

॥ ढाल सत्तावनमी ॥

यतणीनी देशी ॥ कहे नमयाने जनक ते वारे, अहो चारित्र कां अविचारें, छहु रुतुमां यति व्रतमें रहेवुं, तुऊथी थाशे ए किम सहेवुं ॥ १ ॥ प्रसरे हिम रुतु चिहुपासे, शालि मंजरी फुलें उल्लासें ॥ माले आरुढा जन सोहे ॥ पशुपंखी पडतां टोहे ॥ ॥ २ ॥ पुरवरसी वन शोजा दीसे, परिजन वन मांहे जगीशें ॥ नट वंश चढीने खेले, दाता पण दान उकेले ॥ ३ ॥ केइ ताजा पोंख आरोगे, म सली कर संपुटने योगें ॥ कहो ए मुनिवेषमें किहां

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

थी, जिक्षा ग्रहेवी जिहा तिहांथी ॥ ४ ॥ दोहा॥ दीक्षा शालि विकाश तम, मळ्यो रूपकसंयोग ॥ परिग्रह योगक पंखीया, वारीश थई अशोक ॥ ५ ॥ हृदयदेश शोजावशुं, कर्म नटावा खेल ॥ जोशुं देशुं दान पण, मोक्षतणा रस मेल ॥ ६ ॥ पूरवपुण्य सा क्षातना, कारी निश्चय व्यवहार ॥ एम करी हिम ऋतु निर्गमे,जे सूधा अणगार ॥७॥ पूर्वढाल ॥ ऋतु शिशिर शीतल वा वाशे,विणवसने शी गति थाशे ॥ कृष्णागर केरी अंगीठि, मुनिपासे किहाये दीठी ॥८॥ अति उन्हुं जोजन जमवुं,वली आसव पानें रमवुं॥ घणी दीरघ शिशिरनी रजनी, कहो जाशे केम विण सजनी ॥ ए ॥ वरतेल तंबोल विलास, अति शोजि त उचित आवास ॥ मुनिमुद्राए किहांथी ए तु जने, मुनिमारग पूछे तुं मुऊने ॥ १० ॥ दोहा ॥ नमया कहे ऋतु शिशिरमें, जे छे विषया शीत ॥ निर्विकार उंढीश वसन, जेहनी सबल प्रतीत ॥११॥ ध्यान तणी अंगीठडी, जोजन तेम संतोष ॥ आस वसमता पी जतां, करशुं काया पोष ॥ १२ ॥ माया रजनी अति विपुल, शुरू स्वजावें क्षीण ॥ उदासी न तेलांग तिम, प्रमा तंबोल प्रवीण ॥ १३ ॥ मंदिर

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

उच्च विवेकनुं, काया वली उल्होल ॥ एम शिशिर निर्वाहशुं, करशुं रुचि कल्होल ॥१४॥ पूर्वढाल ॥ वली तेमज वसंतऋतु आवे, तव किसलय तेम तरु आवे ॥ वागे चंग मृदंग सुरागें, वली टोली गावे फागें ॥१५॥ ढांटे केसर भरी पीचकारी, तेम लाल गुलाल नरनारी ॥ करे नाटक बत्रीश बद्ध, ते तो मुनिवेषें नवि कीध ॥१६॥दोहा॥ तप नवकिसलय तरु थयो,आवश्यक वाजीत्र ॥ अध्ययनादिक फागगति, केसर क्रिया विचित्र ॥ १७ ॥ मार्दव लाल गुलाल बहु, परिसह नाटक कीध ॥ ऋतुवसंतमांहे अहो, मुनिने ए अनिषिद्ध ॥ १८ ॥ पूर्व ढाल ॥ ऋतु ग्रीष्म तपन तपे जोर, तेम लूक वहे चिहुं ओर ॥ रस करीये घोली रसीलो, सुणीये कंइ पिकवचन रसाल ॥ १९ ॥ तेम करे विलेपन चंदननां, ते शीतल पवन बिंजनना ॥ साकर जल भेली पीजे, एम ग्रीष्मनो लाहो लीजें॥ ॥ २० ॥ दोहा ॥ क्रोधातप कृश खंतिथी, लूक लो भनी जेह ॥ आदरशुं निःस्पृहता, वसशुं संयमगेह॥ ॥ २१ ॥ अनुभवरस सहकार रस, कोकिल जिनवर वाणी ॥ चंदन सत्य विलेपनां, उपशम व्यंजन जाणी ॥ २२ ॥ गुरुआणा साकर विनय, नीरतणुं नित्य

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पान ॥ एम करी ग्रीष्म ऋतु जणी, निर्वहिशुं धरि मान ॥ २३ ॥ पूर्व ढाल ॥ ऋतु वर्षाघन ऊड मंडे, धारा अनिमेष न खंडे ॥ शिखी दादुर चातक बोले, कामी काम पण खोले ॥ २४ ॥ गुणिजन आलापे मल्हार, वली सुंदर नेम आहार ॥ वहे सरिता हरिता तेम धरणी, केम निर्वहशो चरण आचरणी ॥ ॥ २५ ॥ दोहा ॥ मोहमहाघननी घटा, धरशुं खूप संवेग ॥ श्रद्धाविहग उद्घोषणा, खोली मने धरि नेग ॥ २६ ॥ राग मल्हार सद्याय ढे, निःशंकी आहार ॥ सत्य नदी मुनिगुण हरित, ए पावस प्रतिचार ॥ २७ ॥ पूर्वढाल ॥ ऋतु शरदें कमल शशी ऊगे, वधे तेज नयन कर पूगे ॥ झरे पीयूष शुक्ति समाय, तस बिंदुनां मौक्तिक थाय ॥२८॥ योगीश्वर ग्रह नवरात्रि, करे याग यगन संयात्री ॥ मली कन्या गरबो गाइ, करी मंगल दीपक जाइ ॥२९॥ अति महोत्सव आणा प्रयाणां, संयमिने क्यांथी सयाणां ॥ वसती बाहिर एकाकी,न फरे पुनि जेम ए रांकी ॥३०॥ दोहा॥समकित शशी अजुवालडो,तास तत्व ज्ञानांश॥ ज्ञान नियम निर्मल थशे, लोकालोक प्रकाश ॥ ३१ ॥ दयाशुक्तिमांहि अचल, मौक्तिक धर्म सशुरू ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नवयोगी नव वाडि ते, नव रात्रि प्रति बुझ ॥ ३२ ॥ जोली कन्या जावना, जिन गुण गरबा केली ॥ मंगल दीपक परम पद, कर्म नटाव अहेलि ॥ ३३ ॥ वियावच्च आणुं जलुं, थविर तथा मुनिनाह ॥ शिशिर ऋतुयें मुनिवर करे, एम महोटा उत्साह ॥३४॥ पूर्व ढाल॥ कह्यो षटे ऋतुनो एह विवाद, नवि पामी नमया विषवाद ॥ नमया चारित्रनी अरथी, रागी पूरण मुनिवरथी ॥ ३५ ॥ धन्य धन्य ते जव जय ठंडे, मुनि वेशें आदर मंडे ॥ कही सत्तावनमी ढाल, एह मोहनविजयें रसाल ॥ ३६ ॥ सर्व गाथा ॥

॥ दोहा ॥

तातें घणुंये प्रीछवी, पण नवि माने तेह ॥ तातें अनुमति दीधली, नमयाने धरी नेह ॥ १ नमया अति रंजी हिये, तनू हुवो रोमंच ॥ उमाही दीक्षा जणी, करे नहीं खल खंच ॥ २ ॥ तातें पुर शणगारियुं, तिहां हय गय रह जोडि ॥ अति उत्सव अष्टाहिका, मांडे होडा होड ॥ ३ ॥ दया पटह पुर फेरव्यो, दीधां अर्थीदान ॥ सयण सयल जेलां हुवां, दीधां तिहां बहु मान ॥ ४ ॥ बेठी नमया

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सुंदरी, शिबिकाए सोत्साह ॥ तूरि तणा निर्घोष बहु, गय गयणांगण तांह ॥ ५ ॥ पुरजन कौतुक पेखवा, मलियां थोका थोक ॥ आव्यां इम गुरु संन्निधि, जोडीने कर कोक ॥ ६ ॥

॥ ढाल अठावनमी ॥

ते तरीया जाइ ते तरीया ए देशी ॥ आर्य सुहस्ती सूरीश्वर चरणे, प्रणमी नमया विनवेरे ॥ आपो मुझने चारित्र खजानो, अवसर आव्ये एहवे रे ॥१॥ जयवंता विचरो जगमांहें ॥ ए आंकणी ॥ जे अनुसरे मुनि मुजारे, तास चरणरज तिलक करीजे, सेवियें थइ अछुआ रे ॥ ज० ॥२॥ गुरु सहदेवतणी ग्रहे आणा, सघलें अनुमति दीधी रे॥ अहो जावुके अहो नमयासुंदरी, प्रीति संयमथी कीधी रे ज० ॥ ३ ॥ मन थिर छे किंवा नथी ताहरुं, संयम छे अति दोहिलुं रे ॥ सायर जल तरवुं छे जुजाथी, निःस्पृहने छे सोहिलुं रे ॥ ज० ॥ ४ ॥ सिंह थइने ल्यो छो संयम, सिंह थइने निर्वहेजो रे, जो न पाली शको प्रव्रज्या, तो गृहवासे रहेजो रे ॥ ज० ॥ ५ ॥ नमयासुंदरी विनवे गुरुने, स्वामी कांहे विहाडो रे ॥ साहमुं बल बंधावी मु

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ऊने, निद्रालुने जगाडो रे ॥ ज० ॥ ६ ॥ माहरुं मन ले दृढ संयमथी, हुं आवी तुम चरणे रे ॥ चारित्रथी केम होइश चंचल, उलखो एहवे आचरणें रे ॥ ज० ॥ ७ ॥ नमयायें नूषण सयल उतार्यां, परिहरी लोज अशुनो रे ॥ वासक्षेपथी थाल नरीने, तात समीपें ऊनो रे ॥ ज० ॥ ८ ॥ केशजाल मस्तकथी लुंच्या, जाल महामोह दावे रे॥ आचारय करवा संग्रहीने, नर्मदा मस्तक नावे रे॥ ज० ॥ ए ॥ धर्म सिंधुर कुंनस्थल बेठा, गुरु एम देशना नांखे रे, पंचशालि कण जेम महाव्रत, जे ग्रहे ते सुख चाखे रे ॥ ज० ॥ १० ॥ एह संसार असार विचारी, पालजो सूधी दीक्षा रे ॥ पंच महाव्रत नार निर्वहेजो, ए सद्गुरुनी शिक्षा रे ॥ज० ॥ ११ ॥ प्रणम्या पुरजन नमयाने चरणे, आंसुऊरंते नयणे रे ॥ अहो नमया धन्य धन्य तुम जीवित, एम उल्लापे वयणें रे ॥१२॥ राखजो धर्म सनेह अम उपर, वंदावजो वली अमने रे ॥ तुम गुण मीठा केम विसरशे, घणुं विनवीयें शुं तमने रे ॥ ज० ॥ ॥ १३ ॥ सहदेवादिक नयणथी वरसे, आंसूमिषें जलधारा रे ॥ नांखे नमया साधवी तेहने, मीठां

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

वचन उदारा रे ॥ ज० ॥ १४ ॥ धर्मोद्यम करजो सहु प्राणी, एम कही दीधी शीखो रे ॥ नमयाने आशीष कहे एम, जीवजो कोडी वरीसो रे ॥ ज० ॥ १५ ॥ जनकादिक सहु मंदिर आव्या, हवे सह गुरुउल्लासें रे, नमया साध्वीने हित आणी, सोंपी साधवी पासे रे ॥ ज० ॥ १६ ॥ साधु मारग शी खाव्यो वारु, करे जिन आगल साखी रे ॥ अठा वनमी ढाल सलूणी, मोहनविजयें जांखीरे ॥ ज० ॥ ॥ १७ ॥ सर्व गाथा ॥

॥ दोहा ॥

अहनिश साध्वी नर्मदा, करे ज्ञान अभ्यास॥चा रित्र चंद्र प्रद्योतथी, करे मन कुमुद विकास ॥ १ ॥ जयणा गंगा सुरसरी, जिहां हित प्रगटतरंग ॥ तीहां झीले थइ हंसली, करे पवित्र निज अंग ॥२॥ अंबर मुनि आचारनां, जक्ति तणो मुख कोश॥ संवर केसर घोले बहु, विनय पखाले अदोष ॥३॥ स्तवना कुसुम मनोहरु, समकित दीप उद्योत ॥ अद्भत अनुभव रूपना, ध्यान धूप सिद्धोत ॥ ४ ॥ एम पूजा जिनराजनी, साहसथी नितमेव ॥ रचे कर्म चकचूरवा, सा साध्वी नितमेव ॥ ५ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ढाल उंगणसाठमी ॥

आइ आइ हो ढोला आइ हो श्रावण त्रीज, माहरी प्रोले पडहा वाजीया होराज ॥ वारी जाउं राज, जीवनप्यारा राज ॥ लाडीरा लाडा राज ॥ राज मृगानयणीथी मांरुयुं रूसणुंजी ॥ वा० ॥ जीव न० ॥ लाडी० ॥रा०॥ ए देशी ॥ मांरुयो मांरुयो हो तेणे नमयाए पूरण प्रेम, रतनावली सुमति गुप्ति सा हेलीशुंजी ॥ ढांड्यो ढांड्यो हो तेणें कुमति सा हेली संग, लय लागी ते अलबेलीशुंजी ॥ १ ॥ कखुं मनभावें, नमयाए कुमतिथी रूसणुं जी ॥ ए आंकणी, तास मंदिर हो नहीं सुंदर नामें आरंभ, तेहनी तो ढोडी शेरडी जी ॥ आवी बेठी हो तव उपशम गेह, जस संयमशेरी न वेरडी जी ॥ क० ॥ ॥ २ ॥ तव जयणाने हो कहुं नमयायें बेनडी मूझ, इहां कुमतिने हो मत देजो पेसवा जी ॥ मुझ नो लावी हो एणें एता दीह, अनंत स्थिरताए न दीधी बेसवा जी ॥ क० ॥३॥ एहवे कुमतिए हो मेली हिंसा दासी कुरूप, नमयाने घणुं विप्रतारवा जी ॥ कांइ नोली हो ढांडे बालपणनो नेह, ससनेही केम केम वीसारवां जी ॥ क० ॥ ४ ॥ तेहने अहिंसायें हो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

कही कडुवा कडुवा बोल, घर बाहेर काढी गल हब देइने जी ॥ कहे कुमतिने हो तेह, दासी अहिं साए मुऊ, कहे जांडी आवडे आवडे जी ॥क०॥५॥ थइ ऊांखी हो कटुकवचनें कुमति तेवार, नमयाने मूकी संजारवा जी ॥ करे सुमतिथी हो नित रंग कल्लोल, श्रुतज्ञाननी गोष्टि विचारवा जी ॥क०॥६॥ मति ज्ञानने हो तिहां वेंच्यां फोफल पान, बहु हूवां रंग वधामणां जी ॥ तव ऊपन्युं हो नमयाने अवधिज्ञान, मोहादिक हुवां दयामणां जी ॥ क० ॥ ॥ ७ ॥ हवे अनुक्रमें हो, करे जूतल तेह विहार, हूइ महासती ताम पवत्तणी जी ॥ पडीबोहें हो, जवि चातुर जवियण वृंद, देवे देशना अतिही सोहामणी जी ॥ क० ॥ ८ ॥ जेणे सांजली हो तस देशना श्रवणे जव्य, तेणें जाण्युं पीयुष पीधलुंजी ॥ जस दीधी हो मुख धर्माशीष मनोज्ञ, ते तो अ व्यय जीवित दीधलुंजी ॥ क० ॥ ए ॥ बहु साहू णीहो, मली महासतीने परिवार, एक एकथी अधिक गुणें करीजी ॥ तपें कीधो हो जेणें पावन आपण देह, उपदेश महारयणे जरी जी ॥ क० ॥ ॥ १० ॥ नमया महासती हो, पामी सहगुरुनो आ

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

देश, रूपचंद्र नयर शोनावियुं जी ॥ वसती या चीने हो निज नाह पिताने समीप, पवत्तणीए नाम न जणावियुं जी ॥ क० ॥११॥ दीधी वसति हो तेणे पवत्तणी अवधार, तिहां निवसी नमया सती जी ॥ पय वंदण हो आवे नयरना लोक, नवी उलखी केणे एक रती जी ॥ क० ॥ १२ ॥ पुरमांहे हो नवी पसरी एहवी वात, साहुणीनो संघाडो आवियो जी ॥ अतिज्ञाता हो तप संजम शुद्ध विवेक, उप शमथी आतम नावियो जी ॥ क० ॥ १३ ॥ देखी दर्शन हो कीजें आपणां नेत्र पवित्र, एम नविजन लोक वातो करे जी ॥ आवी पर्षदा हो तिहां दे शना सुणवा काज, कथा उपदेशे नमया तदा जी॥ क० ॥ १४ ॥ एक रंगें हो सहु सांनलो बाल गोपाल, थइ रसिया हियडे गहगही जी ॥ कहे मोहन हो उगणसाठमी ढाल, श्रोता रे सुपरें सद्दही जी॥क०॥१५

॥ दोहा ॥

धर्मोद्यम कीजे नविक, धर्म प्रथा प्रसिद्ध ॥ जिनवर धर्म थकी लहे, ऋद्धि वृद्धि नव निद्ध ॥१॥कर्म जाल बंधे मुधा, जीव थई अज्ञान ॥ पण मूंझाइ रहे तेहमां, इंद्र जाल समान ॥२॥ धर्म तणी भ्रांते करी,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

धरे अधर्मने जीव ॥ काच कामली रोगें ग्रहे, शंख विचित्र तदीव ॥ ३ ॥ हसतां अथवा क्रोधथी, बंध निकाचित कर्म ॥ केम बूटे विण भोगव्यां, साख भरे जिनधर्म ॥ ४ ॥ पामे पूरवकर्मथी, सतीउं पण अप वाद ॥ कर्म विपाक ग्रही जतां, केम करियें विषवाद ॥५॥ अढतां पण सतीउं भणी, चोहटे जेह कलंक ॥ ते नर विलसे बापडा, भववारिधि निःशंक ॥ ६ ॥

॥ ढाल साठमी ॥

कर्म परीक्षा कारण कुमर चल्योजी ॥ ए देशी ॥ कहे दृष्टांत तिहां धनवती तणो, पति प्रतिबोधवा काज ॥ पोष्यो अद्भुत रस देशना विषेजी, निसुणी नर नरराय ॥ १ ॥ कर्म कुटिलथी बल नहीं कोइनुं जी, शिवपुर पंथ विशाल ॥ आठ लूटांक ते हेरे हेरणांजी, करी परिकर जंघाल ॥ क० ॥ २ ॥ शावस्ती नगरीयें वसतो हुतोरे, व्यवहारी पुण्यपाल ॥ धन वती तेहनी अनोपम अंगना जी, मुख्य सती सुवि शाल ॥ क० ॥ ३ ॥ अनुक्रमें कंथविदेशे चालतां रे, धनवतीनी तेणीवार ॥ दीधी भलामण आपणा मि त्रनेरे, उपस्थित करण रोजगार ॥ क० ॥ ४ ॥ केता दिवस पछी धनवती भणी जी, प्रार्थे कंथनो मित्र ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सुख जोगव्य तुं मुझथी सुंदरी रे, यौवन कस्य तुं पवित्र ॥ क० ॥ ५ ॥ निर्ब्रंछ्यो धनवतीए तेहने जी, ते पण पाम्यो रोष ॥ तेणे पुरमे कही कही शाकिनी जी, दीधो सतीने दोष ॥ क० ॥ ६ ॥ न शके नयरी मांहे फरी सतीजी, तिहां पण पीहर गइ परगाम ॥ ते धनवती निजबंधू घरे वसे जी, जो जो कर्मनां काम ॥ क० ॥ ७ ॥ धनवती बंधू सुतने हुलरावती जी, नाखती निःश्वास ॥ तिहां पण प्रार्थे विषय सुख कारणे जी, निज सहोदरनो दास ॥ क० ॥ ८ ॥ तेहने पण सतीये निर्ब्रंछियो जी, दास थयो विणप्रेम ॥ दासे बाल विणाश्यो क्रोधथी जी, सा हुलरावती जेम ॥ क० ॥ ए ॥ प्रात थयो धनवतीये बालने जी, दीठो विनाश्यो जाम ॥ करी आक्रंद कुटुंब सवि मेलव्युं जी, आव्यो दास पण ताम ॥ क० ॥ १० ॥ दास कहे सहू लोको सांजलो जी, ए सतीनुं विरुऊ ॥ कहो कूण सोंपे सुत शाकिनी कन्हे जी, जेम मांजारने दूध ॥ क० ॥ ११ ॥ शावस्ती लोकें मली एहने जी, काढी वनह मझार ॥ कीहांथी आवी रंमा शाकिणी जी, बांधवने आगार ॥ क० ॥ १२ ॥ अति शरमाणी ते धनवती सती जी, परिहरी पी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

हर ताम ॥ आवी एकांते गहनवनांतरें जी, वडतले ग्रह्यो विश्राम ॥ क० ॥ १३ ॥ गुहड विहंग रयणी भर तरुशिरें जी, सहित बालक परिवार ॥ वीट निचय देखीने बाचडां जी, गुण पूछे तेणीवार ॥ क० ॥ ॥१४॥ कुष्ट शमे ते विट प्रभावथी जी, पंखीपति कहे एम ॥ धनवतीये गुण जाणी संग्रही जी, विट भणी धरी प्रेम ॥क०॥१५॥ तिहांथी आवी कोइ पुरवरे जी, कीधो पुरुषनो वेश ॥ टाले कुष्ट ते वीट प्रयोगथी जी, यश थयो देश विदेश ॥ क०॥ १६ ॥ मोटा महोल बनाव्या मोजमां जी, चाहे बाल गोपाल ॥ मोहनविजयें ए भणी सातमी जी, श्रोता सांभलो थइ उजमाल ॥ क० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा.

॥ दोहा ॥

एहवे धनवती वल्लहो, आव्यो निजपुर जाम ॥ पण मंदिरमां अंगना, तेणे नवि नीरखी ठाम ॥१॥ प्रीछ्यो मानव मूखथकी, दयितानो अधिकार ॥ अति झांखो हूउ थको, पहोतो मित्र द्वार ॥ २ ॥ दीठो कुष्टी मित्रने, सती कलंक प्रभाव ॥ पुण्यपाल समज्यो हिये, कुटिल सुहृदनो दाव ॥ ३ ॥ एहवे पुरमांहे कह्युं, वैद्य विदेशी एक ॥ टाले कुष्ट उपाय

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

थी, जन्मांतरिय विवेक ॥४॥ पुण्यपाल निज मित्रने, तेडी चाले जाम ॥ सती बंधुनो दास पण, कुष्टी आव्यो ताम ॥ ५ ॥ बिहुने तेडी अनुक्रमें, आव्या ते परदेश ॥ जेणे पुर धनवती रहे, रचि पुरुषनो वेश ॥ ६ ॥ वालम दीठो आवतो, पामी परमानंद ॥ पण पियुने समझाववा, रचशे रामा फंद ॥ ६ ॥

॥ ढाल एकसठमी ॥

अणसणरा हो योगी ॥ ए देशी ॥ कहे पुण्यपाल तदा कर जोडी, तुझ कीरतें आव्यो हुं दोडी रे ॥ वैद्य जी करो करुणा ॥ ए आंकणी ॥ ए बेहु कुष्टीने साजा कीजें, वली मूख मागो ते दीजें रे ॥वै०॥१॥ सा कहे वैद्यरूप ते नेही, करुं औषधी पण निःस्पृही रे ॥ वै० ॥ पण ए रोगी साचुं कहेशे, तो एहने औषध गुण देशे रे ॥ वै० ॥ २ ॥ सहु सांजलतां कहेतां जो लाजे, तो बेसो एण बाजे रे ॥ वै० ॥ पड दो रहे जेणे वाते करीयें, नवि दंन्न कोइ अनुसरियेंरे ॥ वै० ॥ ३ ॥ कोइ धनवतीनो भेद न जाणे॥ सवि सत्य करी प्रमाणे रे ॥ वै० ॥ उठी पुण्यपाल ते अलगो बेठो, तेह चिकित्सक पडदे बेठो रे ॥ वै० ॥ ४ ॥ कहे पुण्यपालनें हलूइ विख्यातो, तुं सु

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

एजे कुटिलनी वातो रे ॥ वै० ॥ एम कही आवें वैद्य फरीने, वर औषध फांट जरीने रे ॥ वै० ॥ ५ ॥ रे रोगीयो नहि जूठे राचूं, केम रोग थयो कहो साचुं रे ॥ वै० ॥ बोल्यो प्रथम पीयुमित्र कुसंगी, कहुं प्रगट सुणो एक रंगें रे ॥ वै० ॥ ६ ॥ ए पुण्य पालतणी हुंती नारी, नामे धनवती मनोहारी रे ॥ वै० ॥ कामवशे में प्रार्थी तेहने, करी बेहेन गणी हुंती जेहने रे ॥ वै०॥ ७ ॥ माहरुं वचन नहि मान्युं तेणे, में आण्यो रोष हियडेरे ॥ वै० ॥ कही कही शाकिनी घणुं अवहेली, एतो लाजी गइ पुर महेली रे ॥वै०॥८॥जूठ कलंक चढाव्युं माटे,कुष्ट रोग शरीरें उच्चाटे रे ॥वै०॥ एम तेहने तव अणबोल्यो राख्यो॥ तेह दास जणी संजाख्यो रे ॥वै०॥ ए ॥ में पण याची तेहज नारी, तेणे निर्त्रंछ्यो मुजने जारी रे ॥ वै०॥में तव शेठनो तनुज विणाश्यो, वली शाकिनी दोष प्र काश्यो रे ॥ वै० ॥ १० ॥ निकली तिहांथी अतिहीं लजाती, तेनी खबर किसी न जणाती रे ॥वै०॥ कर्म कहाणीए केहने कहीयें, हवे तुमे कहो ते वहीये रे ॥वै०॥ ॥ ११ ॥ पडदांतरे ते वातो जाणी, पुण्यपालें कंधरा धूणी रे ॥ वै० ॥ मुज कामिनीने कलंक दीधुं,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

थइ मित्र ए शुं काम कीधुं रे ॥ वैं० ॥ १२ ॥ एहवे धनवती पडदे आवी, ते बेहुनी वातो जणावी रे ॥ वैं० ॥ पेठी घरमां वेश उतार्यो, स्त्रीवेषें वपु शण गार्यो रे ॥ वैं० ॥ १३ ॥ रम झम करती पियुने चर रणे,सा प्रणमें नरी आभरणें रे ॥वैं०॥ उलखी प्रमदा पोता केरी, वधी प्रीति लता अधिकेरी रे ॥वैं०॥१४॥ औषधें बेहुनो रोग गमाव्यो, एम गुणसज्ञननो गणाव्यो रे ॥ पुण्यपाल निज धनवती संगें, आव्यो शावस्ती मन रंगें रे ॥ साची सती करी पुरमें जाणी, जेणे विसारी अपवाणी रे ॥ वैं० ॥ अनुक्रमें धन वती शिवसुख पामी,एम नमया कहे गुणधामी रे॥ वैं० ॥ १५ ॥ कहे महेश्वरदत्तनी आगे, सतीने पण लंछन लागे रे वैं० ॥ ए एकसठमी ढाल सुरंगी, कहे मोहन सुगुण प्रसंगी रे ॥ १६ ॥ सर्व गाथा ॥

॥ दोहा ॥

कहे नमया पवत्तणी, कर्म तणी गति एम ॥ जेणे धर्म न अन्यस्यो, ते गति लेहशे केम ॥१॥ ते श्री जिनवर धर्मना, शास्त्रमांहे अधिकार ॥ चौदरा ज्य ए शास्त्रथी, प्रगट लहीजें सार ॥ २ ॥ नरय मणुअ तिरिय देव गइ, इसीद्वारा पर्यंत ॥ नाण हुवे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ए शास्त्रथी, गीतार्थ होय गर्जंत ॥ ३ ॥ कोइक एहवां शास्त्रछे, जेह जणे अद्याप ॥ स्वरथी लक्षण जाणियें, रूप रंग गुण व्याप ॥ ४ ॥ पण स्वरलक्षण वातडी, मूरखने न कहाय ॥ साहामो गुण अवगुण करे, अहिपय पाननो न्याय ॥ ५ ॥ तेह कारण श्रुति शास्त्रनो, करजो खप सहु लोय ॥ जेहथी उत्तम संपदा, एह कथाथी होय ॥ ६ ॥

॥ ढाल बासठमी ॥

कपुर होय अति ऊजलो रे ॥ ए देशी ॥ महेश्वरदत्त चित्त चमकीयो रे, निसुणी कथा कल्लोल ॥ धन्यधन्य एम पवत्तणी रे, धर्मथी रंग छे चोल रे ॥१॥ चेतन चेते नहीं कां मूढ, लही उपशम अगूढ रे ॥चे०॥ पण एणें स्वरलक्षण लह्युं रे, ते साचो उल्लास ॥ महेश्वरदत्तें मांकियो रे, नमयानो पश्चात्ताप रे ॥ चे० ॥ २ ॥ सही मुज नमया अंगना रे, जणी हशे लक्षण शास्त्र ॥ गायन लक्षण कह्युं हतुं रे, बेठे छते यानपात्र ॥ चे० ॥ ३ ॥ पण में मूढ अजाणते रे, कीधूं अधमनुं काम ॥ वनमां सतीने परहरी रे, थइ निष्कृप अभिराम रे ॥ चे०॥ ४ ॥ मुज वनिता हती महासती रे, पण हुं थयो अज्ञान ॥ मुज सरीखो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

संसारमें रे, निर्घृण नहि को निदान रे ॥ चे० ॥५॥ शी गति थइ हशे तेहनी रे, रजनीचरने द्वीप ॥ अहो अहो हुं महापातकी रे, तुज मति उदीप रे ॥ चे० ॥ ६ ॥ अति चिंतातुर कंथने रे, देखी पवत्तणी ताम ॥ कहो तुमें चिंतातुरा रे, अहो महानुज्ञाव आम रे ॥ चे० ॥ ७ ॥ कहे महेश्वर कर जोडीने रे, पूरवलो उदंत, आंसु झरंते लोयणें रे, नारी गुण विलपंत रे ॥ चे० ॥ ८ ॥ बोली ताम पवत्तणी रे, तेह हुं अवर न कोय ॥ जे तमे विसर्जी वनमां रे, नयण उघाडी जोय रे ॥ चे० ॥ ए ॥ ताहरो दोष नहीं कि शो रे, ए मुज कर्मनो दोष ॥ शुं फुरेडे बापडा रे, हुं नथी धरती रोष रे ॥ चे०॥ १० ॥ आपवीती वातो कही रे, महेश्वरदत्त ते सर्व, आदखुं में साहुणी पणुं रे, छांडी क्रोध ने गर्व रे ॥ चे० ॥ ११ ॥ आवी हुं इहां तुजने रे, प्रतिबोधनने काज ॥ समज तुं गति संसार नीरे, उलख तुं जिनराज रे ॥चे०॥ १२ ॥ नर्मदासुंदरी उलखी रे, लाज्यो महेश्वरदत्त ॥ निज अपराध खमा वियो रे, लह्यो वैराग्य उन्मत्त रे ॥ चे० ॥ १३ ॥ कहे महेश्वर मुज कीजीए रे, ज्ञान दर्शन चारित्र ॥ नम या कहे सूरि अडे रे, आर्यसुहस्ती पवित्र रे ॥ चे०॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ १४ ॥ ऋषिदत्ता पण शुभ परें रे, अति पामी प्रति बोध ॥ चारित्र लेवा सूंडियां रे, टालि सयल विरोध रे ॥ चे० ॥ १५ ॥ अनुक्रमे विचरंता आविया रे, आ र्यसुहस्ती गुरुराय ॥ महेश्वरदत्त हरख्यो हिये रे, ऋषिदत्ता हित लाय रे ॥ चे० ॥ १६ ॥ दीक्षा बेहु ए आदरी रे, छोडी सयल जंजाल ॥ मोहनविजयें भली कही रे, ए बासठमी ढाल रे ॥ चे० ॥ १७॥

॥ दोहा ॥

ऋषिदत्ता दीक्षा ग्रही, पाले निरतीचार ॥ आयु वशें जइ उपनी, निर्जरने आगार ॥ १ ॥ मुनि महेश्वरदत्त पण, दिक्षातणे प्रभाव ॥ भवसायर हे लांतरे, बेसी धर्मने नाव ॥ २ ॥ अनुक्रमें पाम्या पु ण्यथी, सुरपर्यंत संयोग ॥ विलसे निजदेवी थकी, विषयादिकनो भोग ॥ ३ ॥ जो जो नमया महा सती, करियो ए उपकार॥ महापतित पतिने कियो, महोटो सुर शिरदार ॥ ४ ॥ सुंदर नमया महासती, वसुधा करे विहार ॥ करे मार्त्तंड प्रभापरें, भवि कैरव विस्तार ॥५॥ कहेणी रहेणी बिहु सरिस, तेह वो नाण प्रकाश ॥ कर्मतणी करे निर्जरा, उपश मने आवास ॥ ६ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ढाल त्रेसठमी ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ नमया सुंदरी महासती, सू धो संयम पाले जी ॥ ध्यानानल संयोगें सुपरें, कर्म समिध प्रजाले जी ॥ न०॥१॥ अवधि ज्ञान तणे अनु सारें, आयुष कर्म विचारी जी ॥ मास तणी हित आ णी दाखे, संलेषणा सुखकारी जी ॥ न० ॥ २ ॥ लाख चोराशी जीव खमावी, सम नावें मन आणी जी ॥ शुद्ध देव गुरु धर्म त्रि करणें, निश्चल चित्तें ध्याइ जी ॥ तृप्ति नाव नाव्यो मन शुद्धें, परम म होदय पाइ जी ॥ ३ ॥ नमया सुंदरी ताम वियद्धो, पोहती निकट सुर लोक जी ॥ देवपणे सुर सुख लीलायें, नोगवे अतिहें अशोक जी ॥ न० ॥ ४ ॥ पंक्ति तांडव नित्य अखंक्ति, देव पडह पट वाजे जी ॥ विविध तूरिनिर्घोष प्रसारें, विबुध गृहांगण गा जे जी ॥ न० ॥ ५ ॥ एम सुपर्व तणी प्रनुताइ, नो गवे महासती जीव जी ॥ पुनरपि मानव नव पडि वजशे, महा विदेहे तदीव जी ॥ न० ॥ ६ ॥ लहेशे नृप पदवी ससलूणी, जीतशे अरियण वृंद जी ॥ विषय तणां सुख निज वनिताथी, अनुनवशे एह अमंद जी ॥ न० ॥ ७ ॥ सह गुरु वाणी श्रवणे सु

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

णशे, जाणशे अथिर संसार जी ॥ परहरी राज्य रा मा तेम प्रमदा, थाशे शुचि अणगार जी ॥ न० ॥ ८ ॥ पालशे निरतिचारे संयम, अष्ट कर्म कृश करशे जी ॥ केवल ज्ञान महासुख दाता, तेह ति हां अनुसरशे जी ॥ न० ॥ ए ॥ करशे सुरवर क मलनी रचना, देशना मधुरी देशे जी ॥ अक्षय प दवी अक्षय लीला, परमोदयथी लहेशे जी ॥ न० ॥ १० ॥ एह चरित्र नमया सतीनुं, शील संबंधें गा युं जी ॥ जाणी गेहली नमया थइने, राख्युं शील सवायुं जी ॥ न० ॥ ११ ॥ एह संबंध छे शील कुला में, जो जो सुगुण जगीसें जी ॥ नरहेसर बाहुब लि वृत्ति, प्रगट संबंध ए दीसे जी ॥ न० ॥ १२ ॥ ए संबंध छे साचो पण कोई, कल्पित करी मत जाणो जी ॥ आविर्भूत संबंध अपर जे, कवि रचना ते प्र माणो जी ॥ न० ॥ १३ ॥ धन्य धन्य नमया महा सती केरी, सरस कथा में गाइ जी ॥ कीधी पावन सुंदर रसना, सरस सुखद उपाइ जी ॥ न० ॥ १४ ॥ एह महासतीनी परें कोइ, पालशे शील अभंग जी ॥ ते पण वांछित सुख अनुभवशे, लेहशे ज्ञान तरंग जी ॥ न० ॥ १५ ॥ चोथुं व्रत निवृत्तिनुं कार

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ण, तेम सौभाग्य प्रदाता जी ॥ यति उपदेशें एम सुखहुंती, शील महोदय शाता जी० ॥ न० ॥ १६ ॥ नमयासुंदरी केरुं रच्युं छे, चरित्र अनोपम एह जी ॥ कवि कुल कोइ हांसी न करजो, करजो शुचि ससनेह जी ॥ न० ॥ १७॥ मेंतो सुकवि नरुंसो आणी, रास रच्यो छे साचें जी ॥ नहीं तो शी मति माहरी जे हुं, होड्य करुं करी वांचे जी ॥ न०॥ १८ ॥ तेह कारण ए रास रसीलो, नमया सुंदरीकेरो जी ॥ कंठाभरण पणे सहु करजों, पण दूषण मत हेरो जी ॥ न० ॥ १९ ॥ विधिमुख शिवमुख ऋषि इंदु (१७५४) संवत संज्ञा एहजी ॥ मास पोष वदी तेरश दिवसें, उशना वार गुण गेह जी ॥ न० ॥ २० ॥ तुंगया नगरी उपमा पामे, समी नयरी सु विशेषे जी ॥ चतुरपणें चोमासुं कीधुं, सद्गुरुने आदेशें जी ॥ न० ॥ २१ ॥ तप गछ गगन विकाशन दिनमणी, विजयरत्नसूरि राजें जी ॥ रचना रास तणी ए कीधी, आग्रह संघने काजें जी ॥ न० ॥२२॥ श्री विजयसेन सूरीश्वर सेवक, कीर्तिविजय उवझाया जी ॥ तस पद पंकज षट्पद उपमा, मान विजय कविराया जी ॥ न० ॥ २३ ॥ जास शिष्य क

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

वि कुल वक्षःस्थल, मंडन भूषण दिव्य जी ॥ रूपवि जय पंडित सुपसायें, कीर्ति सुधा सम सेव्य जी ॥ न० ॥ २४ ॥ कृपा प्रसाद लहीने तेहनो, मोहनवि जयें उल्लास जी ॥ त्रेसठमी ढाले करी गायो, नर्मदा केरो रास जी ॥ न० ॥ २५ ॥ जे कोइ भणशे गणशे सुणशे, ते लहेशे परमानंद जी ॥ मंगल प्राप्ति सदा घर अंगण, शोभशे शोभा वृंद जी ॥ न० ॥ २६ ॥ घर घर लीला मंगल लक्ष्मी, प्रगटे पुण्य प्रकाश जी ॥ श्रोता जन श्रुति धरजो सहु को, मोहन वचन वि लास जी ॥ न० ॥ २७ ॥ इति श्री पंडित श्री मोहन विजय विरचित्त नर्मदा सुंदरीरास शीलविषये संपूर्णः ॥ शुभं भवतु ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org